ठूठ गाछ

ठूठ गाछ

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

THOOTH GACHH (ठूठ गाछ)
A Maithili Novel by Sh. Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-25-4
दाम: 251/- (भा.रु.)

पाँचम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2015)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण भाव

समर्पण भाव

जिनगीक तँ दुइएटा ने धुरी अछि, सुख आ दुख। अही दुनू धुरीपर ने दुनियाँक बीच आनो-आनो चरसँ अचर धरि नचबो करैए, उड़बो करैए, महकबो करैए आ महकेबो करैए। जेना एक दिस- बेली, चमेली आ जूही अछि जे धरतीसँ सटल अपन पातक पवित्रता आ फूलक सादगीक संग अपन जिनगीक आदि-अन्त करैत अकासकेँ अपन महकसँ महकबैत जीवन-लीला समाप्त करैए तँ दोसर दिस- राड़ी, डबहारी आ पटेर अछि जे अपन फूलकेँ अकासमे पसारि एक दिशासँ दोसर दिशा उड़ि-उड़ि अपन रंग-रूप देखबैए, मुदा महक केहेन रखने अछि से बेली, चमेली आकि जूही पुछौ कि नै पुछौ मुदा देखनिहारक दायित्व तँ बनियेँ जाइए।

अनुक्रम:

एक/09

दू/18

तीन/24

चारि/29

पाँच/36

छह/47

सात/55

आठ/71

नअ : ‘क’/84

‘ख’/96

‘ग’/102

दस/109

एक

साँझक बढ़ैत सियाही अन्हराए लगल, जेना-जेना सियाही करियाएल जाइत तेना-तेना दिनक इजोत कमए लगल। सड़कसँ बीघा पचासे हटि बाधमे एकटा गाछ। इजोतमे गाछक सभ सिरखार रस्तेपर सँ चलनिहार देखैत मुदा साँझक पछाइत, माने जेना-जेना अन्हार पसरैत जाए तेना-तेना गाछोक रूप बदलऽ लगइ। पहिल साँझ सौंसे गाछक पात आँगनक बिछान जकाँ बिछाएल बुझि पड़ैत मुदा कनियेँ सियाही बढ़ने पातक पता नइ रहैत संगे गाछक डारियो अन्हारमे हेरा ठूठ जकाँ किछु समय देखि पड़ैत पछाइत ओहो हेरा जाइत।

झंझारपुरसँ धीरेन्द्र अबैत रहैथ, रस्तासँ कनी हटि प्रोफेसर रामकृष्ण बाबूक घर छैन। घरक पछुऐतपर नजैर पड़िते नबे-एकानबे बर्खक रामकृष्ण बाबूपर गेलैन जे आइ ठूठ गाछ जकाँ भऽ गेला अछि। 1925 इस्वीमे रामकृष्ण बाबूक जन्म ओहन परिवारमे भेलैन जे परिवार राज-परिवारसँ जुड़ल जमीन्दारक रूपमे छल। देशमे अंगरेजक खिलाफ आजादीक लड़ाइ पसैर धाराक रूपमे प्रवाहित हुअ लगल, किसानक देश, गामक देश भारत। भारतक मूल पूजी खेत, जैपर देश ठाढ़ अछि। गुलामीक हजारो बर्खक इतिहास ऐठामक गाम आ गामक पूजीकेँ पाछू धकेलैत पछुएने रहल। जइसँ गमैया जिनगी टुटैत-टुटैत एतेक टुटि गेल अछि जइ-सँ चीन-पहचीन

मेटाएल जा रहल अछि।

प्रगतिशील विचारक सभ मञ्चपर आबि चुकल छला। ओ सभ जमीनपर एला जे देशक मूल पूजी–माने किसानक देश, गामक देश–गाम छी तँए बिना गामक विकास भेने देशक विकास सम्भव नइ। गाम रज-रजबारसँ लऽ कऽ जर-जमीनदारक संग रूढ़िसँ सेहो जकैड़ गेल अछि, ओ सुधरने बिना गामक सुधार सम्भव नहि। जमीनक प्रश्न उठने देशमे पसरल रज-रजबार आ जर-जमीनदारक बीच खलबली उठल। जमीन आ जमीन्दारीक खरीद-बिकरी संग उधार भेटने जमीनदारक संख्यामे बढ़तियो भेल आ घटबियो भेल।

ओना, गाम-गामक लोकक दशा एहेन भऽ गेल जे उपास करैले कोनो पाबैनक प्रतीक्षा नै रहल।

जँ कोनो गाम हजार घरक अछि तँ नअ साएसँ ऊपरे परिवारकेँ अपन घराड़ियो नहि। मनुक्ख तँ केतौ घरेमे रहत। ओना, तइसँ किछु दिन पहिने रेण्ट-मुक्त बास भूमि भऽ चुकल छल, मुदा हजारो बर्खक गुलामीक शिकार लोककेँ पड़ाइत-पड़ाइत कोनो कर्म बाँकी नै रहि चुकल छल। केकरो कोनो गाममे घराड़ी छल, मुदा पेटक दुआरे पड़ा दोसर गाम बसल तँए ओ फेर बिनु घराडीए-क होइत रहल।

जखन अधिवेशन सभमे आजादीक वृहद आकारक आवाज उठल तखन रजो-रजबार आ जरो-जमीन्दारक पेटक पानि डोललैन। जइसँ पसरल खेतक लत्तीकेँ समटऽ लगला। ओना, गामो-गामक लोकक आचार-विचारमे किछु-ने-किछु अन्तर होइते छै, जे सोभाविको अछि। बौद्धिक स्तरक हिसाबसँ विचारो आ काजोक स्तर बदलै छइ।

प्रोफेसर रामकृष्ण बाबूक पिता गोरख बाबू चारि भाँइक बीच

जेठ, तँए जहिना माता-पिताक सिनेह तहिना भाए सबहक आदर। जइसँ सुसम्पन्न परिवारक जे गुण-धर्म होइ छै तइसँ सम्पन्न परिवार। आगत-भागतसँ लऽ कऽ गीत-संगीत, साहित्यिक चर्चासँ मञ्च जकाँ सजल परिवार। संस्कारी परिवारमे आने काज जकाँ पढ़ाइयो-लिखाइ। जइसँ स्कूल जाइ-जोकर जखने रामकृष्ण भेला कि स्कूलक बाट पकैड़ लेलैन। गामक स्कूलसँ हाइ स्कूल तक रामकृष्णक जिनगीमे कोनो हवा-विहाड़ि नइ लगलैन। बच्चेसँ जे नीक रिजल्ट होइत आबि रहल छेलैन ओ मैट्रिक तक बरकरारे रहलैन।

चालीस इस्वीक पछाइत आजादीक लहैर जोर पकैड़ नेने छल। तेजीसँ उथल-पुथल हुअ लगल। जेना आसमान फाटि जाइ छै तहिना रामकृष्णोक परिवारमे भेलैन। चारू भाँइक बीच भिनौज भेने, परिवारक सम्पैत चारि भागमे बँटेने अखन धरिक रचल-बसल परिवार एकेबेर ढनमनाएल। खेत-पथारक बिकरी परिवारमे बढ़ल।

ओना, परिवारक अखन धरिक जे हित-अपेक्षित, कुटुम-परिवार, सर-समाजक जे सम्बन्ध रहलैन ओ खर्च तँ ओहिना रहलैन मुदा आमदनीमे धक्का लगबे केलैन। किछु दिनक पछाइत, माने जखन रामकृष्णकेँ कौलेजमे प्रवेश केलाह, साले भरि भेलैन कि पिता मरि गेलखिन। अपन भाए-बहिनक बीच रामकृष्ण सभसँ जेठ रहबे करैथ। पिताकेँ मुइने परिवारक बोझ माथपर आबि गेलैन। अपनासँ छोट पाँचो भाए-बहिनक पढ़ौनाइ-लिखौनाइसँ लऽ कऽ विधवा माइक भार सेहो पड़लैन। कहुना-कहुना आई. ए. पास कऽ लेलैन।

खेत-पथार रहितो रामकृष्णकेँ ने खेती करैक लूरि आ ने इच्छा। होइतो अहिना छै जे नीक विद्यार्थीक मनमे सदैत यएह रहैए

जे केतौ शिक्षक बनि जीवन-जापन करी। मुदा शिक्षकक खगता स्कूल-कौलेजमे रहत तखने ने हएत। से तँ गनल कुटिया आ नापल झोर जकाँ स्कूल-कौलेज! केतौ खाली नै! मुदा इलाको तँ सभ रंगक अछि। कोनो कोसीक उपद्रवी क्षेत्र अछि तँ कोनो भुतही-कमलाक। ओना, जइ इलाकामे रामकृष्णक घर छैन ओ धारक उपद्रवसँ सुरक्षित अछि। अपन इलाका छोड़ि रामकृष्ण कोसी क्षेत्रक हाइ स्कूलमे शिक्षक बनि जिनगीक शुरूआत केलैन।

हाइ स्कूलक शिक्षक सभकेँ ओहन दरमहो नहियेँ भेटै छेलैन। जे परिवारकेँ हाइ-फाइमे रखितैथ। ओना, ई जरूर भेल जे टुटैत-टुटैत परिवार एक सीमापर आबि अँटैक गेलैन। जेकरा रामकृष्ण बुझलैन। जइसँ आमदनीक बीच परिवारकेँ चलबैक विचार सोचि लेलैन। बाहर रहने बाहरक खर्च हेबे करत, संगे गामोक परिवारक भार तँ अछिए। श्रवण कुमार जकाँ रामकृष्ण परिवारक बेटा बनि भार अपन कन्हापर उठा लेलैन। रेलगाड़ीक सुविधा रहने चारि-पाँच घन्टामे गाम पहुँच जाइ छला, जइसँ अठबारे शनि-रबिकेँ आवा-जाही स्कूल आ गामक बीच रखने छला।

ओना, शिक्षा-बेवस्थामे सेहो जुग परिवर्तन होइए मुदा केहेन परिवर्तन होइए ऐपर तँ सभकेँ नजैर रखऽ पड़तैन। नजैरक माने, कोन-मुहेँ आकि केकरा दिस ओ लत भेल। मुदा से जइ जुगक उपज रामकृष्ण छला ओ समयानुकूल छेलैन। शिक्षा पद्धतिमे अखुनका विद्रूपता नइ आएल छल। ग्रामीण परिवेशमे चाहो-पानक चलैन अखुनका जकाँ नइ छल। ओना, पानक प्रशस्ति मिथिलांचलमे अदौसँ रहल मुदा आम-जनक बीच समटा ओ विशेष, माने खास-खास उत्सवमे अँटैक गेल छल। ओना, एकटा प्रश्न तँ उठिते अछि जे आधुनिक वैज्ञानिक परिवेशमे पानक महत् की अछि। जेहेन परिवारक रामकृष्ण बाबू छला ओइ परिवारमे सभ कथुक चलैन

छेलैन। मुदा परिवारसँ हटल रहने अपन जीवनकेँ साँचामे ढालैक तँ अवसर भेटबे केलैन।

मौकाकेँ लाभमे बदैल रामकृष्ण अपन जिनगीकेँ अपना अपना ढंगे निरमाएब शुरू केलैन। एक तँ ओहिना छोट-भाए बहिनक बीच एहेन विचार अखनो तँ गाम-परिवारमे ऐछे जे मते-पिता नइ अपनो भाए-बहिन आ समाजोक भाए-बहिनक बीच बेवस्थित रूपमे सम्बन्ध ऐछे जे बेसीमे नइ तँ कमोमे जरूर चलि रहल अछि। तैसंग विधवा माइक जिनगी परिवारक जिनगीकेँ सात्विकता दिस बढ़बैत रहलैन। भूखे सहब आ कोनो संकल्प-व्रते सहब, दुनू सहबे भेल मुदा दुनूमे अन्तरो तँ अछिए। एक सहब भेल भरलपर आ दोसर भेल जरलपर, जइसँ ईहो तँ हेबे करत जे भरलकेँ पाचक हएत आ जरलकेँ घातक! घातक ई हएत जे हाड़-मांसक संग हड्डियो सुखाएत!

आने-आन मनुक्ख जकाँ रामकृष्णक जिनगीकेँ कहियौन आकि दुनियाँकेँ, बीचमे आबि ठाढ़ भऽ गेल रहैथ। विचारक धारमे अपना बुधिये रामकृष्ण अपनाकेँ जुड़शीतलक माल-जाल जकाँ छोर पकैड़ हेलौलेन। दुनियाँ तँ दुनियाँ छी, बहुरंगी। केतौ बालु भरल अछि तँ केतौ सोना, केतौ पाथर भरल अछि तँ केतौ बोन-झार, केतौ पानि भरल अछि तँ केतौ माटि...।

माटियो तँ माइटे छी, कोनो उस्सर अछि तँ कोनो केशौर केसैर उपजबैक शक्ति रखने अछि।

अथाह दुनियाँक थाह पकड़ब असम्भव नइ तँ कठिन तँ अछिए। दसो दिशामे दुनियाँ बँटाइत बँटाएल अछि, तहूमे तेते कोण-काण बनि गेल अछि, जँ किछु डेग केम्हरो उठबौ चाहब तँ कोनो कोणेमे कोणिआ जाएब आ कोणियेला पछाइत केमहर-मुहेँ चलि

जाएब, से ठेकान करब अथाह नइ तँ अगम तँ अछिए। जहिना अगमो पानिमे हेलिनिहार सभ रंगक होइ छैथ, कियो एहनो होइ छैथ जे अगम बुझि, माने माटिक ऊपर एते पानि अछि जइमे डुबि जाएब। पानिमे डूमने हवाक प्रवेश रूकै छै तँए बिनु हवे अपनो हवे जकाँ उड़ि जाएब! मुदा तँए कि एहेन हेलिनिहार नइ छैथ जे समुद्र सन पानिमे हेलै छैथ जइमे माटिक ठेकाने ने छइ।

दुनियाँक बीचमे ठाढ़ रामकृष्ण अप्पन दुनियाँ दिस नजैर देलैन। अपन दुनियाँ तँ वएह ने भेल जइमे रहैक अछि। एकरो ने दसो दिशा छै आ सैयो कोणो-काण छइ। अपन जिनगीकेँ थाह पबिते रामकृष्णक मनमे तोष-संतोष जगलैन। जगलैन ई जे मनुक्खो तँ मनुक्खे छी जे कारखानाक आगिक चिमनियोँ लग जिनगी बितबैए आ साइबेरियाक काइ-लीचेन गाछो तर। तही बीचमे ने हमहूँ केतौ छी...।

अपना जिनगीक आड़ि-धुरकेँ रामकृष्ण बिटिया लेलैन। बिटियैबते भक खुजलैन- सभ किछु अपने करए पड़त। अहीमे धरम-करम सभ नुकाएल अछि। जँ देह-हाथ नइ चलाएब, उपार्जन नइ करब तँ परिवारक खेबा-खर्चा केतएसँ औत, धिया-पुताकेँ पढ़ाएब-लिखाएब केना...। अपना जिनगी-ले लोककेँ अपने उपैत करए पड़ै छै, हमरो करैक अछि।

दोहरी संकल्पक संग रामकृष्ण शिक्षकक जिनगी शुरू केलैन। पहिल संकल्प केलैन जे अपनो प्रोफेसर बनैक अछि आ परिवारमे छोट-भाए-बहिनक निमरजना ओते तँ करबे अछि जेते पिताजीक समयमे भेलैन। तइसँ जेते अगुआ करब वएह ने अपन सृजन हएत।

ओना, आर्थिक दृष्टिये दुनू-बापूतक जिनगीमे अकास-पतालक अन्तर आबि गेल छेलैन। पिताक जिनगी मझोलका जमीन्दारक

रहलैन जखन कि रामकृष्णक जिनगी ओइसँ बदैल एक साधारण शिक्षकक भऽ गेलैन। संकल्पकेँ खण्डित करैत, माने छोट-छोट टुकड़ी बना रामकृष्ण अपन मन असथिर केलैन जे पिताजी जेते पढ़ेलैन, तेते छोट-भाइक प्रति अपनो दायित्व बनैए, ओना, तइसँ कम-बेसीमे पढ़निहारोक विचार तँ ऐबते छइ। जँ नइ पढ़ऽ चाहत तँ परिवारक बीच, समाजक बीच, किए ने अपन प्रायश्चित करा लेब। जँ पढ़निहार रहत तँ अपन ओकाति भरि सहयोग करब दायित्वक संग कर्तव्यो तँ बनिते अछि। ऐठाम आबि रामकृष्णक विचार ठमैक गेलैन। किछु समय ठमकला पछाइत रामकृष्णक नजैर अपनापर पड़लैन। परिवारक खर्चमे सिर्फ भोजने-वस्त्र आ आवासेटा नइ अछि। लिखब-पढ़ब आ बेर-कुबेरमे दवायो-दारूक जरूरत तँ पड़िते अछि। ओना, विद्यालयक संग ट्यूशन करब, तइसँ किछु आमदनी बढ़त मुदा घटो तँ लगबे करत ने जे अपन पढ़ैक समय वेरबाद भऽ जाएत। जखन समैये ने बँचत तखन आगू बढ़ि केना सकब। बाल-बोधक खेल पढ़ब-लिखन नइ ने छी, ओ जिनगीक साधना छी जेकरा साधने बिना जिनगीकेँ आगू-मुहेँ बढ़ाएब कठिन अछि। ओना, साधनो केते रंगक होइए। मुदा से सभ नइ, जेते साधक जरूरत रहए आ साधैक साधन रहए, बस तेतबे।

रामकृष्णकेँ जेना भक् खुजलैन। भक् खुजिते नजैर मान-इमान आ सम्मानपर गेलैन। ओहो तँ बीज-रूपमे अँकुर, गाछ बनि जिनगीकेँ गछाड़ैत फुनगी धरि पहुँच जाइए। ओतै जा कऽ ने गाछोक फूल फुला-फुला अकास दिस तकैत तरेगन, सप्तऋृर्षि गनैए आ तहिना ने मानो-इमान इज्जत बनि इजोरिया राति जकाँ भगवतीक आराधनाक मुहूर्त बनैए...।

रामकृष्णक मन अपना दिस घुमलैन। घुमिते उपकलैन जे जैठाम जिनगीमे आबि अँटैक गेल छी तैठाम इज्जत-इमान की भेल

आ तेकरा केना बँचा कऽ रखि सकै छी..?

सौनक मेघ जकाँ मन गुम्हरलैन। गुम्हरलैन ई जे जइ काजक भार माथपर आएल अछि ओकरो जँ नीक जकाँ, माने इमानदारी पूर्वक निमरजना करब, तखन तँ...। जखन कि तहीसँ ने इमानो-इज्जत चलत। जइ बच्चाकेँ पढ़बैक भार कन्हापर आएल अछि, तहूमे लोअर प्राइमरी स्कूल आकि मिडिल स्कूलमे नै छी, हाइ स्कूलमे छी, ऐठामसँ निकलला पछाइत कियो आगूओ पढ़ैले कौलेज जाएत आ केते पढ़ाइ छोड़ि अपन जिनगी बनबैक किरियामे लागत। एहेन धरतीपर जँ अपना जिनगीमे जीवन्तता नइ रहत तखन केतौ-ने-केतौ किछु-ने-किछु कमी औत। मुदा ओ जीवन्तता औत केना?

रामकृष्ण अपन आमदनी आ अपना काजकेँ समयमे बान्हि चलब मनमे रोपि लेलैन। समय निसचित अछि, आमदनी निसचित अछि जँ एकरा काजक निसचितता नइ देब तखन पछड़ैक सम्भावना बनियेँ जाइए। आमदनीक खर्च अपन जिनगीक संग परिवारक जिनगी चलाएब अछि। अपन जिनगीक खर्च जे अछि ओइमे भोजन प्रमुख अछि। जँ हम बाजार दिस जाइ छी तँ निसचित रूपेँ अधिक खर्च हएत, मुदा जँ ओकरा अपन दिनचर्यामे लऽ आनब तँ अदहोसँ बेसीक बँचत हएत। रामकृष्णक मन मानि गेलैन।

आगू पढ़ैपर नजैर गेलैन। भाइयो-बहिन परिवारमे रहि मैट्रिक तक तँ घरेपर सँ पढ़ि सकैए। अपन जे हिस्साक जमीन अछि, ओकरो उपजबैक परियास करब, नइ जँ तइ सभसँ खर्च नइ पुरत तँ थोड़-थाड़ बेचियो लेब। मुदा जँ खर्चक दुआरे अपने आकि परिवारेक बाल-बोधकेँ जिनगी बाधिक केने रहब तखन तँ जिनगी कोणाह बनि जाएत।

बी.ए.मे रामकृष्ण नाओं लिखा, छह मासक पछाइत कौलेज

छोड़ने रहैथ, किताब सभ कीनि नेने रहैथ। सोझे बैचमे फारम भरि बी.ए. कऽ लेलैन। बी.ए. केलाक पछाइत विद्यालयमे स्तरो बढ़लैन आ दरमहोक बढ़ोत्तरी भेलैन। तैसंग नीक रिजल्ट पढ़ैक मन सेहो जगा देने रहैन। प्राइवेट विद्यार्थीकेँ युनिवर्सिटीसँ परीक्षा-ले परमीशन लिअ पड़ै छइ। मनमे अराधि लेलैन जे जखने अवसर भेटत तखने एम.ए. कऽ लेब। मुदा ओइले अखनेसँ कनखड़ए पड़त।



शब्द संख्या: 1790, तिथि: 25 अक्टूबर 2015

दू

विचार रूपमे रामकृष्णक मनमे रोपा गेल रहैन जे एम.ए. करब। मुदा घड़ी-मिनट दिन-मास गुजैर गेल, अखनो धरि रामकृष्णक मनमे काज रूपमे नइ रोपाएल छेलैन। ओना, विद्यालयमे सेहो साहित्येसँ जुड़ल रहला मुदा ओ पूर्वपीठिका भेल। तेकर कारण रहै जे सभ दिन साहित्य विषय दिस रहला। ओना, साहित्योमे गणित नइ अछि सेहो बात नइ, गणित तँ ओहूमे अछि मुदा ओ नमहर अछि, तँए छोट जिनगीमे ढीलढीला भऽ जाइए। जिनगीक लेल तँ जरूरत अछि अर्थशास्त्रक संग ओकर स्टैटिक्सकेँ बुझब, तइमे हजारो कोस दूर हटल रामकृष्ण, तँए समय बितए लगलैन मुदा निर्णएपर पहुँचिये ने पाबि रहल छला। केतौ बाजब नीक नइ, एकर अनेको कारण अछि मुदा से नइ, रामकृष्णक मनमे उठलैन जे असम्भव काजकेँ सम्भव बनबैक प्रक्रिया छी, तँए काजक बिसवासू दू दिस बढ़त। एक दिस काजक लेल जिनगी भेल आ दोसर जिनगी-ले काज भेल। मुदा पुरुखकेँ तँ अपन पुरुषत्वोमे बिसवास करबाके चाही। मुदा नजैरमे जेना नचि गेलैन- ‘कंगनक लेल आरसी की आ पढ़निहार लेल फारसी की।’

रामकृष्णक मनमे जेना जेठुआ नमी जगलैन। जेठुआ नमीक माने भेल, जमीनमे ठण्ढपन आएब। मुदा से नै नमी तँ जमीनमे सभ दिन रहिते अछि, भलेँ कहियो जल-प्लाविते भऽ जाए, कहियो कण्ठे

सुखए लगए। मुदा सृजन शक्तिमे कमी-बेसी रहै छइ। जइमे जेठुआ नमी जे समुद्र-धारसँ लऽ कऽ जमीन धरिमे बेसिया जाइए। माने समुद्रोमे माछ अण्डा छोड़ैए आ जमीनोमे रौदमे तपि बीआ आरो सक्कत भऽ हाल पबिते धरतीकेँ फाड़ि कलश उठौने दुनियाँक बीच अपन पहचान बनबैत अपना वंशो आ अपनो नामकरण करैए। जँ से नइ करैत तँ सभ धान धाने छी आ सभ मान माने छी, जकाँ ने भऽ जाएत...।

जेठुए हाल जकाँ रामकृष्णक मनमे अपन जिनगीक गणित जगलैन- साहित्यो गणितसँ आ अर्थशास्त्रो गणितसँ फड़कैत बुझि पड़लैन। जेना कानमे किछु भेने कुकुऐ लगैए, आँखि मिड़मीड़ए लगैए, पीपनी फड़कए लगैए तहिना रामकृष्णोक मन फड़फड़ेलैन। फड़फड़ाइते दुनू हाथे दुनू आँखि मीड़ि कागज-कलम उठा जिनगीक केलकुलेशन करए लगला।

एक दिस सोझ बाट देखैथ जे आठ साए नम्बरक आठ विषय एम.ए.क कोर्समे अछि जइमे छह साइक परीक्षा उतीर्ण भइये गेल छी। मात्र दू साए नम्बर दू विषयक झमेल अछि। मनमे चपचपी एलैन जे बढ़ि-बढ़ि ठमैक जाइन। ठमैक ऐ दुआरे जानि जे अपन बुझल बात माने 'हाथी पियासल, घोड़ा पियासल, दल-दल पानि, थलथल वाणि पथपल मानि।'

रामकृष्णक आगूमे रकशाएल मन ऊकवाती नेने रस्तापर ठाढ़ भऽ दिवाली पाबैनक ऊक जकाँ परीक्षा घड़ी..; परीक्षा घड़ी..; पढ़ैत रहैन। जइसँ रामकृष्ण ठमैक गेला। अही झीका-तीड़ीमे रामकृष्णक साल भरि समय निर्णए करैसँ पहिने चलि गेलैन। विद्यालयमे हेड मास्टर एम.ए. रहथिन, मुदा कुर्सियो तँ कुर्सी छी, ने धाके कहियो विचारैक बात सोचलैन आ ने कहियो उपकैरो कऽ हेडमास्टर साहैब जीवनक सम्बन्धमे पुछलकैन। ओना, बेकतीगत गुण आ पद

प्रतिष्ठाक गुण दुनू दू भेल। नियमानुसार दुनूक पालन हेबा चाही मुदा ओकर तँ समय-स्थान निर्धारित अछि। खाएर जे से...।

सोचे रामकृष्ण हेडमास्टर साहैबसँ एम.ए. करैक गप नइ चलौलैन। पाछू उनैट तकैथ तँ सभ शिक्षक नव कि पुरान मुदा रहैथ तँ सभ आई.ए.-बी.ए. पासे। जैठाम आई. ए; बी.ए. पास तैठाम एम.ए. तँ भुताहि भेबे कएल। भुतही गाछीसँ आगू बढ़ि रामकृष्ण जखन विद्यार्थी दिस बढ़ैथ तँ देखैथ जे ई तँ भेल पूर्वपीठिका, माने बच्चाक ज्ञानभूमि! ऐठामसँ आगू बढ़ैत ने कियो एम.ए.क चोटीपर पहुँचैए आकि पहुँचत। मुदा ऐमे तँ चुम्बकक सम्बन्ध छै जे एक सिरा दोसरकेँ नचबैए।

तेसर साँझ। कोसीक किनछैर, माने भेल धारक लगक जमीनपर देने जे चलैक रस्ता रहैए ओ। ओही रस्ता होइत रामकृष्ण टहलैत बहुत दूर चलि गेला। अपने पढ़ैक विचार मनकेँ दबने रहैन, इजोरिया पख रहबे करइ, सुर्ज अपन बोरिया-विस्तर समेट सुतैले चलि गेला मुदा ठहाका मारि इजोरिया अन्हारकेँ घेरैये ने दइ, अही धोपचटमे रामकृष्णकेँ, तीन कोस आगू धरि टहलैत गेलापर मनमे होश एलैन जे सौंझका समय छी, केते दूर चलि एलौं! घुमि कऽ आबि अपन ओसारक कुरसीपर बैसते मनमे उठलैन, पहिने हाथ-पएर धोइ चाह बना पीब ली। पछाइत बैस कऽ विचारि लेब जे हमरा की करक चाही। विचारक दुइए पक्ष होइए। ‘हँ’ आ ‘नइ’। पछाइत ‘हँ’ओमे हजारटा डारि छिटकैए आ ‘नहियोँ’मे।

चाह पीला पछाइत मनमे चेनियत ऐबते अपन विचार–संकल्पक विचार, जे आइ हँ-निहँस कैये लेब–जेना पूर्वाक लहकीमे भँसिया पच्छिम दिस डोलि गेने आ धारक पानि जकाँ विचारोक लाट धेने दोसर विचार सेहो बहैत रहैए, तहिना लाटे-लाट साहित्यक धारमे रामकृष्ण फँसि गेला। आऽ हाऽ हाऽ! केहेन सुन्दर सुन्दरी अछि जे

एक घड़ी आधो घड़ी, आधोमे पुन आध! मने-मने रामकृष्ण विस्मृत भऽ गेला। विस्मृत एहेन भेला जे जहिना घड़ी-घण्ट बजैत देवालयक मुहथैरपर ठाढ़ भऽ पूजाक शंख फूकैत होइत। मनमे हलचल उठलैन। मुदा लगले दोसर धुन ससैर कऽ आबि सवार भऽ गेलैन। ओ धुन छल- 'आध जनम हम नीन गमाओल..!' दुनियाँ केतेटा आ जिनगी केतेटा..? तइले लोक अनेरे हाय-हाय किए करत?

ओना, हाथोक घड़ी रामकृष्ण रखने छैथ मुदा देवालोमे घन्टीबला-घड़ी रखनहि छैथ। होइतो अहिना छै जे केकरो घड़ी समय बतबै छै तँ कियो घड़ीकेँ समय बतबैए। यएह तँ भेल दुनियाँक खेल। कियो मिनट-पल समय पकैड़ नचैत तँ कियो कटल-खोंटल चान जकाँ जिनगी देखि झुझुआइत!

घड़ी बाजल, साढ़े आठ। रामकृष्णक भक् टुटलैन। भानसक समय भऽ गेल। हाथक घड़ीपर नजैर रखि पैछला समय (माने बैसै कालक समय) सँ मिलौलैन तँ डेढ़ घन्टा घन्टीए डोलबैमे चलि गेल। हाइ रे बा! नान्हिटा विचार करए बैसलौं, सेहो छुटिए गेल! आइक लेल जे काज अछि, आकि विचार अछि ओ औझुका भेल, काल्हि-ले काल्हि छइ। तखन तँ काजे छुटि गेल। अच्छा! भानस करै बेर विचारि लेब। मुदा विचार आइये करैक अछि।

सम्पन्न परिवारमे रामकृष्णक जन्म भेने गीत-नादक परिवार भेटले रहैन, जइसँ बच्चेसँ किछु-किछु साजोपर हाथ देने आ मीठ आवाज रहने आवाजोक साधना रहबे करैन। जे अखनो पछुऐबते छैन, जइसँ असगर रहने तबला-मजीराक हाथ तँ छुटि गेलैन मुदा हारमोनियम रखनहि छैथ। ओहो नियमित समय खाइते छैन। असगरे गौनिहार, असगरे बजौनिहार-सुनिनिहार, आन कियो ने! तखन..?

चुल्हि लग बैसते जेना मन फुरफुरेलैन। फुरफुराइते पहिने

निर्णैये कऽ लेलैन जे एम.ए. करब, प्रोफेसर बनब। काजक इच्छा तँ करैक शक्ति मंगै छइ। से शक्ति रामकृष्ण संचित करैक दिशामे अखनेसँ भीर गेला। तेसर साल एम.ए.क परीक्षा दइक अछि। काल्हिए युनिवर्सिटीसँ सिलेवश आनि, आठो विषयक खण्डवाइज किताब सेहो कीनि लेब। किछु-किछु समैयक कटौती सभ काजमे करैत दू घन्टा समय निकालि काजमे हाथ लगा देब।

जिनगीक टपान टपैक दुर्ग बाटपर ठाढ़ भऽ रामकृष्ण चुल्हि लगसँ आगू देखऽ लगला। मनक संग देहोमे चुलबुली आबि गेलैन। समयानुकूल भोजन बना, भोजन करैत रामकृष्ण निर्णए केलैन जे ओछाइनपर निचेनसँ औरो नीक जकाँ विचारि लेब।

ओछाइन सेरिया जखन ओछानिक सिरमापर मुड़ी खसौलैन कि धक्-दे विधवा माइक संग भाए-बहिनपर मन उड़ि गेलैन। दिनो-दिन माइक देहक दशा खसि रहल अछि! देहक दशा खसैक कारण दुइएटा भऽ सकैए। देह आ दैहिक। ओना, उमेरो पचास टपि गेल मुदा साइक नापमे तँ अधडरेर भेल, अखन किए देह खसतैन। साठिक बाद ने खसैक सम्भावना जगैए। ओना, खाइ-पीबैमे कोनो तेहेन अभाव तँ नहियेँ हुअ दइ छिऐ, जेहेन हजारो-लाखो परिवारमे छइ। नइ! जरूर मानसिक पीड़ासँ पीड़ित अछि। की एहेन उमेरमे जँ पति-विहीन लोक भऽ जाए, बाल-बच्चा छोट रहै ओहन लोकक इज्जत-आवरू एहेन समाजमे बँचि सकैए जेहेन समाज बनि गेल अछि आकि बनि रहल अछि आकि बनौल गेल अछि। की माए-बापक धर्म बाल-बच्चाक सेवा करब नइ छी? बहिन बिआहे-जोकर भऽ गेल अछि, ओ तँ माइयेक सोझमे अछि, की ओकरा मनमे सन्ताप नइ जगैत हेतइ?

रामकृष्णाक हँसी-खुशीक मनक नीन पड़ा कऽ दूर भागि गेलैन। कछ-मछ करैत ओछाइनपर पड़ल माएपरसँ भाए-बहिनपर

नजैर उतरलैन। दू-दूटा भाएकेँ कौलेजक खर्चा जुटाएब बाल-बोधक खेल नइ ने छी। मुदा ईहो तँ दायित्व बनियेँ जाइए किने जे जहुना अपने राम कृष्ण कौलेज मधुबनीमे पढ़लौं, तहुना तँ पढ़ा दिऐ। मुदा छोड़लो तँ नहियेँ जा सकैए। तखन तँ भेल अपन जिनगीक संग परिवारक जिनगीकेँ अपन कमाइमे अँटावेश करब। जे अँटावेश करए तँ अपने पड़त।

❑ शब्द संख्या: 1203, तिथि: 29 अक्टूबर 2015

तीन

अंगरेजी विषयमे रामकृष्ण एम.ए. कऽ लेलैन। जहिना मनमे एम.ए. केलाक पछाइत जगै छै, तहिना रामकृष्णोकेँ जगलैन। ओना, एम.ए. केलासँ पूर्व आ पछातिक बीच स्कूलक अध्यापनमे अन्तर नै एलैन मुदा शिक्षको सबहक आ छात्रो-अभिभावकक बीच बेकतीत्वमे अन्तर आबिए गेलैन।

1940 इस्वीसँ 1960 इस्वीक बीच, आजादीक आन्दोलनसँ लऽ कऽ देशक आजादी तकक परिस्थिति जहिना भुमकमसँ पहिने भुमकमक समय आ पछातिक जे स्थिति होइए तहिना रहल। ओना, डोलैत-धरती किछु-किछु असथिरो भऽ गेल मुदा नमहर भुमकमक पछाइत जहिना छोट-छोट भुमकम अबैत रहैए तहिना ऐबते रहइ।

आजादीक आन्दोलन 1942 इस्वी अबैत जुआ गेल। माने जन-जनक बीच पहुँच गेल जइसँ घर-घरसँ निकैल लोक सड़कपर आबि गेल। मनमे स्वतंत्र देशक स्वतंत्र नागरिक बनैक फल फड़िए गेल छल। आजादीक लड़ाइ दिस झूकने देशक उत्पादनो वाधित भेल। खेतियो-पथारी आ शिक्षणो-संस्थान सभ प्रभावित भेबे कएल। ओना, पुरना दरभंगा जिला जे अखन मधुबनी, दरभंगा आ समस्तीपुरमे बँटल अछि तइमे मात्र दू या तीनटा कौलेज आ तही अनुपातमे हाइयो स्कूल छल आ ओना, संस्कृत विश्वविद्यालयक संग ठाम-ठीम संस्कृत महाविद्यालयो आ विद्यालयो सभ छेलैहे। 1942 इस्वीमे जहिना कौलेजक शिक्षको आ विद्यार्थियो तहिना स्कूलोक

विद्यार्थियो आ शिक्षको सभ आन्दोलनमे कूदि गेला। कठिन लड़ाइक पछाइत देशक आजादीक नीक फलो तँ भेटबे केलैन।

देश स्वतंत्र भेला पछाइत जहिना सभ क्षेत्रमे अपन-अपन समस्या जगल तहिना अपनो इलाकामे स्कूल-कौलेज आ अस्पतालक संग रस्ता-पेरा, खेती-पथारी इत्यादिक समस्या उठबे कएल। अखुनका मधुबनी जिलामे एकटा कौलेज आर.के. कौलेजटा छल। जयनगर, बाबूबरही, पण्डौल, सरिसव पाही, झंझारपुर, निर्मलीमे कौलेज आ तहिना हाइयो स्कूल, मिडिलो स्कूल, बनबैक जिज्ञासा समाजक मनमे उठल। 1960 इस्वीसँ पहिने पान-सातटा कौलेजो खुजल आ लहेरियासराय अस्पतालो बनल।

आजादीक पूर्वसँ जे स्कूल आ कौलेज चलैत आबि रहल छल ओ अपन नीक गति पकैड़ संचालित हुअ लगल, जइसँ रामकृष्णकेँ स्कूलक जवाबदेहीक दबाव रहबे करैन। नव-नव कौलेज आ नव-नव स्कूल खुजने शिक्षकोक जरूरत पड़बे करत। रामकृष्णो दू धारक पेटमे पड़ि गेला। एक दिस हाइ स्कूलसँ कौलेजक शिक्षक बनैक इच्छा तँ दोसर दिस नव कौलेजमे वेतन नइ भेटने परिवारक भरण-पोषणक समस्या। जखन कौलेज नीक बनि संचालित हुअ लगत तखन ने वेतन भेटत। तैबीच एकटा लागल जीबिका, माने हाइ स्कूलकेँ छोड़ब रामकृष्ण नीक नहि बुझलैन। परिवार ओहीपर ठाढ़ छैन। संगे ईहो होनि जे सीमित कौलेज खुलने सीमित शिक्षकोक बहाली हएत, ओ जँ भरि जाएत तखन तँ अवसरक चूक हएत। जहिना डारिक चुकल बानरक गति होइ छै तहिना अवसरक चुकल लोकोकेँ होइते छइ।

जइ उत्साहक संग देशक आजादी-ले जनमानस जगि कऽ आगू बढ़ल ओ उत्साहकेँ आजादीक पछाइत छीन-भीन कऽ देल गेल। कहैले शासन विदेशी हाथसँ देशी हाथ आएल मुदा बेवहारिक

जे जिनगी छल, ओइमे कोनो बदलाव नै आएल। एहनो नै कहल जा सकैए जे केतौ ने आएल, से ठाम-ठीम गामो-समाजमे आएल आ ठाम-ठीम परिवारोमे आएल। खाली सत्तासँ सटलक जिनगीमे उछाल आएल मुदा गाम-समाज ठमकले रहि गेल। रंग-बिरंगक उपद्रव जे पहिनेसँ आबि रहल छल ओ समाजक बीच किछु बढ़िये गेल, कमल नहि। जँ केतौ कोनो रंगक कमबो कएल तँ दोसर रंगक उपकबो कएल।

ओना, देशक बीच जन-जनक समस्या अछि मुदा ओ केना मेटत एकरा-ले जेहेन शासन-सूत्र चाही से नइ भेल। नव जनमल प्रजातंत्र बेवस्था, हजारो बर्खक लूटल-कूटल देश, केना उठि कऽ ठाढ़ भऽ चलत। धिया-पुताक गेन नइ ने छी जे पकड़नौं गुड़ैकते अछि। गाम-गामक अर्थ-सम्पदाक संग, कौशल सम्पदा, जे पहिनेसँ दबल आबि रहल छल ओकरा उठबैक ओहेन उपाय नइ भेल जेहेनक खगता छल।

भुमकमक पछाइत आकि समुद्री जुआरिक पछाइत जहिना धरतियो आकि पानियोँ असथिर होइत-होइत असथिरो आ शान्तो भऽ जाइए तहिना आजादीक पछाइत जनमानसक आजादीक सपना असथिर होइत-होइत शान्त भऽ एते दबि गेल जे ओकर चीन-पहचीन मेटाएल जकाँ बुझिमे आबि रहल अछि।

ओना, किछु इलाकाक किसान अपन जिनगीकेँ बुझि खेती-बाड़ी करब अपनौलैन जइसँ ओ सभ बेसी गिरहस्तीपर आश्रित छैथ। जे अपना ऐठाम नइ अछि। हजार बीघा जमीनबला सेहो नोकरीए करता तखन बिनु खेतबलाक की उपाए हएत। ओना, घर-बाहर दुनू दिससँ ओझरी तँ अछिए। सालमे एकबेर बाढ़िक उपद्रव, जइमे खेती-पथारीसँ लऽ कऽ घर-दुआर दहौनाइ-भँसौनाइक संग जमीनो कटि-कटि धार बनिते अछि। तहिना बेसी बरखा भेने सेहो

आफद ऐबते अछि। जाड़ोक मौसम सेहो तेहने मारुख होइते अछि। मास-मास, दू-दू मासक शीतलहरी। मुदा सभ किछुकेँ रहैत फेर केना जीबित रहब, ऐ ले तँ सभ ने अपन-अपन सोचबै।

शिक्षाक खगता बुझि इलाकामे स्कूल-कौलेज बनबैक विचार जन-मानसमे जगल। 1960 इस्वीसँ पूर्व जखन दरभंगा जिला छल तखन समस्तीपुरसँ लऽ कऽ निर्मली तक कौलेज खुजैक वातावरण बनल। दर्जनो कौलेज आ दर्जनो हाइ-स्कूल खुजल। मुदा आजादीक पछाइतो पढ़ाइमे, माने शिक्षण बेवस्थामे ओ बदलाव नइ आएल जे गुलामीसँ आजादीक होइ छइ। तैसंग किसानक गामेटा नइ, देशो छी, मुदा खेती-बाड़ीक स्कूल-कौलेज खुजबे ने कएल। एक तँ खेत-पथार ओहिना जमीन्दारीक ओझरीमे पड़ि परती भेल पड़ल आबि रहल छल तैपर पढ़ल-लिखल लोक गामक कोन बात जे राज्ये छोड़ए लगला तखन बोनिहारे सभ किए पाछू रहता, ओहो सभ किए ने शहर होइत विदेशोमे जा-जा बोइने करता। आब कि कोनो डॉक्टर-इंजीनियरक खगता छै, आब तँ करखानामे काज केनिहारक खगता छै...। मुदा देहो छीपलासँ तँ समस्याक समाधान नहियेँ हएत।

पण्डौलमे सेहो कौलेज खुजल। परिवारसँ लऽ अपन धरिक जिनगीक हिसाब रामकृष्ण जोड़लैन। भाइयो सभकेँ चेष्टगर भेने उपार्जनक उपाय रामकृष्णक परिवारमे भेलैन। किछु दिन जाबे सुचारू ढंगसँ कौलेज नै चलत ताबे अपनो समैयक बचत तँ हेबे करत।

ई विचार रामकृष्णक मनमे रहबे करैन जे जेना-जेना कौलेजमे सुधार हएत तेना-तेना दरमहोमे सुधार होइते जाएत। तँए नीक हएत जे कौलेजोमे शिक्षकक लेल अपन उपस्थिति दर्ज करा ली। अखन समय हाथ लागल अछि, फेर कहिया एहेन अवसर भेटत। मनमे विचार उठला पछाइत परिवारोक (माने माइयो आ भाइयो-बहिनक)

बीच अपन विचार रामकृष्ण रखलैन। जहिना पाल परहक मालदह आकि कलकतिया आम आगूमे ऐबते मन पाल-पाल हुअ लगैए तहिना परिवारजनकेँ सेहो रामकृष्णक विचारसँ भेलैन। अवसरक अनुकूल विचार रखैत परिवारसँ पुछलखिन-

"आवा-जाही बढ़ने खर्च बढ़त, जखने अपन खर्च बढ़त तखने अहाँ सबहक बीच, माने परिवारमे कमी औत। जँ से सहैले अहाँ सभ तैयार होइ तँ हम आगू बढ़ि सकै छी।"

एकमुहरी सभ कहलकैन-

"नीक हएत।"

रामकृष्ण पण्डौल कौलेजमे ज्वाइन कऽ लेलैन। किछु दिन तँ नियारे-बातमे बितलैन पछाइत, सात दिनमे एक दिन पढ़ाएब शुरू केलैन। धीरे-धीरे विद्यार्थियो बढ़ल जइसँ कौलेजक आमदनियोँ बढ़ल। कौलेजमे आमदनी बढ़ने किछु-किछु वेतनो सुधरैत भेटब शुरू भेलैन।

ओना, सड़कक माथ तीनू। माने जहिना कौलेज जेबाले सड़कक माथ, तहिना बीचमे अपन घरो आ दोसर भाग हाइयो स्कूल।

तीन सालक पछाइत जखन रामकृष्ण कमीशनसँ बहाल भऽ गेला तखन हाइ-स्कूलक नोकरी छोड़ि, कौलेज पहुँच गेला।



शब्द संख्या: 999, तिथि: 04 नवम्बर 2015

चारि

समैयक संग कौलेजोक स्थिति सुधरए लगल। सरकारियो अनुदान आ विद्यार्थियोक फीसमे बढ़ोत्तरी भेने कौलेजक आर्थिक स्थिति सुधरल। जइसँ मकानो बनल, पुस्तकालय सेहो सुधरल आ शिक्षक-कर्मचारीक वेतनमे सेहो सुधार भेल। रामकृष्ण बाबूक जिनगीमे सेहो उछाल एबे केलैन।

ओना, रामकृष्ण बाबू कौलेजक शिक्षकमे सभसँ उमेगर रहैथ। उमेरक लाभ-गुण दुनू भेटबो केलैन। पहिल, हाइ स्कूलमे पढ़बैक जे दस बर्खसँ ऊपरक अभ्यास रहैन ओ लाभ कौलेजमे प्रवेश पबिते नीक शिक्षकक श्रेणी पड़ले भेटलैन। आ दोसर, होइतो अहिना छै, जे जेहेन बुढ़ाएलमे डिग्री पौता ओ ओहिना ने बुढ़िया बाढ़ि जकाँ गाम-गामकेँ उजाड़ि कऽ बुढ़ाएल काजो करता। सोभाविक अछि जैठाम कियो अठारह-बीस बर्खक शिक्षक कौलेजमे प्रवेश करता आ कियो काञ्चीनाथ झा 'किरण' जकाँ सतावन-अठावन बर्खक अवस्थामे करता, तैठाम दुनूकेँ एकरंगाह तँ नहियेँ कहल जा सकैए। एकटा भेला नवतुरिया जिनका अखन सीखैक समय छिऐन आ दोसर ओहन बुढ़ाएल भेला जे गामक-गाममे धार फोड़ि देने छथिन...।

तीस-पैंतीस बर्खक उमेरक जखन रामकृष्ण बाबू रहैथ तखन कौलेजक शिक्षक बनला। तैबीच बेटो हाइ-स्कूलसँ पढ़ि कऽ कौलेजमे पहुँच गेल रहैन। आन शिक्षकक अपेक्षा रामकृष्ण बाबूकेँ विद्यार्थीक पढ़ाइ दिस किछु बेसी झूकान रहैन। ओना, नीक-बेजए तँ

सभठाम किछु-ने-किछु होइते छै, मुदा एकर माने ईहो नइ जे नीकसँ बेसी काज बेजाए भऽ जाए। मुदा समैयोक तँ अपन बलउमकी होइते छइ। जखन एक रंग वेतन दुनू गोरेकेँ रहत तँ के कम आ के बेसी भेला?

कौलेजमे शुरूहेसँ रामकृष्ण बाबूकेँ शिक्षको, कर्मचारियो आ विद्यार्थियो सभ श्रद्धाक नजरिये देखबो करैन आ मानितो रहलैन। जइसँ रामकृष्ण बाबूक मनमे ओहन मलिनता कहियो नै एलैन जे जिनगीमे केतौ कमियोँ अछि।

यएह ने भेल जिनगी जे जइ काजक भार उठौने छी ओकर निर्वहन जँ इमनदारीसँ करिते छी तखन मलिनता औत किए...।

अंगरेजी साहित्यक विद्यार्थी रामकृष्ण बाबू मुदा अंगरेजी जीवन शैली–माने अपन अधिक-सँ-अधिक काज स्वयं करब–नै बनि पड़ैन। ऐ मानेमे रामकृष्ण बाबूकेँ महसूस होनि जे अपनामे किछु कमी तँ अछिए। हेबो केना ने करतैन। खबासोकेँ खबासक खगता मने-मन रहिते अछि किने।

कौलेज आ रामकृष्ण बाबूक घरक बीच पचास-पचपन किलो मीटर पक्की सड़कक दूरी। नीक सड़क रहने बसक लगातार सर्भिस। गामेसँ कौलेजक आवा-जाही रामकृष्ण बाबू रखने रहला। ओना, दुइयो-डेढ़ किलो मीटर दूरीबला शिक्षक अपन डेरा फुटा परिवार आ गाम-समाजसँ हटि दोसर समाजमे बसऽ चाहै छैथ।

ओना, रामकृष्ण बाबू अपना गामक पहिल एम.ए छैथ तहूमे अंगरेजी साहित्यसँ। अहुना लोक कहै छै जे दूरक ढोलो सुहौन लगै छइ। मुदा, ढोल तँ ढोले छी। ढोलक चालि आकि तबलाक चालि थोड़े सभ पकैड़ पबैए। कोनो भाषा भाषा भेल जे क्षेत्र भरिमे बाजल-लिखल जाइए। मुदा साहित्य समाजक ओहन शील अछि जे

देहक आत्मा जकाँ सभ समाजक बीच बास करैए। तैठाम गमैया पाहुन जकाँ जँ मोजरे नइ देब तँ ओइ वेचारे पाहुनक कोन दोख? खाएर जे से...। दुनू कारणेँ रामकृष्ण बाबूकेँ परिवारसँ लऽ कऽ समाज तक मान-सम्मान आ पद-प्रतिष्ठाक आदर भेटबे केलैन। परिवारो आ समाजोकेँ तँ ई लाभ भेबे कएल जे जखन परिवारमे एक गोटे एम.ए. पास कऽ लेलैन तँ एम.ए. तकक बाटक बोध तँ हुनका भइये गेलैन। करै-सँ-धरै-जोकर तँ ओ भइये गेला। माने ई जे कोन एहेन पढ़ुआ हेता जे उच्च शिखर धरि पहुँचैक बीआ अपना मनमे नइ रखने हेता। अगर-मगर एक ढकिया मुदा सबहक मन-मन्दिरमे बास करैबला भगवान कैलाशवासी बनैए चाहै छैथ।

देखा-देखी रामकृष्ण बाबूक परिवारोमे शिक्षाक स्तर बढ़लैन। छोट दुनू भाए सेहो एम.ए. पास कऽ लेलखिन, जइसँ नोकरियोमे प्रोन्नति भेलैन। जेकर प्रभाव गामोपर पड़बे कएल। देखा-देखी गाममे पाँचटा एम.ए. पास भऽ गेला।

कहैले रामकृष्ण बाबू सभ दिन गामसँ जोड़ल रहला मुदा जुड़ि कऽ रहि नै सकला। जुड़ि कऽ रहैक माने भेल जे मनुक्खेक जिनगी जकाँ मनुक्खक बनौल समाजोक जिनगी छै किने तँए जहिना परिवारमे बेटाकेँ कोरामे नेने बापोकेँ अपन बालपन मोन पड़ै छै, जेकरा ओ पितृ-ॠृण बुझि चुकबैक संकल्प मनमे रोपि निमाहैए तहिना ने सामाजियो परिवारमे अछि...।

ओना, जखन रामकृष्ण विद्यार्थी छला तखन बच्चे छला, ओहू अवस्थामे स्कूल-कौलेजक संगी गाममे बनबे केलैन। आ जखन हाइ-स्कूलक शिक्षक बनला तखन विद्यार्थी जीवनक सभ किछु बदैल गेलैन, मुदा रहला तँ विद्यार्थीए सबहक बीच। ओना, अठबारे गाम अबै छला मुदा रस्तेक झमार आ परिवारेक काजमे उलैझ कऽ समय कटि जाइत रहैन, जइसँ गाम दिस तकैक समैये ने भेट पबैन...।

ओना, समाजोक बीचक जे काज अछि, माने सार्वजनिक काज ओहो केतेक रंगोक अछि आ करैयोक ढंग अलग-अलग छइ। मुदा तइ सभसँ कम सरोकार रामकृष्ण बाबूकेँ अखन तक रहलैन।

कौलेजक पुस्तकालयमे समृद्धता आएल, ओना, कौलेजमे छात्रो आ शिक्षकोकेँ नव-नव आ नीक-नीक पोथी उपलब्ध भेने पुस्तकालयक संचालनमे सेहो बढ़ोत्तरी भेल। जहिना पैघ-पैघ प्रकाशनक प्रकाशित पोथीपर नीक प्रकाश पड़ए लगैए, प्रकाशित होइते पोथीक गुण बुझौनिहारक नजैर पड़ए लगै छैन, माने पोथीक गुण-अवगुन बुझौनिहार भेटने सभकेँ लाभे-लाभ होइए तहिना रामकृष्ण बाबूसँ, पुस्तकालयसँ लऽ कऽ कौलेजक शिक्षकक संग विद्यार्थियोकेँ लाभ भेल...।

शुरूहेसँ रामकृष्ण बाबूक झुकाउ पढ़ै-लिखै दिस रहलैन, संगे कौलेजक पुस्तकालयक भार भेटने पढ़ै-लिखैमे आरो बढ़ौत्रीए-क अवसर भेटलैन।

एक तँ महाविद्यालयक विद्यार्थीकेँ पढ़ौनाइ तैपर पुस्तकालयक देख-रेखक भार भेटने रामकृष्ण बाबू कौलेज खुजैसँ लऽ कऽ बन्द होइ धरिक समयमे बन्हा गेला। ओना, आन कौलेज जकाँ ऐ कौलेजमे पुस्तकालयक रीडिंग रूम नै, नइ तँ रामकृष्ण बाबूकेँ आरो बेसी भार पड़ितैन। हलाँकी अलगसँ पुस्तकालयक भार भेटने लाभे भेलैन। घरपर सँ सबेरे आठ बजे बस पकड़ए निकलै छला, दस-पोने-दस बजे कौलेज पहुँच जाइ छला। जँ क्लास रहै छेलैन तँ क्लास जाइ छला नइ तँ पुस्तकालैयेमे रहै छला। ओना, पोथीक लेन-देन पुस्तकालयक आन-आन कर्मचारी सबहक जिम्मामे छेलैन, मुदा देख-भालक भार तँ रामकृष्ण बाबूपर रहबे करैन।

दस बजेसँ चारि बजेक बीच पढ़ै-लिखैक भरपूर समय रामकृष्ण बाबूकेँ भेटलैन। जेकर उपयोगो नीक जकाँ केलैन। जइसँ

अंगरेजी साहित्यक संग हिन्दी, मैथिली आ संस्कृत साहित्यकेँ सेहो गहरायसँ अध्ययन केलाह।

रामकृष्ण बाबूक पढ़ौनीसँ विद्यार्थियोकेँ नीक लाभ भेटैत रहल। तेकर कारण छल जे पुस्तकालयमे टटके पढ़ि क्लास जाइ छला, नीक जकाँ पढ़बै छला।

कौलेजक जिनगीक रूटिंग रामकृष्ण बाबूक एहेन बनि गेल रहैन जे भोरे सुति उठि नित्यकर्मसँ निवृत्त होइत, चाह पीबैत-पीबैत नहेबा बेर भऽ जाइन। नहा कऽ खाइ छला आ कपड़ा पहिर बस पकड़ैले निकैल जाइ छला। तहिना कौलेजसँ घुमती बेर सेहो चारि बजेक बाद हब-गब करैत पाँच बजे तक कौलेजक कम्पाउण्डसँ निकलै छला, जे सात बजेसँ आठ-साढ़े-आठ बजे तक घरपर पहुँचै छला। घरपर पहुँचला पछाइत रौतुका ओरियानमे लगि जाइ छला। ओना, गामोक लोक देखैत रहैन जे रामकृष्ण बाबू गामेसँ कौलेज जाइ-अबै छैथ। खाली रबि दिन गाममे रहै छैथ। ओना, तेकर अतिरिक्त गामक लोकमे ईहो तँ धारणा रहबे करइ जे 'छबे कौलेज, नबे स्कूल।' माने कौलेजक पढ़ाइ छह मास चलै छै आ हाइ-स्कूल तकमे नअ मास। बाँकी दिन छुट्टी रहैए, माने बन्न रहैए।

गाममे रहितो रामकृष्ण बाबू गामक पैघ समाजसँ हटि कटल-छँटल सामाजिक जिनगी जीबए लगला। गामक बीच नव-नव समाजक जन्म सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि आ आगूओ होइत रहत। माने ई जे जँ गाममे पाँचटा इंजीनियर भऽ जाथि तँ एक इंजीनियर समाजक जन्म भइये जाइए। समाजमे इंजीनियरक की जरूरत अछि, ई तँ ओ जानैथ, मुदा एक नव समाज तँ उठि कऽ ठाढ़ भेबे कएल। अहिना आनो-आन समाजक अछिए। डॉक्टरक समाज, प्रोफेसरक समाज, विस्तृत रूपमे पढ़ल-लिखलक समाज इत्यादि-इत्यादि। दू साए परिवारक गाममे रामकृष्ण बाबूक जन्म

भेल छेलैन। एक-दियादी परिवार जे एक-जातीय टोल-समाज बनि गाममे ठाढ़ छैन। बाँकी गामक लोक रंग-रंगक अनेको टुकरीमे बँटल अछि। किछु परिवारकेँ, जिनका खेत छैन ओ किसान छैथ आ जिनका अपन खेत नै छैन ओ तँ बोनिहार छैथे जे किछु पूब-पच्छिम खटि जिनगी बितबै छैथ तँ किछु गोटे छोट-मोट कारोबार करै छैथ। मुदा पढ़ै-लिखैक मामलामे सभ एकरंगाहे। दू-चारि गोरे हाइ-स्कूल तक देखने बाँकी सभ निशान दऽ दऽ मटिया तेल-गहुम कोटासँ उठबैबला।

गामो तँ आदिम समाजसँ लऽ कऽ एक्कैसम शताब्दी तकक इतिहास अपना पेटमे रखने अछि। माने ई जे मनुक्ख निरमित परिवारो छी, समाजो छी आ देश-दुनियाँ सभ कथू छी। आइक सदी एक्कैसम सदी छी, माने एकसँ शुरू भेल सदी ई एक्कैसम छी। आइपर काल्हि ठाढ़ होइत-होइत एक्कैसम सीढ़ीपर पहुँचल बटोही हम सभ छी। तैसंग ईहो एकटा गुण तँ ऐछे जे ने बीसम छेलिऐ आ ने बाइसम हेबै, रहबै एक्कैसमे। तँए हमरा ई भ्रम नइ हेबा चाही जे सभ दिन चानक अशोकक गाछक निच्चाँमे टोकरीसँ हमहीं सूत कटैत रहब। मुदा निअसो तँ नहियेँ भऽ सकै छी। हमहूँ ने ऐ धरतीक एक खूटपर नट-नटी जकाँ ठाढ़ छी आ हमरो आगूमे ने विशाल रंग-मञ्च सजल अछि। करोड़ो-अरबो तमसगीर बैसलो-बैसल आ ठाढ़ो भऽ भऽ तमाशा तँ देखैयो-ले चाहि रहला अछि आ देखियो रहला अछि...।

रामकृष्ण बाबू जेहने चरित्रवान तेहने इमनदारो, मुदा गाममे रहितो समाजसँ दूर जिनगी रहने समाजकेँ जे लाभ हिनकासँ हेबा चाही, से लाभ नइ भेल। उच्च श्रेणीक पढ़ल-लिखल लोक, उच्च श्रेणीक चिन्तको आ उच्च श्रेणीक विचारवानो तँ होइते छैथ। मुदा चिन्तन केना विचारक रस्तासँ चलि विचारवान बनौत, तइ बुझैमे

रामकृष्णकेँ भौक भेलैन। हलाँकी भौक जानि कऽ नहि, अनजानमे भेलैन। साहित्यक विद्यार्थियो आ चिन्तको रहने साहित्येक दुनियाँमे वौअए लगला। वौआइत-वौआइत आइ चारू जुगक साहित्य आ साहित्यक भाषा तथा लिपिक बीच तेना ओझरा गेल छैथ जेकरा सोझरबैले जहिना अंगरेजी साहित्यक ढेरियाएल पोथी, तहिना संस्कृत, मैथिली आ हिन्दी साहित्यक पोथी पढ़ैले बाँकीए छैन। स्कूल-कौलेजक साहित्यसँ आगू बढ़ि अठारहो पुराणेमे अखन ओझराएल छैथ। उपनिषद, वेदान्त आ एक लाख मंत्रबला ऋृग्वेदो तँ बाँकीए छैन...।

साहित्यक दुनियाँ अलगो अछि आ समाजोक संग अछि। दुनूक दू दिशा, दू पहलू, दू विचार आ दू तरहक संचालनमे दूरी भेने, दूरी तँ बनियेँ जाइए। जइसँ रामकृष्ण बाबू गाम-समाजमे रहितो ऐ दूरीक कारणेँ हटल रहला।

ओना, जहिना व्यास बाबा अपन अठारहो पुराणक निचोर पाप-पुण्यक सीमापर आनि रखि देलखिन तहिना गमैया साहित्यकारोक सीमा ने भेल जे गमैया लोकक गमैया भाषामे गमैया बात-विचारकेँ गामक इतिहास-भूगोलकेँ देखैत समाजशास्त्रपर नजैर रखैत साहितक रूपमे साहित्यकेँ ओढ़ा दिऐ।



शब्द संख्या: 1494, तिथि: 07 नवम्बर 2015

पाँच

जहिना पढ़ैक खुशी पढ़ला पछाइत सभकेँ होइए तहिना रामकृष्ण बाबूकेँ सेहो होइन। जिनगीक तँ दुइएटा ने धुरी अछि, सुख आ दुख। अही दुनू धुरीपर ने दुनियाँक बीच आनो-आनो चरसँ अचर धरि नचबो करैए, उड़बो करैए, महकबो करैए आ महकेबो करैए। जेना एक दिस- बेली, चमेली आ जूही अछि जे धरतीसँ सटल अपन पातक पवित्रता आ फूलक सादगीक संग अपन जिनगीक आदि-अन्त करैत अकासकेँ अपन महकसँ महकबैत जीवन-लीला समाप्त करैए तँ दोसर दिस- राड़ी, डबहारी आ पटेर अछि जे अपन फूलकेँ अकासमे पसारि एक दिशासँ दोसर दिशा उड़ि-उड़ि अपन रंग-रूप देखबैए, मुदा महक केहेन रखने अछि ओ तँ बेली, जूही आकि चमेली पुछबे करत किने।

होइतो अहिना छै जे जखन विद्यार्थी अपन परीक्षाक तैयारीमे अध्ययन केलाक पछाइत मननक अवस्थामे पहुँच उताहुल हुअ लगैए जे हे भगवान इहए प्रश्न जँ परीक्षामे पूछल जाएत तँ हमरासँ नीक उत्तर कियो ने देत। हँ ओहो विद्यार्थी देत जे हमरे जकाँ अध्ययन केने मननक मने चलैत हएत। एहेन बात कोनो हाइये स्कूलक आकि कौलेजेक विद्यार्थीकेँ नइ, सभकेँ होइए जे रामकृष्ण बाबूकेँ सेहो होइन। कोनो पोथी पढ़ला पछाइत जखन मननक अवस्थामे मन निसाँ जाइ छेलैन तखन निसभेर राति जकाँ अपनो सुधि-बुधि बिसैर जाइ छला जे अपना हाथ-पएर अछि की नइ।

कानो अछि की नइ। आँखि जँ रहैत तँ दुनियोकेँ देखतौं ने। ओना, दुनियाँक दूरी तँ दूर अछि मुदा अपन हाथ-पएर तँ अपना देहेमे सटल अछि तथापि अन्हारमे कहाँ एको-डेग आकि एको हाथ उठैए।

रामकृष्ण बाबूक संग मजबूरी तँ छेलैन्हे। मजबूरी ई जे पुस्तकालयमे पोथीक लेन-देनमे जे गप-सप्प होइन, तइमे कियो बाइबिलक बात पुछि दैन तँ कियो गीताक, कियो पुराणक कथा लाड़ि-चाड़ि दैन तँ कियो वेदान्तक। जइसँ मन नंग-चंग रहिते छेलैन। ओना, पढ़ैक धारमे उपस्थिति होइते छेलैन मुदा तइमे पाराग्राफपर पहुँचैक मोहलत लऽ लइ छला तँए पढ़ैक धारमे बाधा तँ नइ उपस्थित होइ छेलैन मुदा लिखैक धारमे तँ सभकेँ होइते छइ। जँ से नइ होइ छै तखन चद्दैरक खूटमे बान्हि कऽ किए रखऽ पड़ैत- 'कनक छड़ी सी कामिनी, कहे को रस लीन...।'

जँ वेचाराक धारक धारा गतिशील रहितैन तँ वेचारी धोबिनकेँ किए जोड़ए पड़ितैन- 'कटि के कंचन काटि कऽ छातीपर रख दीन...।'

जहिना सभ दिनसँ आ सभकेँ होइ छै तहिना रामकृष्ण बाबूकेँ सेहो होइन...।

ज्ञान एलापर जहिना गुनगुनी लगैए, बुधि एलापर बुदबुदी, तहिना ने लूरि एलापर खुइर सेहो अबैए। जइसँ खोदो-वेद होइए आ वेदो-खोद तँ होइते अछि। जे रामकृष्णो बाबूक मनमे कुरसीक ओंगठान आबि जाइन। ओंगठलहा मनमे कोनो नव विचार ऐबते देह-हाथमे खुर-खुरी आबऽ लगै छेलैन। खुर-खुरी ऐबते हाँइ-हाँइ शर्टक ऊपरका जेबीमे खोंसल पेन आ राखल डायरी निकालि चारि-पाँति गढ़ि लइ छला। कहियो नीक धुनमे गीत तँ कहियो नीक चालिमे कविता। ई तँ अपनो मने-मन बुझबे करै छला जे गद्य लेखन सक्कत धरतीपर चलब छी, जखन कि पद्य- सल-सल, दल-दल,

थल-थल, थल-जल सभतैर चलैए। जे पुरना डायरी सभमे केतेक टुकड़ी-पुरजी गीत-कविताक ओहिना खोंसल छैन्हे।

जहिया जेहेन छुट्टी कौलेजमे होनि तहिया पुस्तकालयसँ तेहेन अधखड़ुआ पढ़ल किताब वा ओतेक किताब लऽ कऽ चलै छला जे गामोमे पढ़ब। पढ़ैक तेहेन लत पकैड़ नेने रहैन जे लिखै दिस हाथे ने बढ़ऽ दैन। हाथो केना बढ़ितैन, दसमीक छुट्टीमे अबै छला तँ भागवत-कथा सभकेँ सुनबऽ लगैथ आ अमैया छुट्टीमे अबै छला तँ सिनुरिया आमक ललियाएल सिनूर-कलियाएल फल, कृष्णभोगक थुलियाएल-गुलियाएल गोला, सजमनियाक सजमैन आ फैजली आमक गाछसँ फड़ धरिक फझैत सुनैत-सुनैत चालीस दिनक छुट्टी बीत जाइ छेलैन। मुदा गाछ जेहेन माटिपर रोपल अछि तेहने ने आमोक सुआद हेतै से बुझिए ने पबै छला।

रामकृष्ण बाबू आमक सुआदेटा-मे नै ओझराइ छला, ओझरा जाइ छला जे हनुमानजी जखन सीताकेँ ताकए लंका गेला आ ओइठाम अमराय बगानमे काँच-पाकल, लाल-डम्हाएल सभकेँ खा-खा सुआदो बुझलैन आ वएह जे आमक गुद्दा खा-खा आँठी फेकलखिन, सएह ने बम्बैसँ बम्बई पलल आ कलकतियासँ कलकत्ता। मुदा सरही भुटभुटिया, खटहा नकुबी आ गोबराहा सापसीन केना आबि गेल? अही ओझरीमे साल-सालक गरमी छुट्टी अमरैयाक बगवैयामे बितैत रहलैन, मुदा एतबो ने बुझि पेला जे मनुक्खक भोजनक अनिवार्य वस्तुमे फलो अछि। जैठामक बारहो मास, माने तीन साए साइठो दिनक भोज्य वस्तु फल भेल, तैठाम हजारो बीघा आमक गाछीबला गामकेँ तँ पुछले जाएत किने जे एते खेतक उपजा जँ अहाँ सभ डेढ़े-दुइए मासमे खा जाइ छी, तहूमे अन्न-तीमन लगा कऽ नहि, केवल चारि साए ग्राम फलेटामे, तखन किलो भरि अन्न आ तीमनमे केते खाएब? तैपर सालक दस-साढ़े-

दस मासमे जे फलक खगता हएत से केतएसँ आनब?

भाय! मुदा किछु छिऐ तँ आमक गाछीक जेठक दुपहरियाक मचकीपर मचकैत चैतावर चौमासासँ बढ़ैत छहमासा, बरहमासा होइत मस्तीसँ चलिते अछि। तहूमे रामकृष्ण बाबूक सोझराएल मन तँ छेबे करैन जइमे कवित्व शक्ति छैन्हे। कविता लिखैमे स्पष्ट सोच छैन जे जखन-

'भुजंग प्रयात्, भुजंग प्रयात्
भुजंग प्रयात्, भुजंग प्रयात्।'
छन्दबद्ध कविता भऽ सकैए।
'हरि गरजल हरि सबदल
हरिक सबद सुनि
हरि चलल।'
कविता भऽ सकैए। तखन ईहो किए ने हएत-
'नीन तोड़ू जागू उठू
उठि कऽ ठाढ़ होउ।'

तँए कवितो लिखैमे केतौ उलझन मनमे नइ होइन। मुदा लिखैकाल मनमे झमेल ठाढ़ भऽ जानि जे शेक्सपीयरक शैलीमे गद्य लिखी आकि शेक्सपीयर शैलीमे पद्य? ..खाएर किछु हौउ, मुदा ने चाइनसँ तरबा तकक कविता कहियो कहि आकि लिख पबै छला आ ने कथा। ओना, अंग-भंग आ भंग-अंग कविता नइ लिखै छला सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।

..ओना, रामकृष्ण बाबू साहित्यक विद्यार्थी सभ दिन रहला, जइसँ सभ दिन साहित्यसँ जुड़ाउ रहलैन। मुदा रूपमे थोड़े बदलाव भेलैन। बदलाव ई भेलैन जे जखन हाइ स्कूलक शिक्षक छला तखन

परिवारक बोझ तर तेना दबल छला जे लिखै-पढ़ैक वातावरण परिवारमे बनाइए ने पाबि सकला। जइसँ अपन अध्ययन-शक्तिमे सेहो बाधा उपस्थित भेबे केलैन। मुदा साहित्यसँ प्रेम रहने परिवारक संस्कार-संस्कृतिसँ जुड़ल रहला। साज-बाजक संग परिवारो सजले छेलैन। असगरूआ जिनगी रहने हरमुनियाँ रखै छला। आखिर साजो तँ साज छी। किछु एहनो अछि जे असगरो दुनियाँमे रमैए आ दोसराइतोक संग रमैए। हरमुनियाँ आकि खौजरी एहने ने साज छी। जँ से नइ रहैत तँ कबीरदास अपना झोरीमे खौजरीए टा किए रखै छला।

ओना, हाइ-स्कूलक जिनगीमे रामकृष्ण बाबू अपनो आ परिवारोक समुचित खाँहिंसकेँ नै पुरा पबै छला। मुदा ऐठामक माटियोक तँ अपन गुण-धर्म अछि। नै पान तँ पानक डन्टियोसँ पूजाक विहीत होइते अछि। एहेन खानापुरी रामकृष्ण बाबूक जिनगीक बीच छेलैन। ओना, मनमे सदैत रहैन जे जिनगी खानापुरी नइ, पूरीखाना छी। मुदा..?

शिक्षकक जिनगीक बीच रामकृष्ण बाबू साँझू पहरमे, एक घन्टा नित्य हरमुनियाँपर बैस अपन स्वर-साधना करै छला आ अपन इष्ट आराध्य देवकेँ दुखनमो सुनबै छला।

कौलेजक नोकरीक दस सालक पछाइत–प्रोफेसर बनलापर– रामकृष्ण बाबूक जिनगीक परिस्थितिमे मोड़ एलैन। अनेको पारिवारिक उलझन एक्केबेर समटा गेलैन। एक दिस कौलेजकेँ सरकारीकरण भेने वेतनमे भरपुर उछाल एलैन तँ दोसर दिस दूटा बेटा बैंकक नोकरी करए लगलैन। बाल-बच्चाक बिआह-दान, पढ़ाइ-लिखाइसँ रामकृष्ण बाबू निचेन भेला। निचेन होइते जेना पढ़ै-लिखैक जिज्ञासा तेज भऽ गेलैन। एक संग कथा-कविता लिखब शुरू केलाह। जहिना सभकेँ एकटा गीत लिखला पछाइत मनमे होइ

छै जे एकटा गीतक मलो बना गरदेनमे पहिर ली, तहिना कथाक एकटा संग्रह छपौलैन करीब अस्सी पृष्ठक। जिनगीक पचासम बरख रामकृष्ण बाबू पार कऽ चुकल छला। मुदा जिनगियो तँ जिनगी छी जे एक उमेरक–समैयक–हिसाबसँ चलैए आ दोसर, काजकेँ आराध्य मानि आराधनाक पाछू जे जिनगी चलै छै ओ। मुदा से नइ, भगवान केकरो बेपाट नै छथिन, ओना, एते दूजा-भाव तँ छैन्हे जे केकरो सुखदेव जकाँ पेटेमे हूँहकारी सीखा दइ छथिन तँ केकरो अष्टावक्र जकाँ शुद्ध-अशुद्ध। तँ केकरो ध्रुव जकाँ बच्चेमे एकटंगाक लूरि सीखा दइ छथिन आ तहिना केकरो युवनास्त जकाँ जुआनीमे सीखबै छथिन, तँ केकरो बुढ़िया शबरी ऐठामक बैर खेनाइ।

रामकृष्ण बाबूक पचास बरख परिवारसँ लऽ कऽ अखन धरिक जे समय काटब रहैन से इमनदारीसँ कटलैन। जेकर फलो भेटबे केलैन। तीनू बेटाकेँ नीक जकाँ पढ़ा-लिखा नीक पदपर पहुँचा, बिआह-दान करैत जिनगीक विश्रामक साँस लेलैन। आब, पहिलुका जे धएल-धरल साहित्यिक बीज गणित छेलैन ओ जेना चैती हवा पेब एकाएक भकरार गाछ जकाँ मनमे ठाढ़ भेलैन। ठाढ़ भेलैन ई जे साहित्य पढ़ि जँ कनियोँ साहित्य-साधना नै केलौं तँ ओइ पढ़बक कोनो महत नै भेल।

ओना, साहित्यक क्षेत्र ओहन क्षेत्र छी जे बिनु ओर-छोरक अछि जेकर पार पाएब कठिन तँ अछिए। जँ से नइ अछि तँ कियो किए अपन राग अलापैत घन्टो-घन्टो स्वर-साधना करै छैथ, तँ कियो पैरक एक आँगुरपर ठाढ़ भऽ नचै छैथ? मुदा से नइ, रामकृष्ण बाबूकेँ कथा आ कविता लिखै दिस तेज धार जकाँ मन बढ़लैन। ओना, जइ उमेरमे अखन रामकृष्ण बाबू आबि गेल छैथ आ साहित्यक बीज मनमे जागि गेल छैन, जँ तेकर समुचित पालन-पोषण हएत तँ ओ कवितासँ महाकाव्य आ कथासँ उपन्यास रूपमे

फड़बे-फुलेबे करत। मुदा पारिवारिक जे जिनगी अछि ओ गजपटहा धार जकाँ बनि गेल अछि जइसँ बरहबट्टु विचारो आ गतियो-विधि बरहबट्टुए भऽ जाइए। तँए नीक बाटो पकड़ब खेल नहियेँ छी।

जखन अपन संग्रहक सभ कथा सेरिया, छपैले प्रेस दिस बढ़बैक ओरियान केलैन तइ दिन रामकृष्ण बाबूकेँ खुशीसँ अपन बिआहक दिन मोन पड़ि गेलैन। केकरो बेटी, केकरो पुतोहु, केकरो पत्नी तँ केकरो जननीक सीमा छी किने? तूँ नीके-ना प्रेससँ आरो फ्रेश भऽ अबिहऽ। जिनगीमे की लेब। यएह ने भेल सामाजिक जीव भेने समाजकेँ आत्म-शक्ति देब। पचास हजार महिना कमाइ छी, किए ने अपन आ अपन परिवारक खर्चकेँ जिनगीक योजनानुसार बनाएब-बढ़ाएब। देश गरीब अछि, गरीब ऐ दुआरे जे हजारो बर्खक गुलामीक पछाइत स्वतंत्राक साँस लेलक। जइसँ समाजक संग परिवारोक धुरी तँ ढील भइये गेल अछि। चारि बापूत तँ उत्पादनकर्ता परिवारमे छी, जँ ओ उत्पादकेँ परिवारक समुचित विकासमे लगा आगू दिस डेग उठाएब तँ ओ बिसवासू हेबे करत।

रामकृष्ण बाबूक उत्साह जेते लिखै घड़ी रहैन तइसँ बेसी उत्साह पोथी छपबैकाल मनमे जगलैन। लोकक बीच जुड़ाएल अपन आत्मचित्य पठा रहल छी, केतेकेँ आत्मा जुड़ाएत ई पछाइत बुझब मुदा अनवरत ऐ साहित्य साधनासँ जुड़ि आगूक दिवस गूदस करब.!

पोथी छपल। किछु पोथी हित-अपेछितक संग कुटुमो-परिवारमे बिलहलैन। पोथी छपबैकाल मनमे रहैन जे अही पोथीक मूल्यसँ आगूक पोथी छपबैमे सुविधा हएत। मुदा समाजोक तँ अजीव खेल अछि, एक दिस पढ़ैक वातावरण तैयार भेल जा रहल अछि तँ दोसर दिस पढ़निहार पोथीसँ हटि रहल अछि।

हजार पोथीमे गोटेक साए बिनु मूल्यक बँटलैन, बाँकी ओहिना अलमारीमे रखल रहलैन। लोकक बीच एहेन धारणा ऐछे जे जँ

कियो साधक अपन कठिन साधनासँ पोथी प्रकाशित करबै छैथ आ बाजारक समुचित बेवस्था आ समुचित मांग नै रहने जँ अपन बाजार अपने ताकऽ आगू बढ़ै छैथ तँ ओ अपन नैतिकताक मान बढ़बै छैथ। मुदा वाह रे नँगरकट समाज! किछु अपने नै करत आ केनिहारकेँ सौंसे माथ टेटरे ताकि बाजत जे जँ नीक रचनाकार रहितैथ तँ अपने गामे-गाम घुरि-घुरि भौरगीरी करितैथ। मुदा हुनका यएह ने बुझऽ अबै छैन जे जखन मनुक्ख अपन जिनगीकेँ अपना हाथमे लऽ पैरक बले चलि बुधिक बाट पकैड़ विवेकक लक्ष्य बना ओतए तक पहुँचैक तीर्थ यात्रा करए, वएह ने मनुक्ख भेल। मुदा समाजक लोको तँ लोके छी किने, कियो अनकर नीककेँ भरि दिन अधला बनबैए तँ कियो अपन अधलाकेँ भरि दिन नीक बनबैए। जँ से नइ अछि तँ किए कियो अपनाकेँ उदार कहैए आ अनका कंजूस कहि गरियबैए?

भाय! गारि-गरौवैलक तँ ई दुनियेँ छी, पढ़बो करू सुनबो करू, सीखबो करू आ सीखेबो करू। जँ से नइ करब तँ बिजलीक इजोत जकाँ लगले इजोत लगले अन्हारमे पड़ि जाएब।

सभ सभकेँ गरियबै पाछू बेहाल अछि, जइसँ दुनियाँक सभ गारि सुननिहारो छी आ पढ़निहारो तँ छिहे। जेना, जे कियो पोथी प्रेमी छैथ ओ अपन सिदहो-समरक पाइ पोथीए पाछू मार्क्स जकाँ गमा दइ छैथ, मुदा खाधुर नीक मानि प्रशंसा करत, एहनो तँ मनुक्खक सोभाव नहियेँ अछि। ताड़ी-दारू पीनिहार अपन सिदहा-समरक पाइ ताड़ी-दारूमे गमा, रोडपर सँ दुनियाँकेँ गरिऐबते अछि। तँए ओ नीक करैए एहनो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तहिना खेतक प्रेमी लोक, बेटाकेँ कुपोषणक शिकार बना लइ छैथ मुदा कमाएल पाइ नै खर्च कऽ ओही बेटा-ले खेत कीन लइ छैथ। खाएर जे से...।

दुनियाँमे सभ अपनाकेँ उदार मानि दुनियाँकेँ कंजूस कहि गारि तँ पढ़िते अछि, कर्म चाहे जे हुअए। मुदा ई खेल छी मनक माइनक।

मनक माइन जे नीक बुझैए आकि अधला बुझैए ओ भेल मनक खेती-बाड़ीक उपजा। उपजा तँ समैयक हिसाबसँ खेतमे उपजबे करैए, तखन तँ जे जेहेन खेतिहर ओ ओहेन हवा-पानि देखि फसल लगबै छैथ, जइसँ सुभर अन्नो आ आनो-आन भोज्य वस्तु तँ उपजैबते छैथ। ओना, आइए नै अदौसँ आमोक गाछ आ ताड़ो-खजूरक गाछ आबि रहल अछि, मुदा छी तँ दुनू गाछे। तँए फल कुफल नै फड़त सेहो केकरो रोकने थोड़े रोकाएत। एकटा गाछमे फलसँ रस निकलै छै तँ दोसरकेँ पँजरेसँ निकलै छइ। मुदा दुनियाँक खेलो तँ खेले छी, केकरो फूलसँ फड़ होइ छै तँ केकरो फूलकेँ फड़सँ कहियो मकै जकाँ भेँटे ने होइ छइ।

जइ दिन रामकृष्ण बाबू प्रेससँ पोथीक थाक लऽ बससँ गाम अबैत रहैथ, तइ दिन गोसा घाटक मेला दुआरे बसमे खूब भीड़ रहइ। गामक बस रहने पोथीक थाक नेने बसमे चढ़ला। चिन्हार बसक कण्डक्टर आगूएमे गेटे सोझे रामकृष्ण बाबूकेँ बैसा देलकैन।

पोथीक थाक दुनू जाँघपर रखि दुनू हाथे पकैड़, भीड़मे हेरा गेला। हेराइते दुनू आँखि बन्न भऽ गेलैन। पर्वतपर टहलैत पार्वतीकेँ देखिते जहिना महादेव कल्याण, कल्याण करए लगै छैथ तहिना हिनको मन उधिया गेलैन। उधियाइते बिसैर गेला जे गाड़ीमे ठस्सम-ठस्स लोक अछि, जिनगी भरिक कमाइ आगूमे अछि तँए कनी सचेत रही।

रामकृष्ण बाबूक वौआइत मन शिव-शिव करैत विचड़ए लगलैन। बसो जेना चलैसँ थस्स लऽ लेने। कखैन पहुँचाएत, कखैन नइ। पत्नीकेँ अपन जिनगीक कमाइ हाथमे दऽ देबैन। परिवारक एकटा ओहन अमर फलक गाछ रोपि रहल छी जे पुश्त-पुश्ताइन रचैत-बसैत भोगैत रहत। एक-एक जनकेँ हाथमे अपन कीर्त देब। जँ आइए सभटा बिलहा जाएत तँ काल्हिए फेर ने प्रेसक रस्ता पकड़ब।

जइ दिन रामकृष्ण बाबू पोथीक रूपमे कथा संग्रह छपबौलैन तहू दिन तक ई बात नै बुझि पेला जे किए अपनो परिवारजन मैथिली साहित्यक पोथी नइ पढ़लैन। की मैथिलीएकेँ दोख लगा जिनगीक बाटकेँ तियागि दिऐ। भाषा नीक-अधला भऽ सकैए मुदा भाषासँ सजल जे साहित्य अछि, जे मनुक्खक आत्म स्वरूप अछि, ओ केना इमहर-ओमहर भऽ सकैए।

ओना, जाधैर रामकृष्ण बाबूक पोथी प्रेसमे रहलैन ताधैर अपन सृजन-शीलतामे कमी आबि गेल रहैन। प्रेसोमे पोथी छह मास अँटकलैन जे कौलेजसँ समय निकालि-निकालि प्रेसक काज सम्हारने रहैथ। जइ समय रामकृष्ण बाबूक कथा संग्रह प्रकाशित भेलैन तइ समय जहिना लुबधल फड़ल आमक गाछ आ लुबधल फुलाएल गुलाव-फूलक गाछक शोभा-सुन्दरक रंग-रूपमे चारि चान लगि जाइए, तहिना रामकृष्णो बाबूक मनमे लगल रहैन। जइसँ दिन-राति कथा-कविताक सृजनक पाछू मन वौअए लगलैन। छिटफुट केतेको कथो लिखलैन आ कवितो। मुदा लिखैक पाछू छपाएबो, माने प्रकाशितो कराएब तँ ओहीसँ जुड़ल अछि, तँए जखन पोथी छपाइपर नजैर उठि कऽ जानि तँ अन्हार जकाँ आँखिक सोझमे बुझि पड़ैन। ओना, अन्हारो बहुत घनगर नहियेँ रहैन, घनगर अन्हार तँ ओइ रचनाकारक आगू पसरैत जिनका आर्थिक मजबूरी रहै छैन। घनगर अन्हार नइ रहैक कारण रामकृष्ण बाबूकेँ अपनो पचास हजार महिनाक कमाइ रहैन, तैसंग दुनू बेटाक कमाइ सेहो तइसँ बेसीए रहैन।

ओना, जइ मनसूबासँ पोथीक दाम रखने छला, जँ अदहो पोथी–माने पाँचो साए–बीक जइतैन तैयो समस्याक समाधान, माने आगूक छपबैक छपाइक बाधा हल भऽ जइतैन। मुदा से भेलैन नहि। घरेमे पोथी जक-थक पड़ल रहि गेलैन जइसँ रामकृष्ण बाबूक

सृजनशीलतामे ह्रास हुअ लगलैन। रचना दिससँ मन टुटए लगलैन, मुदा पढ़ै-लिखैक वातावरणक बीच रहने पढ़ै-लिखैक अनुकूलता तँ रहबे करैन। सृजन दिससँ–माने मौलिक रचना दिससँ–रामकृष्ण बाबूक मन उतैर समीक्षा तथा अनुवाद दिस बढ़ऽ लगलैन।



शब्द संख्या: 2363, तिथि: 12 नवम्बर 2015

छह

गाम-घर आ चेहरा-मोहरासँ धीरेन्द्र रामकृष्ण बाबूकेँ तीस-पैंतीस बर्खसँ चिन्हैत आबि रहल छैन, मुदा सोझहा-सोझही कहियो कोनो गप नै, तैठाम आगूक सम्बन्धक बीच किछु रस्ता तँ हेबा चाही, से बन्न रहने मनक बात दुनूकेँ मनेमे रहलैन। मनक बात मनेमे ई जे धीरेन्द्र सेहो साहित्यक विद्यार्थी, साहित्यसँ रूचि रहने, गाममे केतेक पाबैन-तिहारक अवसरपर सेहो आ औहुना समाजक संग सामाजिक मञ्चपर समाजक जिनगीक बात कहितो छैथ, सुनितो छैत आ संगे हँसी-ठट्ठा सेहो करिते छैथ, मुदा...।

कृष्णपुरक दछिनवारि टोलमे एक गोरे अगुआ कऽ एकदिना साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन केलैन। अगले-बगलक चारि गामक चारि गोरेकेँ कार्यक्रममे आमंत्रित कऽ एकठाम केलैन। गामक कार्यक्रम, साहित्यसँ रूचि रखैबला धीरेन्द्र सेहो अपन काज बुझि ओइमे जुटला। ओइ चारू पड़ोसी विद्वानमे रामकृष्ण बाबू एक। दोसर, गामेक एक बेकती जे रहैथ तँ अर्थशास्त्र विषयक प्रोफेसर मुदा गामक जिनगीमे रचल-बसल रहने सामाजिक काजमे बेस रूचि छेलैन। तेसर बेकती छला, तेसर गामक आई.पी.एस. अफसर- आई.जी साहैब। आ चारीम बेकती रहैथ- संस्कृत साहित्यक आचार्यक संग वैदिक।

धीरेन्द्रकेँ सेहो समय भेटल। मुदा, एक तँ गाममे नव काजक बीजारोपण भऽ रहलए जइ फलक जरूरत समाजकेँ छइ। तँए

अपनाकेँ वक्ता नै बुझि धीरेन्द्र प्रमुख श्रोताक रूपमे मञ्चपर उपस्थित भेला।

एके दरी-जाजीमक मञ्च बनल। श्रोतासँ वक्ता धरि एक संग सभ बैसला। ओना, निर्धारित विषय नइ रहने सभ अपने-अपने सूरे तैयार रहबे करैथ। तैपर मने-मन ईहो तँ रहबे करैन जे समाजक बीच जेहेन पहचान अछि, तइमे विश्व-मोहिनीक मञ्च परहक नारद जकाँ ने कहीं भऽ जाए। ओना, निर्धारित समयसँ पहिने जहिना मञ्चक ओरियान मञ्चकर्ता केने छला तहिना आमंत्रित विद्वतजन सेहो आध-पौन घन्टा पहिनहि पहुँच गेल रहैथ।

खुल्ला मञ्च छल तँए चारू गोरेक परिचए-पात करबैत मञ्चवैया चाह-पानक ओरियानमे गेला। एमहर-चारू गोरे नमस्कार-पाती करैत, अपन-अपन दर्शक बाँटि लेलैन। नवतुरिया धिया-पुता सेहो अनेरे ढेरिया गेल छल। कियो पुलिस विभागक आई.जी.सँ मुहाँ-मुहींक गपक आनन्दमे मस्त, तँ कियो कौलेज-युनिवर्सिटीक विषयक चर्चमे व्यस्त। मुदा आम आदमी ऐ दुआरे व्यस्त जे साहित्यिकी पर्वक नव पवनौट समाजकेँ भेट रहल अछि। वाह रे गामक संस्कार! हमरा गामकेँ फल्लाँ-फल्लाँ आबि धरतीकेँ पवित्र केने छैथ...।

सभसँ आश्चर्यजित लोक तखन भेला जखन एक संग एक दरीपर बैस सभ चाह पीलैन। तहूमे जेना आई.जी. साहैब कमाने सम्हारि नेने रहैथ तहिना चाह देखिते कहि देलखिन- “एक दिससँ शुरू करू।”

कार्यक्रम शुरू भेल। ओना, अपन-अपन सीमामे सभ उपरा-उपरी, मुदा आई.जी. साहैबक सम्बन्धमे विशेष चर्च समाजक बीच पसरले छल जे वैष्णव छैथ, माछ-मासु किछु ने खाइ छैथ। तेतबे नइ, एको पाइ घूसो-घास नइ लइ छथिन। जइक चलते पितासँ

गरमिलान रहै छैन। गरमिलानोक तँ कारण ऐछे, जैठाम थानाक मुंशी, एक बाध खेत, दस कट्ठा घराड़ी कीन, तीन महला पीट लइए, तैठाम आई.पी.एस. बेटा भेनहि की भेल। सभ दिन अपने तवाह जे मासक अन्तिम सप्ताहमे साबुन लगाएब छोड़ि देने छी...।

मञ्चक अध्यक्षक नाओंक घोषणा होइते गामक पान-सातटा नव-तूर अपन-अपन कविता नेने एक्केबेर आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेल। जा! ई की भेल? मुदा पहिने सभकेँ कविता पाठक समय भेटल।

पहिल कविताक पाठमे जहिना रामकृष्ण बाबू मुड़ी डोलबैथ तहिना, शायरी जकाँ शब्द-शब्दमे आई.जी. साहैब सेहो कहथिन-

"बहुत नीक, बड़ बढ़ियाँ।"

ओना, बैसारक पाछू दिस ईहो कन-फुसकी होइत रहए- "रओ, ई छौड़ा कहिया कवि-काठी भऽ गेल। जेना पेटेसँ सुकदेव जकाँ सीख कऽ आएल हुअए तहिना ढीठगरसँ पढ़ैए!"

ओना, पँजराबला तैपर चोहटबो करइ- "तूँ ने अपने सुनै छह आ ने दोसरकेँ सुनऽ दइ छहक।"

कविताक पाठ सम्पन्न भेल।

पहिल वक्ता आई.जी. साहैब भेला। गीतासँ बेसी सिनेह छैन, गीतापर जेते छोटसँ छोट आ पैघसँ पैघ पोथी अछि, सभ रखनौं छैथ आ पढ़ितो छैथ। ओ गीतेपर प्रवचन करए लगला। ओना, विषयो-वस्तु निर्धारित नइ छल। आई.जी. साहैबकेँ अद्भुत भाषण-शक्ति छैन्हे, जमीनक रस्ते केना गीता चलि रहल अछि...; अपन एक घन्टाक भाषणमे आई.जी. साहैब रखि देलखिन।

एक सूरे वक्ता आ श्रोता मुँहमे कान सटा तेना मस्त भऽ गेला जे सबहक विचारमे जेना नव स्फुरण जागि गेल।

चाह चलल। हँसी-मजाक सेहो चलल। तइ बिच्चेमे रामकृष्ण बाबू अपन पोथी–कथा संग्रहक–एक-एकटा दस-गोरेक हाथमे थम्हा देलखिन। धीरेन्द्रोक हाथमे एकटा पोथी एलैन। जेतेकाल चाह-पान चलल तेतेकालमे सभ कियो पोथीकेँ उनटा-पुनटा देखि भाषा-साहित्य, साहित्यकारक परिचयक संग रामकृष्ण बाबूक चेहरा देख-देखि अपन-अपन पोथी अपना आगूमे रखि लेलैन ।

कार्यक्रम फेर शुरू भेल। दोसर वक्ताक रूपमे रामकृष्ण बाबूकेँ समय भेटलैन। विषय निर्धारित नइ रहने सभ अपन-अपन विषय-खण्ड चुननहि रहैथ। तहूमे साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम छी। ने विषयक कमी आ ने भावक। ओना, आई.जी. साहैबक प्रवचन सुनि रामकृष्ण बाबू एते अह्लादित भऽ गेला जे गीता दिससँ ससैर रामायण दिस चलि एला। ओना, दर्शकक बीच क्रम भंग भेल मुदा ईहो तँ भेबे कएल जे एक विषयमे पच्चीस गोरे पच्चीस रंगक बात कहि अनेरे श्रोताक कानकेँ झराह नै केलैन। मुदा तैयो चारू वक्ताक बीच अपन-अपन वक्तव्यक कान्ही-मिलानी रहबे करैन। रामकृष्ण बाबू रामायणिक सीता-चरित्र शुरू केलैन जे केना ऋृषि-मुनीक खूनसँ उत्पैत कन्या पिताक ऐठाम शिव-धनुष सन धनुषकेँ वामा हाथे उठा ठाँउ करै छलि, तिनका केना पति-घरमे राजगद्दीक बदला बोनक बास करए पड़लैन। जेतए मात्र तीनियेँ गोरे–राम, लक्ष्मण, सीता–वौआइत रहलैथ। संगे, रावण केना ठकि कऽ हरि लेलकैन।

एक तँ शिक्षण वृत्तिसँ जुड़ल रामकृष्ण बाबू, दोसर साहित्यसँ सेहो जुड़ल, तँए रूचिगर ढंगसँ बजला। जइसँ दर्शकक बीच जहिना दही-चीनीक भोजमे सकरौड़ी पातपर अबैत तहिना गीतासँ रामायण धरिक प्रवचन सुनैत-सुनैत समाज मस्त भऽ गेला।

तेसर वक्ता अर्थशास्त्री रहैथ, ओना, विषय बुझबैक अद्भुत

क्षमता रहने कौलेजोमे नीक शिक्षकक गिनती छैन्हे। हिनको अपन विषय तँए अपन साहित्य-संस्कृति रहबे करैन। मिथिलाक माटि-पानि आ साइबेरियाक उत्तरी ध्रुवसँ सटल दछिनी तकक माटि-पानि, समय-सालक तुलना केलैन। केना साइबेरियाक माटि, जे सालक तीन मास-चारि मास-पाँच मास बरफसँ उघार होइए आ ओइठामक लोक केना ओइ माटिकेँ उपजा अपन उदर-पोषण करै छैथ। जखन कि अपना ऐठाम देखौआ तीन मौसम–जाड़, गरमी, बरसात–आ तेकर सीमा-सरहद मिला छहटा मौसम होइए। ने बरफसँ कहियो भेँट आ ने वर्फीली रोगसँ रोगाएल मौसमक संग मातृभूमिसँ। अपना ऐठाम बेसीसँ बेसी- कहियोकाल हवोक संग आ कहियोकाल बर्खोक संग पाथर खसैए, वएह भेल बरफ।

चारिम वक्ता आचार्यजी भेला जे छठि पाबैनपर बजला। पोखैरक घाटपर डुबैत सूर्यक संग उगैत सूर्यक आगू सजल सूप-कोनियाँक अर्घक शास्त्रीय विवेचन पहिने आचार्यजी केलैन। जे किछु गोरे बुझबो केलैन आ किछु गोरे नहियोँ बुझलैन। पछाइत अर्घक संगे जेना अचार्यजी सूपक भुसवाक संग डालीमे गुड़ैक गेला। गुड़ैकते बजला- “चाउरक चिक्कसमे कुशियारक रस मिला अन्नकेँ मधुर बनबैक लूरि अपना सबहक पूर्वजेक देन छी। जेकरा अपना सभ आइयो ओहिना जीबित रखने छी। खेती-गिरहस्तीसँ उपजल वस्तुकेँ डालीमे सजबै छी। जे एक जुगक सीमा रेखा निर्धारित केने अछि। वरसाती फसल जेना हरदी, आदी, सुथनी, अडुआ, टौकना, कुशियार इत्यादिक समय पुरि गेल, आब ओकरा खेतसँ आनि अपन उपयोग करू। तहिना अँकुरीपर संकेत कएल अछि जे ओकर अँकुरैक समय भऽ गेल तँए ओकरा घरसँ निकालि खेतमे दियौ...।”

आचार्यजीक वक्तव्यसँ दर्शक सभ पाबैनक पाबन-पौना पाबि गद्-गद् भऽ गेला। आचार्यजीक वक्तव्यसँ कए गोरेक मुहसँ

अनायास निकलल-

“यएह ने खेतसँ अबैत आ खेत दिस जाइत उदय-अस्त छी!”

“एक जिनगीक बेथा-कथा, केना एकटा दाना साल भरि चक्कर लगबैत छठिक घाटपर अँकुरि कऽ परसाद बनि अपन पाबन पौना दऽ रहल अछि!”

सम्पन्नताक संग कार्यक्रमक समापन भेल।

खुशीक वातावरणमे गदगदीक लहैर लहरल। बाहरी जे अतिथि-अभ्यागत छला हुनका सभकेँ विदा करबाक बेर आएल। मुदा जहिना सीता स्वयंवरक पछाइत जखन मिथिलासँ मिथिलांगना विदा भऽ अयोध्या जाइ लेल तैयार भेली आ तखन जहिना एक दिस बरियातीक बीच जानकी, तहिना ने दोसर दिस जानकी-राम सेहो छेलैथे। जहिना अतिथिगण समाजक सिनेहसँ सिनेहिल भेला तहिना दोसर दिस समाज सेहो बाहरी समाजसँ सिनेहिल भऽ भऽ सिहैर रहल छला। जहिना कार्यक्रम शुरू होइसँ पहिनहि चारू गोरेकेँ एलापर सबहक परिचए बेवस्थापक देने छेलखिन तहिना चारू परिचितिसँ मुँह-मिलानी करैत एक स्वरे बजला-

“एहेन कार्यक्रम साले-साल समाजमे हेबा चाही।”

गौंआँ-सँ-अनगौंआँ धरि सभ एक स्वरे हूँहकारी भरलैन-

“एके गाममे नइ सभ गाममे होय, जँ दसटा गाममे सालमे एको बेर भेल तैयो मास-सबा-मासपर भेल, जइसँ मनक ताजगी बनल रहत। जँ से नइ हएत तँ बिना धरिऔल हँसुआ-खुरपी जेना भोथ भऽ बिझा जाइए जइसँ ओ काजे-जोकर ने रहैए।”

ओना, चारू वक्ताक अपन-अपन जिनगी, कियो हजारो कोसपर नोकरियो करैत आ बान्हल छुट्टीक बीच रहबो करैत, तँ कियो काजेक बोझ तर दबाएल। कियो परिवारक ओझरीमे तेना

ओझराएल जे कोट-कचहरीसँ नोकरी सम्हारैत-सम्हारैत परेशान। अन्तो-अन्त यएह विचार भेल जे सालमे एकबेर हम सभ ऐ गाममे कार्यक्रम करब।

अन्तिम नमस्कार भेला पछाइत रामकृष्ण बाबूक पोथीक चर्च उठि गेल। अपन साहित्य प्रेमक चर्च करैत रामकृष्ण बाबू अपन मातृभाषामे कथा-कविता लिखैक संकल्पित विचार व्यक्त केलैन-

"अपन ई सदैत इच्छा रहैए जे किलास छोड़ि अंगरेजी नइ बाजी, अपन परिवार-समाजक संग विद्यार्थियोसँ अपने भाषामे गप-सप्प करी, से करितो छी।"

चारू गोरे अपन-अपन रस्ते विदा भेला। रामकृष्ण बाबूक संग लगि धीरेन्द्र आगू बढ़ल। ओना, दू-अढ़ाइ किलो मीटरपर रामकृष्ण बाबूक गाम, गामक बीचमे घर। पएरे आएलो छला। दस डेग आगू बढ़लापर धीरेन्द्र रामकृष्ण बाबूकेँ बधाइ दैत कहलकैन-

"श्रीमान्, अपनेकेँ तँ चेहरोसँ आ शिक्षण-काजोकेँ बहुत दिनसँ चिन्है छेलौं मुदा सोझहा-सोझही चिन्हारए आइए भेल। अपनेकेँ पोथी लिखैक बधाइ..!"

ओना, हजारो चेहरामे रामकृष्ण बाबू हेराएल रहै छैथ, मुदा धीरेन्द्रपर नजैर नइ पड़ल हेतैन, सेहो बात नहियेँ कहल जा सकैए। मुदा 'बधाइ' सुनि धीरेन्द्रक परिचए पुछैत रामकृष्ण बाबू बजला-

"अहाँक की नाओं छी, की करै छी?"

"नाओं धीरेन्द्र छी, साहित्येक विद्यार्थी हमहूँ छी। किछ-किछ लिखबो करै छी।"

तैपर रामकृष्ण बाबू कहलखिन- "हमहूँ तँ पड़ोसिया छी। ओना, नोकरिहारा छी। मुदा रविकेँ गामेपर रहै छी। अपन लिखलो देखौ देब आ अबैत-जाइत रहब। देखियौ! एकरे कहै छै संयोग। एक

पड़ोसी छी, एतेटा जिनगी बीत गेल आ परिचए-पात आइ भेल।”

दुनू गामक बीचमे, माने अदहा रस्तामे जखन गप-सप्प करैत दुनू गोरे पहुँचला तँ अखियास भेलैन जे अदहा-अदहीपर आबि गेलौं। मुस्कियाइत रामकृष्ण बाबू बजला-

“बेसी दूर अरियातल अभ्यागतक भेँट बेसी दिनपर होइ छइ। आब अहूँ जाउ, हमहूँ जाइ छी।”



शब्द संख्या: 1539, तिथि: 17 नवम्बर 2015

सात

नोकरीक अन्तिम समय, माने जखन तीन बरख सेवा निवृत्त होइमे बँचल रहैन, रामकृष्ण बाबू प्रोफेसर इण्चार्य रूपमे प्रिंसिपल भेला। ओना, किछु दिन पूर्व डी.लिट् करैक विचार मनमे सेहो उठल रहैन, मुदा से नइ कऽ पेला। पी-एच.डी. तँ केनहि छला। तहूमे नीक विषयपर, तँए मनमे उर्जवान बल तँ आबिए गेल छेलैन। पचपन बर्खक अवस्थामे रीडर भेने दरमहोमे बढ़ोत्तरी भेलैन आ कौलेजमे एक-मात्र रीडर भेने पद-प्रतिष्ठामे सेहो बढ़ोत्तरी भेबे केलैन।

पहिल पोथी–कथा संग्रह–सँ दोसर पोथीमे, माने कथा-सँ-कविताक बीच भावक संग भाषोमे किछु-ने-किछु तफड़का रहबे करैन मुदा जिनगीक प्रथम पुष्प रहने जेहने अपना मनमे तेहने कौलेजक संगियोँ-साथी आ परिवारोजनक बीच खुशीक लहैर उठबे कएल रहैन। मुदा जे कविता संग्रहमे छपल छेलैन ओ टटका नै, दस बरख पूर्वक रहैन। पचास बर्खक पछाइत जहिया पी-एच.डी. करैले रामकृष्ण बाबू रजिष्ट्रेशन करौलेन तहियासँ अपन सृजनक कलम ठमैक गेलैन। ओना, कथो आ कवितो संग्रह, दुनू पोथी- अपन मौलिके रचना छिऐन मुदा एकाएक सृजनशीलतामे ठहराव तँ आबिए गेलैन। तेकर कारण ईहो भेल जे पी-एच.डी.क तैयारीमे समय खिंचा गेलैन। मनो दोसर दिस बहैट गेलैन। तैसंग कौलेजक जिम्मा तँ रहबे करैन।

रामकृष्ण बाबू इण्चार्यक रूपमे प्रिंसिपल बनला पछाइत

पुस्तकालयक भार दोसरकेँ सुमझा देलखिन मुदा तैयो ऑफिसक काजे तेते बढ़ि गेलैन जे मनक थकान बेसिया लगलैन, जइसँ अपन सृजनक कलम साफे बन्न भऽ गेलैन।

होइतो अहिना छै जे जँ कोनो शारीरिक काज हुअए आकि मानसिक, औसतसँ बेसी भेने या तँ थकान जल्दी आएत वा काजक समय पुरौला पछाइत देरी तक थकान रहत। सएह भेलैन रामकृष्णो बाबूकेँ। ऑफिसक ओझरौठ सभमे तेना मन थाकि जानि जे घरपर किताब-कागज-कलम दिस नजरिये ने जाइन।

माघक आठ बजे भिनसर। काल्हि रामकृष्ण बाबू सेवा निवृत्त भेला। काल्हि तकक जे आठ बजैत भोर छल ओ स्नानक समय रहैन, साढ़े आठ बजैत-बजैत खा-पी कौलेजक रस्ता पकैड़ लइ छला। मुदा आइ तँ कोनो काजे ने छैन...।

सौनक करियाएल मेघ जहिना उमड़ए-घुमड़ए लगैए, तहिना रामकृष्ण बाबूक मनमे उमड़न-घुमड़न उठलैन। उठिते पत्नीकेँ कहलखिन-

“मन कनी खसल बुझि पड़ैए, पीलहा चाहक कोनो असर नै भेल। एकबेर हार्ड लीकरबला चाह पीयाउ।”

ओना, सुभद्रोक मन खसले रहैन। खसैक कारण पतिक सेवा निवृत्त छेलैन। काजूलक संगी आब नइ रहलौं। पतिक जिनगी टुटने की पत्नीक जिनगी नइ टुटैए। टुटिते अछि। काल्हि धरि जे कमौआ छला ओ आइ थोड़े रहला। काल्हि धरि जे काज करैत आबि रहल छला, जँ ओ काज करैक शक्ति छैन्हो तैयो आब काजक थोड़े रहला!

आगिपर चढ़ल गर्म वर्तनक पानि जकाँ सुभद्राक मनमे रंग-रंगक बुलबुला जगैत रहैन। मुदा बजती की आ कहथिन केकरा..?

पतिक वेदनाक संग अपन संवेदना व्यक्त करैत सुभद्रा बजली- “हमरो मन उखड़ल जकाँ बुझि पड़ैए। कॉफीए बना लइ छी।”

‘कॉफी’ सुनि रामकृष्ण बाबूक मनमे कुवाथ भेलैन। कुवाथ ई भेलैन जे भरिसक ताना तँ ने मारि रहली अछि। मुदा लगले मन मनाही करैत विचार देलकैन जे भाइयो सकैए। ओहो कियो आन तँ नहियेँ छैथ, आ ने दूरमे छैथ जे हमर बेथा हुनका प्रभावित नै करतैन। बजला-

“जे नीक बुझि पड़ैए सएह बनाउ। मुदा ई नजैर राखब, जे बनाएब ओ कनी कड़गड़ बनाएब।”

सामंजस करैत सुभद्रा बजली- “चिन्नी कनी कम कऽ देने चाहो आ कॉफियोक अपन रमकी रहै छइ।”

सतरंजक गोटी जकाँ सह पाबि रामकृष्ण बाबू बजला-

“जाबे रमकी नइ पीब ताबे मन थोड़े रमकत।”

गैस चुल्हिक बेवस्था, तँए कॉफी बनबैमे पाँचो मिनट ने लगलैन। लगले सुभद्रा दुनू गिलासमे कॉफी नेने रामकृष्ण बाबूकेँ हाथमे धरबैत अपनो आगूमे बैस पीबए लगली।

सुभद्रा कॉफियो पीबैथ आ आँखि उठा-उठा पतियोपर दैथ। आँखि उठा कऽ दइक कारण पतिक बदलैत जिनगीक धारक दुनू कातक महार देखब रहैन।

ओना, रामकृष्ण बाबूक मनमे सेहो उठैत रहैन जे नारी-जगतक पहिल इच्छा तँ यएह ने रहैत अछि जे कर्मगर पतिक हाथमे हाथ रखि जीवन-यात्रा करी। से तँ काल्हि धरि छल। अपन बाहुँवलसँ अपनो आ परिवारोक जिनगीकेँ गूदस करैत एलौं। आइ काज छीना गेल। छिनाएल केना, ओइ-जोकर आब नइ रहलौं।

जहिना सभकेँ होइ छै तहिना ने हमरो भेल...। मुदा तैयो, रामकृष्ण बाबूक मनमे ठनका जकाँ खसिते रहैन। खसैन ई जे अपना तँ ओते पेंशन मासे-मासे भेटैत रहत जइसँ दू गोरेकेँ खाइ-पीबैमे तिरोट नै हएत। मुदा अपन मन की कहत? यएह ने कहत जे बिनु श्रमिक पेब श्रमिक जिनगीक मान-मरजादा रखै छिऐ! जँ से नइ तखन श्रमक माने-सम्मान की रहल। आ जखन श्रमक मरजदे मरि जाएत तखन कियो उन्नतिक शिखरक शिखा जँ माथमे टाँङ्गियेँ लेत तइसँ की हेतै?

लगले रामकृष्ण बाबूक मन आगू ससरैत पत्नीपर गड़लैन। अपने तँ परश्रमावलंवी बनि भरपाइ कऽ लेब मुदा पत्नीकेँ तँ पारिवारिक क्रियामे बढ़ोत्तरीए हेतैन। काल्हि तक आठ बजे भोरसँ आठ बजे साँझ तक बोनाएल रहै छेलौं, भरि दिन जे किछु अपन देहीक जरूरत पड़ै छल अपन सेवा अपने करै छेलौं। मुदा आब तँ हमहूँ ने भार स्वरूप चारि बेर चाह बनबैले कहबे करबैन। तहूमे तेहेन शरीर बनि गेल छैन जे अपने उठबो-बैसबमे असोकर्ज होइते छैन...।

नंग-चंग होइत मने रामकृष्ण बाबू बजला- “अखन गप-सप्प करैक मन नइ होइए।”

कहि हाथक खाली गिलास हाथमे पकड़ा देलखिन। गिलास पकड़बैक कारण रहैन जे झब-दे लगसँ चलि जाएब। मुदा से भेलैन नइ। पतिकेँ कछमछ करैत देखि सुभद्राक मन सेहो कछमछा गेलैन। कछमछा ई गेलैन जे बुढ़ देह भेलैन। जँ ऐठामसँ उठि कऽ चलि जाएब आ कहीं कछमछीए सँ प्राण छुटि जानि; तखन जँ समाजक कियो पुछत जे की भेलैन, केना भेलैन? तखन ई कहब केहेन हएत जे ‘हम किछु बुझबे ने केलौं?’ जँ कोनो बेथा मनमे छैन तँ ओ जाबे मनसँ निकालता नै ताबे ओकर दरद केना कमतैन। कनैत-कनैत तँ लोक कमाइबला जुआन बेटाक मृत्युक दरद मेटा लइए आ हिनका कोन एहेन विपैतक पहाड़ टुटि कऽ देहपर खसि पड़लैन, जे दरद नै

कमतैन...। दुनू परानीक मन अपन-अपन दुनियाँमे कॉफीक रमकी पकैड़ रमकैत रहैन। मुदा लगले रामकृष्ण बाबूक मनमे एकटा युक्ति फुरलैन। युक्ति ई फुरलैन जे जँ कनीकाल मन मारि कऽ चुप भऽ जाएब तखन अपने उठि कऽ केनो काजे चलि जेती। सएह केलैन।

कुरसीपर बैसल रामकृष्ण बाबूक देहमे शिथिलता अबऽ लगलैन, जेना देहक शक्ति निकलऽ लगलैन। जँ कुरसीपर बैसल रहब तँ मुर्हैं-भरे निच्चाँमे खसि पड़ब। चेतन मन चेतबैत कुरसीपर सँ उठा पलंगपर लऽ गेलैन। सिरमापर नीक जकाँ मुड़ी सोझो ने भेल रहैन कि मन फुरफुरा कऽ उड़लैन। उड़लैन ई जे काल्हि धरि दुनियाँक बीच काजमे रमल रहने अपन देहक संग परिवारो आ समाजोक सभ किछु बिसैर गेल छेलौं। मुदा आइ तँ ओ दुनियाँ नइ रहल। की दुनियाँ हमरा-ले अनर्थ भऽ गेल?

रामकृष्ण बाबूक मनमे 'अनर्थ' ऐबते एक संग केतेको विचार मनमे उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलैन। उठि कऽ ठाढ़ ई भेलैन जे जखन दुनियेँ अनर्थ भऽ गेल तखन हमरे अर्थ की रहल। दुनियेँ रहने ने अपनो छी...।

मुदा लगले मन फरिच भेलैन। दुनियाँ अनर्थ नइ भेल, दुनियाँ तँ जहिना सभ दिन अर्थ-भरल रहल तहिना अखनो अछि आ आगूओ रहबे करत! लगले मन अपन दुनियाँक बीच एलैन। ऐबते मनमे उठलैन जे अनका-ले दुनियाँ भलेँ अर्थपूर्ण किए ने अछि आ रहह मुदा अपना-ले तँ अनर्थ भइये गेल। जँ से नइ भेल तँ की जइ दिन कौलेजक प्रोफेसर बनलौं तइ दिन जे योग्यता छल, तइमे तँ आइ बढ़ोत्तरीए भेल, मुदा आब हमरा-ले कोन कौलेजक जगह खाली अछि जैठाम जा बास करब... ?

रामकृष्ण बाबूक मन फेर ठमकलैन। ठमैकते मनमे उठलैन जखन अपन दुनियेँ अनर्थ भऽ गेल तखन तँ दुनियाँ अन्हार भइये

जाएत किने। मन कलपऽ लगलैन। कलपऽ लगलैन जे जखन सगतैर अन्हारे पसैर जाएत तखन रहब केतए!!

जिनगीक बोनमे रामकृष्ण बाबू औना गेला। औनाइक कारण भेलैन जे जहिना परती-परात भूमिमे बोन-झाड़क बीच साइयो-हजारो चलैक बाट तँ रहैए, लोक चलितो अछि, मुदा ओकर निसचित दशा-दिशा नइ रहने बोने-बोन, झाड़े-झाड़ चलैत रहैए-चलैत रहैए मुदा कोनो ठौर-ठेकान नै रहने औनाए लगैए, तहिना रामकृष्ण बाबूक मन वौआ तँ अबैन मुदा निसचित बाट नइ भेटने औनाए लगैन, दम फूलऽ लगैन। मुदा किछु क्षणक पछाइत जखन मन असथिर भेलैन, साँसक गति सम भेलैन तखन अपन जिनगीक दू महारक बीच बहैत धारपर नजैर पड़लैन।

काल्हि धरि की जिनगी छल। निसचित काजमे जिनगीक सभ क्षण निर्धारित रहै छल। समयपर खेनाइ खाइ छेलौं, काज करै छेलौं, अराम करै छेलौं। अपन जिनगीक संग जे सेवाक भार कान्हपर छल से करैत दुनियोँक सेवा करै छेलौं। अहिना ने संयासियो सबहक जिनगी छैन, जे सदिकाल दुनियाँकेँ दुतकारितो दुनियाँक सेवामे सभ किछु त्यागि दिन-राति प्रकृतस्थ भेल रहै छैथ...।

रामकृष्ण बाबूक भक् जेना खुजलैन। दरमाहापर सेवा करैक भार छीना गेल, जे आब भरिया बनैक सामर्थसँ बाहर भऽ गेल, मुदा तँए कि अपनामे ओ शक्ति नै अछि जे भार विहीन भऽ जाएब। अपना भरे चलब आ अनका भरे चलब, यएह ने हारि-जीत छी।

..मोन पड़लैन अपन सृजन शक्ति। सृजन शक्ति ऐबते मन तरैस गेलैन। जेना किछु नव चीज भेट गेल होनि तहिना मनमे खुशी जगलैन। पत्नीकेँ सोर पारलखिन- “केतए छी?”

चारि कोठरीक घर-आँगन, सुभद्रा जेबे केतए करती। बड़

जेती तँ सुतै-घरसँ भनसा-घर।

पतिक आवाज सुनि बजली- "एतै छी। अबै छी।"

बजैत सुभद्रा आबि आगूमे ठाढ़ भेलखिन। रामकृष्ण बाबू सेहो पलंगेपर पल्था मारि बैस, कैरम-बोडक उल्टा गोटी जकाँ कहियौ आकि महाभारतक अर्जुनक नैन-भेदी वाण जकाँ, बजला-

"एना जे छिलमिलाइत चिड़ै जकाँ देखि संगीक संग छोड़ि चलि जाएब, तखन भेल जिनगीक संगबे?"

रामकृष्ण बाबूक बात सुभद्रा नीक जकाँ नइ बुझली मुदा चिड़ै तँ बुझि गेल छेली। चिड़ैयेक पाँखि पकैड़ बजली- "पुरुखक कोन ठेकान। वेचारी मादा चिड़ैकेँ अण्डा सेबए पड़ै छइ। अहाँकेँ की अछि भने नोकरियो चलिये गेल, आब पलंगपर बैसल-बैसल हुकुम फरमाबैत रहू।"

सुभद्राक बात जेना रामकृष्ण बाबूक करेजकेँ छेद देलकैन। तिलमिला गेला। मुदा चुप्पो हएब नीक नहि बुझि तीनू बेटा-पुतोहुक चर्च उठबैक विचार मनमे रखि बजला- "अपने तँ आब कोनो काज नइ रहल..?"

रामकृष्ण बाबूक मनक बात मनेमे घुरियाइत रहैन आकि बिच्चेमे सुभद्रा टोकि देलकैन-

"एना किए मन तोड़ि कऽ बजै छी। दुनियाँकेँ लोक कर्मभूमियो कहैए, आ अहाँ..?"

ओना, रामकृष्ण बाबूक मनमे घुरियाइत ई रहैन जे जहिना अपने काजसँ निचेन भऽ गेलौं तहिना जँ ओहो काजसँ निचेन भऽ जाथि, तखन ने दुनू गोरेक जिनगी समतूल हएत। से तँ ऐठाम सम्भव नइ अछि। अपने तँ कोनो काज नइ रहल मुदा हुनको नइ रहलैन सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। एक तँ जहिना सभ दिन घर-

आँगनक काज करैत आबि रहल छैथ तहिना छैन्हे आ तैसंग ईहो तँ भइये गेलैन जे एते दिन भरि दिनक असगरूआ जिनगी छेलैन, जइसँ खगतो कम छेलैन आ आब हमरा रहने तँ परिवार जकाँ पारिवारिक खगतो बढ़तैन जइसँ काजो बढ़बे करतैन...।

रामकृष्ण बाबूक मन नचलैन। नाचिते दुनू सिरो आ पुछरियो एकठाम भऽ गेलैन। जहिना घुरीपर नचैत चक्रवत-चक्का चारू दिस एके अवस्थामे नाचि जाइए तहिना मनक चक्का नाचए लगलैन। कखनो होनि जे जीवन संगिनी पत्नी छैथ, तँए काजोक समरूपता हेबा चाही, मुदा लगले होनि जे जहिना आदिम कालमे मनुक्ख मनुक्खक हाथ पकैड़ अपन गुलाम बना, मारि-पीटि ओकरासँ सेवा करबै छल तहिना ने पत्नियोँ भेली! किछु कहबैन आ से जँ नै करती, तँ कि कोनो एहेन मरतरिया हमहींटा हएब जे मारि-पीट कऽ हुनकासँ काज लेब आ अपने मलिकाना झाड़ब..!

रामकृष्ण बाबू गुम्म भऽ गेला। मुदा परिस्थितिवस कहियौ आकि देखा-देखी, फुरलैन- हँ ई कोनो अनुचित थोड़े भेल। समाजमे कि कोनो हमहींटा एहेन हएब आकि एहेन समाजक रेवाजे बनल अछि। रेवाजेसँ ने रीति आ रीतेसँ ने नीति बनैए। समाजोक तँ एहेन नीति ऐछे...।

मुदा फेर रामकृष्ण बाबूक मन अपन साठि बर्खक देहसँ भारी पत्नीक पसेनापर पड़लैन। जैठाम भरि-भरि दिन आगिक चुल्हि लगक जिनगी जीनिहारि संगी छैथ तैठामक यएह भेल संगपना! कियो आगिमे झड़कै आ कियो फूह खेलए..?

ओना, रामकृष्ण बाबू पत्नीकेँ ऐ दुआरे सोर पाड़ने छेलखिन जे गामसँ हटि जखन कोनो बेटा ऐठाम रहब, तखने दुनू बेकतीक जिनगी समरूपमे चलत मुदा फूहर मन रहने आने-आने विचार तेना

मनमे उठए लगलैन जे नियरलाहा बात मनेमे टराइत रहलैन। बजला-

“एकटा बात बुझल अछि?”

तेहेन पोजमे रामकृष्ण बाबू बजला जे सुभद्रा चौंक गेली। अकचकाइत बजली-

“की इ इ इ.., नाइ इ इ...।”

ओना, बजैकाल तँ सुभद्रा बाजि गेली, मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे एतेटा दुनियाँमे एते चीज अछि, एते लोक अछि, तइमे एहेन कोन एकटा बात अछि जे एतेकालसँ गप-सप्प केलौं आ ओ रहि गेल पछुआएले?

सुभद्रा अपन मनक विचारमे वौआइते छेली कि बिच्चेमे रामकृष्ण बाबू चहैक उठला-

“कनी चाह पीआउ।”

‘चाह पीआउ’ सुनि सुभद्रा मने-मन हँसली। खुनलौं पहाड़, भेटल मुसरी! मुदा मन तँ बिहुसल छेलैन्हे, बजली-

“माँड़े ते माउग जीविते अछि, अही बहन्ने ने अपनो पीब।”

ओना, पत्नीक बात रामकृष्ण बाबूकेँ नीक नइ लगलैन नीक नइ लगैक कारण भेलैन जे जइ तरहक विचार मनमे उपजए लगलैन, तइ अनुकूल पत्नीक कर्म-कुशल नइ बुझि अपनेमे मनन-चिन्तन करब नीक बुझलैन। तँए लगसँ पत्नीकेँ हटबए चाहलैन।

सुभद्रा चाह बनबए गेली।

सुभद्राकेँ लगसँ हटिते वर्तनक लहरैत पानि जहिना रसे-रसे असथिर होइत जाइए तहिना रामकृष्ण बाबूक मन असथिर हुअ लगलैन। मुदा तैयो मन सिहकैते रहैन। सिहकैत मनमे एलैन- हम

केतए छी?

‘हम केतए छी’ मनमे उठिते जेना अचेत मनमे होइए तहिना सभ किछु हेरा गेलैन। मुदा कोनो एहेन फल वा फूलक गाछ, जे जड़िए-सँ फड़ए–फुलाए लगैए तैठाम जहिना लगौनिहारक तृष्णा तृषित होइत तिरपित हुअ लगैए तहिना रामकृष्ण बाबूक मनमे जगए लगलैन। ..एक संग अनेको प्रश्न उठि-उठि ठाढ़ हुअ लगलैन। कोनो प्रश्न एहेन बुझि पड़ैन जे पेनी नीक छानल अछि, जइसँ मन हरैस कऽ हरखित भऽ जाइन। मुदा लगलै आगू टुटल छाती वा फुटल माथ देखि मन तरैस कऽ तलैप जाइन! मुदा सिहरैत मनकेँ असथिर करैत जिनगीक धारकेँ पकड़ैक परियास केलैन। तैबीच पत्नी चाह नेने आबि गेलखिन।

होइतो अहिना छै जे जँ अहाँ अपन जिनगीक कोनो गिरह खोलैत होइ आ बीचमे जँ कियो नव आगन्तुक आबि जाथि तैठाम अपन विचार रोकि, हुनका तँ कुशल-छेम पुछब अनिवार्य भइये जाइए तहिना रामकृष्णो बाबूकेँ भेलैन। चाहक गिलाससँ निकलैत भाफ देखि बजला-

“अहाँ तँ ने बेसी भफाएल छी, चाहक रंग नीक लगैए।”

तैबीच सुभद्रा दू घोंट चाह पीब चुकल छेली। गरम चाहक भाफ सुभद्राक मुहोँसँ निकैलते रहैन। भफाएले-मुहेँ उत्तर देलखिन-

“जेते भफाएल पुरुख-पातर होइ छैथ, तेते जँ मौगी-मेहैर रहत तँ दुनियाँ आछन भऽ जाएत।”

रामकृष्ण बाबू सेहो अदहा गिलास चाह पीब नेने छला। चाहक भाफो जिरा गेल छल मुदा मनमे पत्नीक बात घुरियाइते छेलैन। एहेन भारी बात किए पत्नी बजली जे दुनियोँ आछन भऽ जाएत? जँ दुनू बेकता-बेकतीक बात रहैत तँ काज देखि टोक-टाक

करितैथ, मुदा ऐठाम तँ दुनियेँक बात बाजि गेली..!

बीटियबैत रामकृष्ण बाबू पुछलखिन-

“नै बुझलौं, की दुनियेँ आछन भऽ जाएत?”

बिहुसैत सुभद्रा कहलकैन- “सभटा गप अखने कऽ लेब आकि काल्हियो-ले राखब। एकरा काल्हिले रहए दियौ।”

चीतवनमे मन असथिर करैत रामकृष्ण बाबू बजला- “अपना नीक बुझि पड़ि रहल अछि जे जखन सेवानिवृत्त भइये गेलौं तखन किए ने बेटे-ऐठाम चलि दुनू परानी रही।”

‘बेटा-पुतोहु ऐठाम जा रही’ सुनिते सुभद्राक मनमे भन-भनी शुरू भेलैन। एक संग केतेको प्रश्न मनमे उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलैन। विरहाइत मनमे नाचए लगलैन, अपन-हाथ जुइत आ विचारक परिवार। तहूमे एकटा बेटा नइ, तीन-तीनटा अछि। तीनू तीनठाम अपन-अपन रहैए। अपनो तीनू भैयारीमे तीन रंगक जिनगी छइ। तीनू नोकरिया परिवार छी, बेटा सभ भरि दिन काजक पाछू विरहाएल रहैत हएत आ घर-परिवारक सभ जुति-भाँति पुतोहुक हएत...।

पुतोहुपर नजैर पड़िते सुभद्राक मन आरो भिनैक गेलैन। भिनैकते पतिपर दाँत पीसैत विचारए लगली। कोन दुरमतिया कपारपर चढ़ि गेलैन जे ओहन मनुक्खकेँ कपारपर उठा अनलैन। ई तँ गुण अछि जे दुनू गोरे दूठाम छी, नइ ते साँझ-भोर झोंटा-झोंटौवैल होइतए। जेहने गामक रहत तेहने ने माइयो-बाप आ सरो-समाज रहतै। जेहने सर-समाज रहतै तेहने ने लोको हेतइ।

मुदा लगले सुभद्राक मन शान्त भेलैन। शान्त होइते बजली-

“अपनेटा नीक बुझि पड़ैए आकि बेटो सभ नीक कहत, समाजो नीक कहत?”

सुभद्राक बात रामकृष्ण बाबूक चानिक चान तोड़ि देलकैन। झनाक-दे मनमे उठलैन, तीनू बेटाक परिवारक जिनगीक संग अपन जिनगी। तीनू बेटाक परिवारो आ दरमहो तीन रंगक अछि। जेना पैरक ओंगरीक घावमे ठेंसने ठेंसेक अनुकूल दरदो बढ़ै छै तहिना एक साहित्य-प्रेमी सेवा निवृत्त प्रोफेसर- रामकृष्ण बाबूक बीच उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलैन। ठाढ़ होइते नजैर तीनू बेटाकेँ बच्चासँ सियान धरिक जिनगीपर गेलैन। अपन सेवामे केतौ कोताही कहाँ भेल। कोताही मनमे ऐबते पत्नीपर नजैर गेलैन। नजैर ई गेलैन जे जनमसँ करम धरि सभटा तँ वएह ने केलखिन। तखन अपने मने अपना मनकेँ मना लेब, से नीक नै...।

समगम होइत रामकृष्ण बाबू पत्नीकेँ पुछलखिन- "पहिने अहाँ कहू जे तीनू बेटाक पालनमे कोनो दूजा भाव केने छी?"

सुभद्राकेँ जेना ठोरेपर रहैन तहिना बजली- "नहि।"

रामकृष्ण बाबूकेँ बुझि पड़लैन जे उड़ैत कौआ जकाँ सोझे टाँहि दऽ देली। काग भाषा नै बजली। तँए बिना घमरथने नइ फरियाएत।

बजला- "एकटा बात पुछौं?"

जहिना जिज्ञासु जकाँ रामकृष्ण बाबू बाजल छला तहिना जिज्ञासा करैत सुभद्रा बजली- "एकटा नइ एक हजार पुछू।"

मुँह-कान सम्हारैत रामकृष्ण बाबू पुछलखिन- "कोनो चीजक छाँहक अकार केहेन होइए?"

ओना, रामकृष्ण बाबूक प्रश्न ओझराएले रहलैन। जे पछाइत अपनो बुझलैन।

पत्नी टाँहि दऽ उत्तर देलकैन- "चीजक रंग चाहे जेहेन हौउ मुदा छाँह तँ कारीए हएत किने।"

पति-पत्नीक बीचमे अहिना बात-विचारक झिक्कम-झिक्का होइते छै, तँए रामकृष्ण बाबूक मनमे मिसियो भरि कुवाथ ऐ बातक नइ भेलैन जे हमर बात पत्नी काटि देली, नै मानली।

थोड़ेक पाछू घुसकैत बजला-

"अहूँ बुझैमे लाले-बुझक्कर छी। हम पुछलौं 'अकार' आ अहाँ बुझि गेलौं 'रंग'। ठीके ने लोक कहै छै केदैन बुझलैन दू ढेकरी पियौज।"

'लाल-बुझक्कर' सुनि सुभद्राकेँ मिसियो भरि कम्पन्न नै भेलैन। जँ कम्पन्न होइतैन तँ लाल बुझक्कर आ कारी बुझक्करक बात उठितैन, मुदा से सभ किछु ने। ऐगला बात जे 'दू ढेकरी पियौज'क छल से मनमे जनु गड़ि गलैन। बजली-

"की दू ढेकरी पियौज कहलिऐ?"

अपन बात सम्हारैत रामकृष्ण बाबू बजला-

"कोनो चीजक अकारक माने भेल, ओकर मूर्त रूप, जे ओकर अपन लछन-करन छिऐ। आ रंग तँ ऊपरसँ चढ़ैए।"

पतिक बातकेँ मने-मन मानि सुभद्रा बजली-

"कीदैन कहए लागल छेलिऐ से बिसैर गेलौं?"

"नै, बिसरबै किए। सएह ने कहै छी।"

पत्नी-

"कहू।"

"जहिना कोनो चीजक अकारक छाँह अकार नेने रहैए तहिना परिवारमे बेटा-बेटीक सेवा ओही अकारमे माए-बापक प्रति रहैए। ओना, हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता अछि। दुनियाँमे जेते मनुक्ख अछि, तेते रंगक जिनगियो छइ। जइमे लोक मौज-मस्तीसँ जीबतो

अछि।”

पतिक बात सुनि सुभद्राक मन पानिसँ भरल घैल जकाँ बुझि पड़लैन। अकछाइत बजली-

“अनेरे कोन दुनियाँक भौरी-बट्टामे लागल छी। अपन नून-रोटीक बात सोचू।”

पत्नीक विचार सुनि रामकृष्ण बाबूक मन ठमकलैन। ठमकलैन ई जे एते दिन अपन देह दुनियाँक धुनकीमे धुनै छेलौं जइसँ दुनियाँमे जीबैक हकदारो छेलिऐ मुदा आब तँ से नइ रहल। तीनू बेटा तीनठाम नोकरी करैए, तीनूकेँ तीन रंगक दरमेहेटा नै, परिवारो छइ। विचारमे ऐबते रामकृष्ण बाबू वौआ गेला। आँखि उठा देखैथ तँ दुनियाँक बोनमे सौंसे बाटे-बाट देखाइन। मुदा जहिना बाट नइ रहने लोक हेरा जाइए तहिना बाटक बोनमे सेहो तँ हेराइते अछि...।

पतिकेँ चुप देखि सुभद्रा टोकलखिन-

“एना जे नून-रोटी बेर चुप्पी लाधि देब, तखन तँ...।”

पत्नीक तगेदा सुनि रामकृष्ण बाबूक मन विचलित नइ भेलैन। नइ होइक कारण मनमे रहैन, दुनू परानीक जिनगी तँ दू जनक प्राणक बीचक आड़िपर ने ठाढ़ अछि, तैठाम एक-दोसरकेँ विचारवान बनौने बिना काजो तँ नहियेँ चलि सकैए...।

विचारकेँ बहटारैत रामकृष्ण बाबू बजला-

“हम अही दुआरे बेटा ऐठाम रहैक विचार करै छी।”

बेटाक नाओं सुनिते सुभद्राक मन नचलैन। नचलैन ई जे बेटाकेँ पालने छी, पालनक भार लेब मुदा ओहो तीनू तँ तीनठाम अछि!

झँपले-तोपल सुभद्रा बजली- “तीनू तीनठाम जे अछि?”

पत्नीक बात जेना रामकृष्ण बाबूक छातीकेँ बेध देलकैन। बेध ई देलकैन जे तीनूकेँ अपना जनैत ने कहियो खाइ-पीबैमे कोताही केलिऐ आ ने पढ़ै-लिखैमे। एके रंग तीनू भाँइ डिग्रियो पौने अछि। मुदा तीनूक जिनगीमे अकास-पतालक अन्तर भऽ गेल अछि! एना किए भेल?

पत्नीकेँ कहलखिन-

“माथा काजे ने करैए। कनी एकबेर दू-घोंट चाह पिआउ।”

रामकृष्ण बाबू तीनू बेटाक जिनगीपर जखन सेरिया कऽ नजैर देलैन तँ बुझि पड़लैन जे जेठ बेटाकेँ उन्नतिक कारण नीक बैंकक नीक दरमाहाक संग नीक सुविधो अछि आ तैपर सँ बालो-बच्चाक तेहेन भारी बोझ नइ छइ। मुदा मझिलाकेँ तँ दुनू दुरगैत भऽ रहल छै, परिवारो नमहर छै आ नव बैंक रहने दरमहो कम छइ। आ तेसरक तँ दिने-दुनियाँ दोसर छै, सरकारी नोकरी छै, सरकारी खजाना हाथमे छै, सदिकाल हवाइये जहाजसँ स्वर्ग-नर्क टहलैत रहैए। तैबीच पत्नी चाह नेने पहुँचलैन।

भफाइत चाह देखियो कऽ रामकृष्ण बाबू गुमे-गुम चाह पीबए लगला। विचार बिन्दुमे अँटकल रामकृष्ण बाबूक मन। तीनू बेटाक जिनगीमे सामंजस तँ आनल जा सकैए। किए तीनू भाँइ अपने-अपने बाल-बच्चा मात्रक परिवार बुझि मनमे रोपि लेलक।

बिच्चेमे पत्नी पुछि देलकैन-

“आब कहू केहेन मन लगैए?”

हारल-मारल-थाकल बटोही जकाँ रामकृष्ण बाबू बजला- “अपनो हूसलौं। जँ परिवारक स्तरक हिसाबसँ तीनू भाँइकेँ सामंजस

कएल जाइत तँ जे अखन बनि गेल अछि से नइ रहैत!”

सुभद्रा-

“तखन आब..?”

रामकृष्ण बाबू-

“तखन यएह जे जँ बेटा बाप-माए बुझि परिवारसँ सम्बन्ध रखए सेहो बड़बढ़ियाँ आ जँ नइ राखए सेहो बड़बढ़ियाँ। समाज तँ भीखो मांगि कऽ खेबाक अधिकार लोककेँ देनहि अछि। अन्तमे बुझल जेतइ। मुदा गाम छोड़ि बाहर नइ जाएब।”



शब्द संख्या: 3232, तिथि: 23 नवम्बर 2015

आठ

दरबज्जाक चौकीपर बैसल रामकृष्ण बाबू अपन ऐगला जिनगीकेँ ठेकाइन रहला अछि जे आब केना चलब? मुदा कखनो अनठेकान दिस बहि जाइ छैथ तँ कखनो ठेकान दिस। स्पष्ट आ सोझ-साझ रस्ता देखिये ने पाबि रहल छैथ...। मुदा लगले मनक खिड़कीसँ अपन संकल्पित विचार हुलकी देलकैन, हुलकी ई देलकैन जे तीनटा बेटा अछि मुदा तीनू तीनठाम ऐछो आ तीनूक जिनगियो–दरमाहा, आमदनीक–हिसाबे तीन रंगक छइ। तैठाम केकरो ऐठाम गेने विसाइन भइये जाएब। विसाइन ई जे भाए-भाए वा बहिन-बहिन वा भाए-बहिनक बीच जे अनुवांशिक सिनेहक रज-कण अछि ओ दोसर-तेसरसँ किछु-ने-किछु भिन्नता रखिते अछि। भलेँ अपन सहोदर बहिनकेँ देवी-दुर्गा वा भगवतीक रूपमे दर्शन पबैए तैठाम दोसराइत बहिनक संग रूप परिवर्तित हुअ लगै छै, अनेको रंगक रूप बनि-बनि ठाढ़ हुअ लगै छइ। खाएर जे से...। रामकृष्ण बाबूक विचार आगू बढ़लैन। आगू बढ़िते परिवार सभपर–माने अपनो बेटा आ आनोक बेटा–पर नजैर पड़लैन। विचित्र ढंगसँ परिवार-सजल अछि। दू परिवारक दू जनक संयोग विवाहक रूपमे होइ छइ। मुदा दुनूक पारिवारिक रूप की अछि? किएक तँ परिवारो ने एकटा रूप बना चलैए। दू परिवारसँ आएल दू जन मिलि एक नव परिवारक सृजन करैए। जइसँ दू लूरि, दू बूधि आ दू विचारोक संग भऽ सकैए आ एको-एक लूरि, बूधि आ विचारक संयोग भऽ सकैए। माने ई जे

जँ एक भाषा-क्षेत्र, एक लूरि अर्थात् एक काज आ एक विचार–माने जिनगीक दिशाक विचार–क्षेत्रक संयोग सेहो होइए...।

मुदा रामकृष्ण बाबूक मन लगले आगू बढ़ि अपन तीनू बेटा-पुतोहुपर पड़लैन। तीनू सहोदर भाइयो आ दियादिनियो भेली। मुदा तीनूक जिनगीमे एते अन्तर किए भऽ गेल जे भैयारीक बीच एतबो मिलान-भाव नइ अछि जे एक परिवारक छी? एक माए-बापक संतान छी? एके रंग तीनू भाँइकेँ सेवा करैत एक स्तर तक पढ़ैलौं-लिखैलौं! आखिर, तीनू भाँइ ऐ बातकेँ किए ने बुझि पेलक? एक तँ सामाजिक जिनगी टुटि-टुटि कऽ विकृत रूप बनौने जा रहल अछि..! तैठाम तीनू बेटाकेँ अनेरे पढ़ेबे किए केलौं। हम सक्षम बेल बुझि विचार करैक बाट देलिऐ। अपना-ले कियो अपने ने सोचत-विचारत। भैयारीक सम्बन्ध भइये ने निमाहत आ माए-बापक धियान रखि चलत। भलेँ सोचै-विचारैक अनेको दिशो आ रस्तो अछि।

पत्नीकेँ सोर पाड़ि रामकृष्ण बाबू कहलखिन-

“अहुँकेँ चाहो-पान धरिक सिनेह हमरासँ नइ..?”

सुभद्रा वर्तन-बासन धोइ छेली। आँखियो कारिखेपर आ हाथो कारिखेपर तँए मनो करिखाइये गेल रहैन।

उत्तर दैत बजली-

“बहत्तैर हाथक अँतरी होइ छैन पुरुखकेँ आ सिनेहीन हेती मौगी।”

ओना, पतिक इशारा सुभद्रा बुझि गेल छेली। सभ काज छोड़ि केतली अखारि चाह बना कपमे नेने रामकृष्ण बाबू लग पहुँचली। हाथक भफाइत चाहसँ जखने रामकृष्ण बाबूक नजैर उठि सुभद्राक चेहरापर पड़लैन कि गाछक शील जकाँ परिवारक शीलपर नजैर पहुँच गेलैन। शीलपर पहुँचते ऐगला परिवारक शीलपर गेलैन। ओ तँ

डारि जकाँ होइए..!

जहिना भकमोड़पर भक् लगितो अछि आ छुटितो तँ ऐछे तहिना रामकृष्ण बाबूक भक् खुजलैन। भक् खुजिते पत्नीकेँ कहलखिन-

“जहियासँ दुनू गोरे संग भेलौं तहियासँ केतेको रौदी-दाही भेल, मुदा जहिना दुनू परानी प्राण-सँ-प्राण सटा संगे जीबैत एलौं तहिना आगूओ ने जीबैक बिसवास बना चलब।”

एक तँ भिनसुरका उखड़ाहा तैपर दुनू बेकती संग-संग चाहो पीलैन। चाह-पान केलाक पछाइत तँ ओहिना सबहक मन जीरा जाइते छै, तहिना सुभद्राकेँ भेलैन। मुदा मनक भीतर खौंझ उठि गेल रहैन जे पुतोहु रहैत अपने हाथ झड़काबऽ पड़ैए। आ दोसर दिस ईहो होइन- ‘साँएक राज अपन राज, बेटा-पुतोहुक राज मुँह-तक्की।’ जैठाम अपना मने सभ दिन खेलौं-पीलौं तैठाम आनक मने खाइ-पीबैले भेटत से मन मानत..?

द्वन्दमे सुभद्राक मन घुरिया गेलैन। रस्ता परहक धूरा जेना रस्तेकेँ अन्हरा देलकैन तहिना आगू-पाछूक विचार दिस नजरिये ने जाइत रहैन।

ओना, रामकृष्ण बाबू अपनो दू जिनगीक मझधारमे लटैक गेल रहैथ। होइतो अहिना छइ। जहिना धरती-अकासक बीच जे क्षितिज अछि ओ दुनू दिससँ घीचम-तीर करैत सीमा बनौने अछि, तहिना दू धारक बीचक धारामे सेहो लोक लसैकते अछि। ओना, तहूठाम तीन स्थिति होइ छइ। कोनो पहाड़ी धार रहने सालो भरि गतिशील रहैए तँ कोनो बरसाती धार रहने तीन-मसुआ, छह-मसुआ बनि सुखि जाइए। मुदा से नइ, वर्फीली धारक बहाउ सभ दिशामे जँ समान होइ, तखन जे दू धाराक बीचक शक्ति रहत ओ एक नव

शक्तिक सृजन करैत आरो बेसी गतिशील होइत बहैत रहैए। मुदा ओहो वर्फीलीक बहाउ जे मध्यम गतिये हएत, तैठामक धाराक जे गति रहत ओइमे कतर-व्योंत हेबे करत किने। माने तेज बहाउक धारा ओकरा रोकबे करत किने। तैठाम जँ ओइसँ क्षीण वर्फीलीए धार किए ने हौउ आकि तीन-मसुआ, छह-मसुआ बरसातीए धार, ओ तँ सहजे अपन घर-अँगना छोड़ि मरि जाइए।

विचारक धारमे बहैत रामकृष्ण बाबूक मन सेहो डोलि-डोलि जिनगीक धारमे बहऽ लगलैन। जइसँ मन थीरे ने होनि जे आब कोन घाटपर पहुँचब जे ओइ पार जाएब। मुदा मनमे लगले उठि गेलैन जे अखन धरि परिवारे आकि अपनो जिनगी गढ़ैमे तँ पत्नीए संग रहली, तँए किए ने आगूओक जिनगीक विचार हुनकोसँ पुछि लिऐन। अनेरे केतौ जे हेरा-भेथिया जाइ। तखन तँ अपनो जान थालमे फँसल हाथी जकाँ भऽ जाएत, तैपर सँ जे जँ नढ़िया जकाँ माथपर चढ़ि कपार खोधि-खोधि खाए लगती तखन तँ अनेरे ढोंढ़क फेरमे पड़ि जाएब। तइसँ नीक 'संग मिलि करी काज हारने-जीतने कोनो ने लाज।'

'संग मिलि करी काज' विचारमे ऐबते रामकृष्ण बाबूक मन थोड़ेक हरियेलैन। माने, मनक रंग बदललैन। हरियाएले पत्नीकेँ कहलखिन- "अहूँ देखै छी आ अपनो बुझै छी जे महाविद्यालय अकाजू बना जिनगीकेँ अदहेपर सँ तोड़ि पेंशनक जिनगी बना देलक। नीक-नीकुत पौष्टिक खेनाइ खाएब तखने किछ दिन औरो देखब, तइमे बेसी खरचो हएत। मुदा से जाबी तँ मुँहमे लगिए गेल। तैपर सँ बुढ़ भेने देहो ने ठेहियाएत, जइसँ रंग-रंगक रोगो-वियाधि पकड़त। तहूमे तेहेन जुग आबि गेल जे 'संगेमे वैद मियाँ मरता है।' बला कहबी भऽ गेल अछि। रोगक जेते इलाज अगुआएल तेते महगो भऽ गेल। अहाँ तँ सभ दिन घर चलेलौं मुदा अपने तँ कहियो घर-परिवार बुझि नइ पेलौं, तँए अहींक हाथमे अपन जिनगीक डोरि

थम्हा रहल छी...।”

तीर्थयात्रा, धर्मयात्रा आकि कर्मयात्रासँ घुमल थाकल-ठेहियाएल यात्रीकेँ जहिना परिवारक सिनेह भेटै छै, वएह सिनेहिल विचार सुभद्राक मनमे जगि गेलैन। जगि गेलैन अपन माथक लाल सिनुर। जाधैर पति जीबै छैथ ताबैए धरि ने सती-पति कहबै छी मुदा जखने पति छीना जेता तखने ने समाजो विधवा मानि अपन यात्राकेँ अशुभ बुझए लगत। तखन केना? तखन तँ काटल गाछ तरक जिनगी बनिये जाएत। ऐ काटल गाछक निच्चाँ ठाढ़ भऽ केना चलब? सुभद्रा असोथकित भऽ गेली। थोड़े कालक पछाइत कूह फेरैत बजली-

“अपन मन की कहैए?”

‘अपन मन’ सुनि रामकृष्ण बाबूक मन अमैर कऽ उमैर गेलैन। पहाड़सँ उतैर उमरैत धारक हिलकोर जकाँ मन घुमए लगलैन। जहिना धारक बीच धारा केतौ-केतौ गोल-गोल घुमि क्षीण गतिक वेगकेँ चारू कात छिड़ियबैत चलैए तहिना रामकृष्ण बाबूक मनक छिड़ियाएल क्षीण धार, जे आगूक गतिसँ फेकाइत फीका हुअ लगलैन। गरमान्त मने रामकृष्ण बाबू बजला-

“अखन धरिक जे जिनगी रहल ओ एकबट कहियौ आकि एकचलिया, तेकर अभ्यस्त भऽ गेल छी। मुदा जिनगी तँ बहु-चलिया छी, तखने नव सिरासँ कोनो बाटक घाट बना पाएब। से तँ आब कठिन अछिए। एहेन..?”

पतिक बात सुनि सुभद्रा सहजे-सहजे सहमए लगली। सहमए ई लगली जे हिनके कमाइपर तँ अपनो ठाढ़ छी, जइ भरे ठाढ़ छी सएह खुट्टा जँ हिल-डोल करए लगत तखन अपनो तँ ओहिना हिल-डोलमे हिलैत-डोलैत रहब..!

मुदा सुभद्राक मन लगले बदैल गेलैन। बदैल ई गेलैन जे किछु छैथ तैयो तँ ओ पुरुखे छैथ, तहूमे ओहन पुरुख जे पति सेहो छैथ। जाबे कोनो गाछमे पतिया नइ औत ताबे बतियाक आशा व्यर्थ! कमाइ टुटि गेलैन, माने दरमाहा पेंशन बनि अधिया गेलैन, मुदा अखनो जेते भेटतैन तइसँ बहुत कम-कम कमेनिहारकेँ हमरोसँ नमहर परिवारक गाड़ी घीचए पड़ै छैन, तैठाम जँ अपनाकेँ निरवल-दुरवल बुझै छी, तँ ई मनक बेकार विकार भेल। अनेरे जे मनमे अबैए जे ई बीमारी, उ बीमारी हएत, तइमे बेसी खरचा हएत। तेकर कोन गारंटी छै जे हेबे करत...।

ओह! ई अनेरे मन तोड़ब भेल। बुढ़ाड़ीमे नीक-निकुत (पोष्टिक) भोजन, ओ तँ भोज्य वस्तुमे पएल जाइ छै, तइले बेसी महग वस्तु कीनबक कोन जरूरी अछि। ई तँ पाइबलाक फैशन छी। महग आकि सस्ता, ओ तँ बनिया-बेकालक किरदानी छी, जे समाजमे काल बनि ठाढ़ अछि। जइ वस्तुक कमी रहल ओकर दाम बढ़ा देत आ जे बेसी रहत ओकर दाम घटा देत। जइसँ लेनिहारक जेबी पकड़ाएत। मुदा तइसँ वस्तुक पौष्टिक गुणकेँ कोन मतलब छइ। तहूमे हम सभ तँ ओइ इलाकामे रहै छी जइ इलाकामे अनरनेबाकेँ कौआ नइ पुछैए। आमे केते खाएत, तहूमे खेरा कौआ उपैटे गेल जे फलखौका छल, आब तँ कार-कौआक बास बनि गेल अछि, ओ तँ सहजे फलक संग ओकर गाछक दिवारकेँ सेहो तेना कऽ नोचि-नोचि खाइए जे ओइ गाछे केँ सिर खुनि सुखा दइए।

सोच-विचारमे पड़ल सुभद्राक मनमे जहिना सूर्यक इजोत बढ़ैत अन्हारमे प्रवेश करैत शाम कहबए लगैए तहिना पति-पत्नीक बीचक संध्यावेला जकाँ भेलैन। भेलैन ई जे अपनोमे एते सामर्थ्य तँ ऐछे जे जहिना घरक काज माने भानस-भातसँ लऽ कऽ सभ काज सभ दिनसँ करैत एलौं, अखनो करै छी आ आगूओ करब, सएह ने।

तइले पतिक बेथाएल मनकेँ आरो बेथित किए करबैन। बजली-

"अहाँ पुरुखक खेल खेलै छी।"

पत्नीक बात सुनि रामकृष्ण बाबूक मनमे काँटक बोझ भीष्म पितामह जकाँ नहि रामक पुष्पवाणक तुणीर जकाँ खसलैन। रामकृष्ण बाबू खाली शिक्षक पदसँ सेवा निवृत्त शिक्षकेटा नै, एक साहित्य सृजक प्रेमी सेहो छैथ। जे समाजक आत्माक निर्माता सेहो होइ छैथ। जखन समाजक आत्म-निर्माता स्वयं व्यक्ति-निर्माता नइ बनि सकल तँ ओ सृजनकर्ता केना भेल। व्यक्तिक समूह समाज आ समाजक आत्माकेँ प्राण-प्रतिष्ठित करैबला सृजनकर्ता...।

रामकृष्ण बाबूक मनमे एकाएक जेना साइयो-हजारो पुष्प-वाण आगूमे छिड़िया गेलैन। नजैर पड़लैन पत्नीक ओइ शब्दपर जे पुरुखक खेल कहने छेली। पुरुखक खेल यएह ने भेल जे पुरुख खेलए। मुदा पत्नीक मुँहक बात छी। आनक रहैत तँ आनो नजैरसँ देखल-मानल जा सकैत मुदा..।

फेर होनि जे बजन्ता तँ केतौ अपन छाहोँ ने देखए देलैन। अहाँ पुरुखक खेल, अहाँक माने पुरुखक समूह सेहो भेल, तैठाम नारीक नारी केतौ कहाँ देखै छी..?

मन घुमलैन, पुरुखक खेल! दुनियाँ तँ पुरुख-नारीक झुलैत खेल छी किने। मुदा ई तँ कुम्हारक चाक जकाँ एक्केटा खुट्टीमे ठाढ़ अछि..!

तरे-तर रामकृष्ण बाबूक मन तुरैछ कऽ मुरैछ गेलैन। विचारक बोन अन्हरा गेलैन। जइसँ बोलती बन्न रहैन। मुदा पत्नी तँ ऐगला उत्तर पबैले आँखि उठा बेर-बेर देखबे करैन। तगेदा होइत देखैथ।

कनीए कालक पछाइत रामकृष्ण बाबूक ठमकल मन ठनकलैन। ठनैकते उठलैन, पुरुखक खेल। पुरुख तँ लिंगक हिसाबे

बँटाएल अछि, मनुक्खक हिसाबे तँ नइ बँटाएल अछि। पुरुखपना तँ से नइ छी। ओ तँ मरदो आ मौगियोमे अछि। केतौ कोनो पुरुखमे बेसी अछि तँ केतौ मौगीमे। जइ पुरुखमे कम रहै छै ओ मौगपना रस्ता पकैड़ चलैए आ जइ मौगीमे बेसी रहै छै ओ मरदोसँ बेसी मरदगानी गबैए...।

रामकृष्ण बाबू जेते थाह लिअ चाहैथ तेते अगममे चलि जाइ छला। अपने बेथे बेथित भेल जा रहल छला आकि बिच्चेमे सुभद्रा टोकलकैन-

“किए मन खसल अछि?”

अपनाकेँ सम्हारैत रामकृष्ण बाबू कहलखिन-

“मन खसल कहाँ अछि, विचारमे कनी झुकाउ आबि गेल अछि।”

एक्केबेर ऐगला-पैछला जिनगीकेँ सानैत-बाटैत सुभद्रा बजली-

“अनेरे सोग-पीड़ा मनमे रखने छी। जेते दिन अनकर तील खेलिऐ तेते दिन बोहि देलिऐ। हूबा करू होशमे आउ। बिनु किछु केने अदहा दरमाहा देत। अपन दिन-राति तँ आजाद भऽ जाएत। कनियोँ-कनियोँ लुर-खुड़ाएब तैयो बहुत हएत।”

“हँ! जेकर खेलिऐ तेकरा-ले केलिऐ।”

जहिना साल भरिक पछाइत गाड़ीक ड्राइवर अपन ऐगला जिनगी-ले ड्राइवरी लाइसेंसक नवीकरण करबैए आ करेला पछाइत जहिना मनमे खुशी होइ छै तहिना सुभद्रोकेँ भेलैन। मुख-मण्डल चमैक उठलैन। मुदा रामकृष्ण बाबूक चेहराक रोहानी जेना उतरए लगलैन। बजैकाल तँ बाजि गेला मुदा पछाइत सुमारक भेलैन। सुमारक ई भेलैन जे जेकर खेलिऐ तेकरा-ले केलिऐ। मुदा आब तँ से

नइ हएत। आब तँ अपना भरे चलए पड़त। जाबे कार्यरत छेलौं, काजमे लागल रहै छेलौं, समैयक गतिक पहियाक संग घुमैत रहै छेलौं मुदा आब तँ से नइ हएत। एक घरक खसान हएत आ दोसर घरक उठान। तइमे टटघरसँ ईंटाक होइमे जड़ि-मूल घरकेँ तोड़ए पड़ै छइ। मुदा किछु पुरान घरक आत्मा तँ नवका घर बसिते अछि। आन वस्तु रहौ कि नइ मुदा घराड़ी तँ रहिते अछि...।

रामकृष्ण बाबूक भक् जेना खुजलैन। खुजलैन ई जे अखन धरिक जिनगी पठन-पाठनक रहल, तँए मनमे यहए ने लिलसा रहत जे मरैकाल तक अहिना काज लगल रहए...।

मुदा लगले भकमोड़पर आबि रामकृष्ण बाबूकेँ फेर भक् लगि गेलैन। लगि ई गेलैन जे सभ दिन पठन-पाठन करैत एलौं, से आब केना हएत! पठनक जोगार तँ कैयो लेब, मुदा पाठन केना करब? अखन धरि मन मारि विद्यालयक पठन-पाठनमे लगल रहलौं जे से ने रेडियो स्टेशनसँ जान-पहचान भेल आ ने गामेक समाजक कोनो साहित्यिक संस्थासँ। तखन पाठन केतए करब? कौलेजक विद्यार्थियो तँ छीनाइए गेल!

भकमोड़पर सँ रामकृष्ण बाबूक मन फेर घुमि कऽ पहिलुके रस्ता धेने पाछूए-मुहेँ आगू बढ़लैन। पाठनेटा किए, पठनो तँ बदलबे करत। एते दिन विद्यार्थी-ले बेसी पठन करै छेलौं अपना-ले कम, मुदा आब तँ से नइ हएत। काजो घटल। विद्यार्थीक समय विद्यार्थी बनि अपन अध्ययन करब। अपन अध्ययन मनमे उठिते पुस्तकालय मोन पड़लैन। हाइ रे बा, किताबो छीना गेल! गाममे पुस्तकालय कहाँ अछि! केतएसँ किताब आनब? जखन किताबे नइ तखन पढ़ब की?

अपन किताब दिस नजैर गेलैन। पठन-पाठनक जिनगी रहितो अपन पुस्तकालय कहाँ अछि? मन आगू बढ़ि गेलैन। आगू बढ़िते

पाछूसँ धकियबैत दोसर मन कहलकैन। अपनो तँ सृजन शक्ति अछिए। जिनगी भरि तँ पढ़बे-पढ़ेबे केलौं आ घरसँ बाहर धरिक दुनियोँ देखिते आबि रहल छी आ देखतो छी। तखन किए किताबक अभाव खटकत...। मन मानि गेलैन जे अपन ऐगला शेष जिनगी पठन-पाठनमे बिताएब। मन थीर होइत-होइत सृजनशीलतापर आबि अँटकलैन। अँटैकते उठलैन, पोथी छपाएब केना? जँ लिखबे (साहित्य सृजन) करब आ ओ छपि नहि पएत तखन तँ ओ घरमे सड़िए जाएत। तइसँ लाभ की भेटत। लिखब असान अछि, आइसँ नियमित जिनगी बना लिखै-पढ़ैक निसचित समय बनेला पछाइत ओ अनेरे जिनगीक नियमित क्रियासँ जुड़ि जाइए। आगूक कोनो स्पष्ट (सोझ) रस्ता नजैरमे एबे ने करैन। कोनो टेँढ़-टुढ़ तँ कोनो झँपाएल-तोपाएल तँ कोनो आगूएसँ कटल-खोंटल...।

आइक समयमे पोथी छपाएब असान भऽ गेल, तेकर दुनू कारण भेल तकनीकी विकास सेहो भेल आ आर्थिक विकास सेहो भेल। मुदा से भेल अछि पैछला पाँच बर्खक बीच। तइसँ पहिने पोथी छपाएब भारी भीड़ छल। जेकर चलैत साइए नहि हजारोमे मिथिलांचलक धरोहर हेरा गेल अछि...।

रामकृष्ण बाबू मने-मन विचारए लगला- अपन दरमाहा टुटि गेल, बेटा सभ कहियो ई नइ पुछलक जे बाबू कोन किताब लेब। धिया-पुता जकाँ बिस्कुटक डिब्बा हाथमे धड़बैत रहल।

बिस्कुटक संग धिया-पुतापर नजैर पहुँचते रामकृष्ण बाबूकेँ मोन पड़लैन जेठ बेटाक कहल बात- “बाबू, हम तँ अंगरेजी माध्यमसँ पढ़ने छी, मुदा गीता पढ़ैक मन सदिछन होइए। संस्कृतमे लिखल छै, ओ मैथिलीमे रचि दियौ, जे सभकेँ पढ़ैमे असानो हएत आ सभ पढ़बो करत।”

मनमे ऐबते रामकृष्ण बाबू सोचलैन। अखन ओ बैंकक मैनेजर

भऽ गेल छैथ, अपन बेटो-बेटीक भार उतरिये गेल छैन, जँ ओ आर्थिक मदत करता तँ पोथी छपाएब बड़ भारी समस्या नहियेँ अछि...।

मुदा लगले रामकृष्ण बाबूक मनमे भेलैन जे आइसँ दस बरख पहिने गीताक चर्च बेटा केने छला। गीताक मांग केने छला। मुदा ओ हमरा बुते पुरौल हएत। ओहिना पाँती पढ़ि भाषा बदैल देबै, मुदा से अपन मन मानत?

गीताक नृत्य-कृत्य मनमे उठिते रामकृष्ण बाबू आत्म-भोरसँ विभोर हुअ लगला। खापैड़क धानक संग खापैड़क तीसी जकाँ मन चनचना लगलैन। कृष्णक गोपीक संगक रासलीला हारल-मारल ब्रजवालाक संग रचब-बसब। मुदा अपन जिनगी की रहल? अपना कलममे तँ केकरो ओतबे ने दम रहै छै जेते ओ दमगर रहल। सभ दिन घरसँ बाहर तक गुरुआइ केलौं, सेवकाय कहियो केलौं नै, तखन बेटाक मनोरथ हमरा बुते केना पुराएल हएत..?

रामकृष्ण बाबूक मन ठमैक गेलैन। किछु समय धरि ठमकला पछाइत फेर मनमे भेलैन जे किए ने बेटोक परीक्षा लाइए ली। किए ने हमहीं मोन पाड़ैत कहिऐन जे ‘बौआ, आब कौलेजसँ निचेन भेलौं, जँ अहाँ पोथी-छपबैक भार उठा ली तँ दू-तीनटा संग्रह-जोकर लिखलो राखल अछि आ अहूँ जे गीताक चर्च केने रही, तहूमे हाथ लगा देब। अपने तँ किछु-ने-किछु कहबे करता, तइसँ अपन ऐगला काजक रूप-रेखा बना लेब...।

ऐगला काजक रूप-रेखा रामकृष्ण बाबूक मनमे ऐबते फेर गीते घुमि एलैन। गीतासँ केकरो डेरेबा नइ चाही। ओ जिनगी दइए। जिनगीकेँ जन्म-जन्मान्तर धरिक रस्ता देखबैए।

रामकृष्ण बाबूक मन अह्लादित भऽ गेलैन। अह्लादित होइते

मन उनैट बेटाक पढ़ाइ दिस बढ़लैन। बेटा अंगरेजी-माध्यमसँ पढ़लक। मुदा गीता तँ संस्कृतमे लिखल गेल अछि। दुनूक दू भाषा छी। दुनूक लिपि, शब्द-विन्यास, उच्चारण सभ किछु अपन-अपन छइ। तँए किछु भारी तँ अछिए। मुदा मैथिली तँ अपन घरैया भाषा छी, जे बिनु सीखनौं-पढ़नौं लोक सीख लइए। तँए जँ मैथिलीमे गीताक अनुवाद करैक मांग बेटा केलक तँ ओ उचित केलक...।

...मुदा काजो तँ काज छी, गीता सन महत-माइन विषयपर रस्ते-पेरे शब्दक तुकवन्दी गढ़लासँ थोड़े हएत। ओ हिसाब जोड़ैले तँ कैलकुलेटर मशीन संगमे राखए पड़त। नइ तँ ई थोड़े बुझि पाएब जे लत्तियो-फत्ती आकि झाड़ो-झुड़मे अमृत-फल फड़ैए। तैठाम सोझे वृक्षक फल कहि देने नइ ने हएत।

रामकृष्ण बाबूक वौआएल मन थाकल बटोही जकाँ थकथका गेलैन। थकथका ई गेलैन जे अनेरे मनक संग अपनो वौआइ छी। अनेरे पानि महक माछकेँ नअ-नअ कुटिया बँटै छी। जहिया जे हेतै से बुझल जेतइ। पहिने राम-राम करैत राम-धामक काजमे हाथ लगा दिऐ। थकथकाएल मनमे ईहो उठलैन जे सतेकेँ ने सत्-सत् कृष्ण गीतामे गीत गौने छथिन- ‘करम करैत चलू, फलक आशमे बैसू नइ।’ ठीके ने कहने छथिन। आब ईहो वएह कहितथिन जे आम रोपब तँ आम भेटत आ बगुर रोपब तँ काँट। एते कहैले हुनका छुट्टी छेलैन। हँसेरा-हँसेरीक बीचमे ने ठाढ़ रहैथ...।

रामकृष्ण बाबूक मन फेर कनी पाछूए-मुहेँ घुसैक गेलैन। जहिना महाभारतक मैदानमे वीरक तीरसँ वीरक रथ कनी पाछू घुसैक जाइए। मनमे खुशी उपकलैन। बिहुसैत पत्नीकेँ कहलखिन-

“ऐगला जिनगीक बोही-खतियानक नक्शा मनमे बनि गेल...।”

आगूक बात रामकृष्ण बाबूक पेटेमे रहैन कि बिच्चेमे सुभद्रा टोकि देलकैन-

“की बोही-खतियान?”

“सएह ने कहै छी, सुनू...।”

‘सुनू’ कहि रामकृष्ण बाबू सुभद्राक आँखि-मे-आँखि मिला बजला-

“जहिना अहाँ गृहिणी बनि गृहपत्नी सभ दिन रहलौं तहिना आगूओक भार भेल।”

‘भार’ सुनि सुभद्रा बजली-

“आ अपन भार की भेल?”

बिहुसैत रामकृष्ण बाबू बजला-

“कुशी अमावस्या दिनक उखारल कुशक भार। राम-धान केना अपन जिनगीमे जुटि जाइत अछि।”



शब्द संख्या: 2780, तिथि: 01 दिसम्बर 2015

नअ ‘क’

धीरेन्द्रक गाम कृष्णपुर आ रामकृष्ण बाबूक गाम रामपुर, एकबधू गाम। एकबधूक माने दुनू गामक बीच कोनो आन गाम नै, खाली जोतसीम जमीनक बाध अछि। पच्छिमसँ रामपुर आ पूबसँ कृष्णपुर गाम अछि। ओना, दुनू गामक बीच पड़ोसी-पनक सम्बन्ध-सूत्र तँ ऐछे संगे आनो-आन जेते सूत्र पहिनेसँ छल सम्बन्धक तइमे कृष्णपुरक सांस्कृतिक कार्यक्रमक जोगदान सेहो अपन महत रखैए। ओना, दुनू गामक बीचक बाधेमे दुनू गामक घसवाहिनी आ गाए-महींस चरौनिहारसँ लऽ कऽ खेतमे काज करैबला, हर जोतैबला, धान-गहुम कटैबलाक बीच सेहो चिन्हा-परिचए अपना-अपना ढंगे रहल अछि, तँए बेकतीगत रूपमे सेहो सम्बन्ध केतेको बर्खसँ अछिए। दुनू उपरारि गाम, धार-धूरसँ भेँट नहि, तँए गामक चासो-बास पुरान अछिए।

सांस्कृतिक कार्यक्रमक पछाइत जहिना धीरेन्द्रक जिज्ञासा रामकृष्ण बाबूक प्रति जगलैन, तहिना रामकृष्णो बाबूक जिज्ञासा धीरेन्द्रक प्रति जगलैन। जिज्ञासाक प्रति मनमे जिनका जे होनि से तँ ओ जानैथ मुदा कुशल-छेमक सम्बन्ध दुनूक बीच बढ़ल। जेकरा बढ़बैमे कृष्णपुरक सिनुरियाक सेहो नीक जोगदान रहल। सिनुरियाक अपन माए-बापक देल नाओं ‘श्याम सुन्दर’ छिऐन मुदा लोक अपन जिनगीमे अपनो नाओं तँ कमाइए लइए। सिनुरिया बहुत कर्मठ वेपारी, संगे वेपारीक नीक लूरि सेहो छैन्हे। आइ पैंतीस बर्खसँ

हरदी, मेरचाइ, धनियाँ, लसुन इत्यादिक वेपार अपन चरिकोसी गाममे कऽ रहल छैथ। चारि बजे भोरे साइकिल उठा 'हरदी, मिरचाइ, धनियाँ, लसुन' करैत गामे-गाम पहुँच टहैल-टहैल बेचै छैथ। रस्तेपर सँ केतौ दादी, केतौ काकी, केतौ भौजी करैत अँगने-अँगने खोज-खबैर लैत बेचैत-बिकनैत बारह बजे तक गाम आपस होइ छैथ। जेकरे माध्यमसँ रामकृष्ण बाबू आ धीरेन्द्रक बीच समाद-वारी होइत रहलैन, बेवहारिक सम्बन्ध बढ़ैत गेलैन।

सुति कऽ धीरेन्द्र उठले छला कि सिनुरिया आबि दरबज्जापर सँ बजला- "धीरेन्द्र बौआ छह हौ, हौ धीरेन्द्र बौआ?"

आँखि मीड़िते धीरेन्द्र घरसँ निकैल ओसारपर एला। सिनुरिया साइकिलेपर सँ कहलकैन-

"बौआ, रामकृष्ण बाबू हाल-चाल पुछै छला?"

एक तँ भिनसुरका मौसम तहूमे अखने ओछाइन धीरेन्द्र छोड़नहि छला तैपर शुभ-समाचार सुनि समदियाकेँ चाहो-पानक आग्रह नै करथिन सेहो केहेन हएत। मुदा सिनुरियाकेँ एते समय कहाँ जे चाह-पानक पाछू अपन कारोबार ढील करता। ओ तँ वेपारीक पतरानुकूल अपन पतरा बनौने छैथ। लेबाल बुझै छै जे भिनसुरका वोहैन वेपारीक नइ मारिऐ, तँए नगदी कारोबार बेसी छैन। मुदा अपन कारोबार आकि अपना हाथक रेखा तँ लोक अपने ने बनबैए। कलम घँसत तँ ओंगरी घँसाइत ठेला हेतै आ कोदारि चलौत तँ तरहत्थी घँसाइत ठेला हेतै, सएह ने...।

सिनुरिया घर-घरक लछमी-पात्र बनि समाजमे कारोबार करै छैथ। ओना, ओ अपन पतरा ई बनौने छैथ जे जँ पहिल गहिंकी एको पाइक वोहैन नहियोँ करै छैथ तैयो मुहूर्त शुभ भेल आ जँ करै छैथ तँ ओ घीबोसँ चिक्कन भेल। सभ दिना कारोबारीकेँ नगद-उधारसँ कोन

मतलब। मतलब तँ अछि बिकरी-बट्टासँ...।

अही चरि-कोसी गामक सेवा करैत ने सिनुरिया दूटा बेटाकेँ बी.ए. पास करा शिक्षको बनौलैन।

चाहक आग्रह करैत धीरेन्द्र सिनुरियाकेँ पुछलखिन-

“भैया, तूँ भोरे-भोर समाद कहलह आ चाहो नइ पीबह से केहेन हएत?”

ठाँहि-पठाँहि सिनुरिया कहलकैन-

“बौआ, कारोबार शुरू करैसँ पहिने अजमा कऽ तेना खा पीब लइ छी जे बीचमे काजक समय ने दुइर हुअए। एते फुरसत थोड़े अछि। सौंसे गामक जेते पाहि लगौने छी, तेते तँ घुमि-घुमि कऽ पुरबए पड़त किने। एक मोन समान अछि अहीमे ने पान साए रुपैयाक कमाइयो अछि।”

सिनुरियाक बात सुनि धीरेन्द्रक मनमे उठलैन- एहेन काजक लोक! पनरह हजारक महीनाक बाजार अपन कर्मसँ बनौने छैथ! समय ओना, लेब उचित नइ...।

कहलखिन-

“भैया, अपनो कनी लसुनक काज अछि। कनी मसस्लो-ले लेब आ थोड़े आब रोपबो करब किने।”

जहिना धीरेन्द्र अपन काज अगुऐबा-ले गहिंकी बनला तहिना सिनुरियो वेपारी। दलानक आगूमे साइकिल ठाढ़ करैत सिनुरिया बजला-

“कनियोँसँ पुछि लियौन जे आरो कोनो मसल्लाक खगता छैन?”

सिनुरियाक विचार धीरेन्द्रोकेँ नीक लगलैन। जहिना लूटमे

चरखा नफ्फा तहिना कनियाँक बहन्ने अपनो गप-सप्प करैक समय भेटबे केलैन...।

आँगन जा धीरेन्द्र पत्नीकेँ कहलखिन-

“मसल्लाक बरतन देखने आउ जे कथी सबहक खगता अछि।”

जखन दुनू गोरेक अपन-अपन काज आगू बढ़ल तखन एकठाम ठाढ़ दुनू गोरेक मनक विचार केना रूकल रहत। धीरेन्द्र बजला-

“भैया, केते दिनसँ रोजगार करै छह?”

सिनुरिया बजला-

“बौआ, कोनो कि दस्तावेज बना काज शुरू केने रही जे नीक जकाँ मन रहत। तखन तँ हाले-सालमे बिआह भेल रहए। साइकिल सोसराइरेमे देने रहए, गोर लगाइबला रुपैया सेहो रहबे करए। तहिया महरैलक हाट उखैर झंझारपुरमे आबि लागब शुरूहे भेल रहै, जबन्नो ताबे सस्ता रहै, ओही पूजीसँ अखन धरि परिवारकेँ हँसबैत-खेलबैत चलबैत एलौं हेन।”

धीरेन्द्र-

“की चलबैत एलह?”

सिनुरिया-

“पाँचटा बाल-बच्चाकेँ पोसि-पालि अपन-अपन ठौरपर पहुँचा देलिऐ, आब कि कोनो घरक चिन्ता-ले कारोबार करै छी।”

सिनुरियाक बात सुनि धीरेन्द्रकेँ अजगुत लगलैन। अजगुत ई लगलैन जे एते काजुल-कर्मठ लोक रहैत बजै छैथ- ‘कोनो चिन्ते ने...।’

तैसंग ईहो कहै छैथ- 'बालो-बच्चार्कें ठौरपर पहुँचा देलिऐ।' दोहरबैत धीरेन्द्र बजला-

"भैया, तेना ने तूँ हाँइ-हाँइ कऽ बाजि देलहक जे बुझबे ने केलौं।"

ओकीलकेँ जहिना जीरह करैकाल कोर्टमे आ डॉक्टरकेँ जहिना ऑपरेशन करैकाल थियेटरमे अपन आत्मशक्ति हँसैत रहै छै तहिना परिवारक सेवा कएल जिनगीक वृतान्त सुनबैत सिनुरियाक मनमे खुशी उपकलैन। अह्लादित होइत बजला-

"धीर बौआ, भगवान तीनटा बेटी आ दूटा बेटा देलैन। जइसँ आन परिवार जकाँ एकभग्गु परिवार नइ भेल।"

सिनुरियाक 'एकभग्गु परिवार' सुनि धीरेन्द्र फेर अकबका गेला। पुछलखिन-

"की एकभग्गु?"

धीरेन्द्रक प्रश्न सुनि सिनुरियाक मनमे जेना गुदगुदी लगलैन तहिना मुस्कियाइत बजला-

"बौआ, परिवारमे जँ बेटी नइ भेल तँ पत्नी रूसती, जे कन्यादान सन धर्मक काज हमरा कपारमे लिखले ने अछि। आ जँ बेटा नइ भेल तँ माइक कोन बात जे बापो कानत आ परिवारो कानत जे बाँसक बीटे उपैट गेल।"

सिनुरियाक जेहने नाओं तेहने सदिकाल सिनुरीए रंगमे मन रंगल प्रकृतो...।

धीरेन्द्र बिच्चेमे टोकलकैन-

"असलाहा गप ते छुटिए गेलह, भैया?"

बनियाँ जाति सिनुरिया, सम्हरैत कहलकैन- "बौआ, बात

पछुआ गेल एकर माने बिसैर नै गेलौं। पाँचो बेटा-बेटीक भार निमाहि लेलौं। तीनू बेटी सासूर बसैए आ दुनू बेटा बी.ए. केलाक पछाइत शिक्षा मित्रमे नोकरी करैए।"

तैपर धीरेन्द्र पुछलखिन-

"जखन बेटा सभ कमाइए लगला तखन आब अनेरे किए ऐ पुरना हड्डीकेँ आ पुरना साइकिलकेँ धुनै छहक?"

धीरेन्द्रक बात सुनि सिनुरिया विह्वल भऽ गेला-

"बौआ, इहे चरि-कोसी गाम हमर दुनियाँ छी। सभ दिन सेवा करैत अपन दुनियाँमे रमैत एलौं, छोड़ने नीक लागत?"

धीरेन्द्र- "किए ने नीक लगतह?"

सिनुरिया- "सभ दिन समाजकेँ भैया, काका, बाबा, दादी, काकी, भौजी आ बच्चा कहि सबहक नीक-बेजाए, सबहक जिनगीक क्रिया-कलाप देखैत-सुनैत एलौं, ओ छोड़ि दरबज्जा पकैड़ लेब तखन जिनगीमे रहबे की करत?"

बिच्चेमे सुजिता आबि बजली- "मिरचाइ आ हरदी नइ अछि।"

पैछला बातक बिसरजन करैत सिनुरिया बजला-

"बौआ, रबि दिनकेँ रामकृष्ण बाबू गामेपर रहै छैथ।"

"हँ से केते दिन गपो-सप्प भेल अछि। मुदा नोकरियाकेँ ने रबि दिन छुट्टीक भेल, मुदा किसानकेँ, जे खेती केनिहार अछि, माल-जाल पोसनिहार अछि तेकरा तइसँ कोन मतलब छइ। मुदा दुनूक बीच तँ सम्बन्धो स्थापित करैक अँटाबेशो तँ अहीमे करए पड़त। रबि दिन भेँट करबैन।"

पचास रुपैआक तीनू समान–मिरचाइ, हरदी आ लसुन–दैत

सिनुरिया साइकिल टनटनबैत आगू बढ़ि गेला।

अन्त आसीन। काल्हि कोजगरा हएत। बरसातक उतार मुदा खेती-बाड़ी शुरू नइ भेने धीरेन्द्रोक काज पतराएले। ओना, दुर्गापूजासँ करीब बीस दिन पहिनहि चारिटा मैथिली-कथा धीरेन्द्र सुधार करैले, माने मुँह-कान आ सिंग-सिंगहौटी बनबैले रामकृष्ण बाबूकेँ देने छेलैन। ओहो दुर्गापूजाक समय देने रहथिन। दुपहरियाक तीन बजे धीरेन्द्र रामकृष्ण बाबू ऐठाम पहुँचला।

रामकृष्ण बाबू पलंगपर बैसल चाह पीबैत रहैथ। धीरेन्द्रकेँ देखिते हाथक इशारासँ पलंगेपर बैसैले कहलखिन। आगूमे तीनटा डिक्शनरी आ कागज-कलमक संग डायरी सेहो रखल रहैन। भरिसक किछु लिखैक विचार केने छला। प्रणाम करैत धीरेन्द्र पलंगक निच्चाँमे ठाढ़ रहला। जातीय बन्धनक बीच जे समाज बनल अछि, ओइ हिसाबे रामकृष्ण बाबू आ धीरेन्द्रक बीच किछु दूरी बनियेँ गेल छैन। ओना, आइसँ पहिने जहिया कहियो धीरेन्द्र रामकृष्ण बाबू ऐठाम अबै-जाइ छल तहिया ओसारक कुरसीपर बैस दुनू गोरे गप-सप्प करै छला, मुदा आइ पलंग छी।..धीरेन्द्रकेँ पलंगपर बैसैत संकोच होइ छेलैन। संकोचक कारण समाजमे जातीय बेवहार रहइ। ओना, कुरसी भेने सेठ-साहुकारक गद्दी आ मड़-महाजनक आसनमे किछु बदलाव एबे कएल अछि, मुदा मोथा खढ़क सीरक पन्ना जकाँ केतौ-केतौ बिच्चियो तँ नुकाएले अछि, जे समय पबिते गाछ बनि ठाढ़ भऽ जाइए।

पलंगक निच्चाँमे ठाढ़ धीरेन्द्रकेँ देखि रामकृष्ण बाबू फेर कहलखिन-

“ऐपर बैसैमे धखाइ किए छी, ई तँ सुतै-बैसैक वस्तुए छी।”

ओना, रामकृष्ण बाबूक मनमे जातीय आसनक पूर्व कथा

ओहिना लहलहाइत रहैन मुदा समाजोमे समाज बनबो करैए आ टुटबो करैए, सेहो तँ बुझिए रहला अछि। तैबीच पत्नी चाह नेने पहुँच बजली-

"बैस कऽ पीबू।"

कहि चाहक कप पलंगपर रखि देलखिन। दुनू गोरे चाह पीब साहित्यपर गप-सप्प शुरू केलैन। हथिया नक्षत्र बितने जाड़क ज्वर सेहो तँ उतरिये रहल अछि मुदा रौदक गरमी अखनो ओहिना प्रखर अछि। घरक पलंग तँए दुनूक शरबती घोल जकाँ मौसम बनले छल...।

धीरेन्द्र कहलकैन-

"सर, अपनेक जे संग्रह अछि, कथा संग्रह, ओ सोझ-सोझ ढंगसँ लिखल बहुत निम्मन कथा संग्रह अछि। मुदा..?"

रामकृष्ण बाबूक मन 'निम्मन कथा' सुनि हर्खसँ हलैस गेलैन, मुदा ठनका जकाँ मनमे ईहो ठनकबे केलैन जे 'मुदा' कहि धीरेन्द्र चुप किए भऽ गेल। धीरेन्द्रकेँ चरियबैत रामकृष्ण बाबू बजला-

"एना अदहे किए बजलौं। खोलि कऽ बाजू, सृजन छी किने? झँपलासँ क्षति हएत।"

रामकृष्ण बाबूक विचारक सह पबैत धीरेन्द्र कहलकैन-

"सर, अपने साहित्यक विद्वान विशेषज्ञ रचनाकार छिऐ, जे शैली आ जइ विषयकेँ कथा बनौलिऐ, ओ तँ ओहनो रचनाकार रचि सकै छैथ, जिनका अपने सन विशेषज्ञता नइ छैन।"

धीरेन्द्रक विचारकेँ मोड़ैत रामकृष्ण बाबू बजला-

"देखियौ धीरेन्द्र, रचना मौलिक हेबा चाही। जहिना दुनियाँ अछि, जे सभ दिनसँ अछि आ सभ दिन रहत। अहीमे सभ दिन

घटनो घटैत रहैए आ घटबो करैत रहत। मुदा जे मौलिक अछि ओ मौलिक ऐछो आ रहबो करत।”

रामकृष्ण बाबूक विचारकेँ धीरेन्द्र मने-मन विचारए लगला जे थोड़ेके शब्दमे बहुत बात बाजि गेला। मुदा सभ शब्दक एक लड़ी बनत तखने ने विचारक झड़ी झड़त। तेकरा जोड़ै-गुणैमे धीरेन्द्रक मन ठमैक गेलैन। ओना, धीरेन्द्रक देल चारू कथा पढ़ि कऽ रामकृष्ण बाबूकेँ झलैक गेल छेलैन जे अपन संग्रहक प्रभाव धीरेन्द्रपर ओते नइ छोड़लक जेते ब्रज किशोर वर्मा ‘मणिपद्म’, प्रभास कुमार चौधरी, रमानन्द रेणु, राजकमल, प्रेमचन्द, फणिश्वर नाथ रेणु, भीष्म सहनी, राजेन्द्र यादव, राहुल संकृत्यायन इत्यादिक छाप पड़ल छइ। अपनाकेँ सम्हारैत रामकृष्ण बाबू बजला-

“मणिपद्म तँ मिथिला रत्न छैथ, मुदा..?”

जिज्ञासा करैत धीरेन्द्र पुछलकैन- “मुदा की?”

मणिपद्मजीक प्रति रामकृष्ण बाबूकेँ असीम श्रद्धा छैन, श्रद्धावान पुरुखक श्रद्धावान-कृत्यक एको चुटकी सिमटी-बाउल भवन निर्माणमे श्रद्धावत केने तँ चानकेँ आरो चारि चान बनबैए मुदा से...।

अपनाकेँ सम्हारैत रामकृष्ण बाबू बजला- “मणिपद्मजी जिनगीक एकभग्गु रचैता छला।”

रामकृष्ण बाबूक बात सुनि धीरेन्द्रक उत्कण्ठित मन चहेलैन-

“से की?”

हृदैकेँ हियासैत रामकृष्ण बाबू मणिपद्मजी आ प्रभास कुमार चौधरीपर नजैर फेकलैन। फेकते मनमे बरसा कालक पानिक बुलबुला जकाँ कखनो नजैर मणिपद्मपर पहुँचैन तँ कखनो प्रभासजीपर। मुदा ई तँइए ने कऽ पबै छला जे मणिपद्मजीकेँ मुँह

बनाबी आकि प्रयासजीकेँ। माने ई जे मणिपद्मजी दिससँ बात चाली आकि प्रभाषजी दिससँ। धीरेन्द्र हिया-हिया रामकृष्ण बाबूपर नजैर फेकैथ मुदा मन बजैसँ ई कहि रोकि दैन जे भरिसक कोनो गम्भीर विचारक ओझराएल ओझरीकेँ सोझरा रहला अछि...।

हँ-निहँस करैत रामकृष्ण बाबू बजला-

"मणिपद्मजी एकभग्गु रचनाकार छला जखन कि प्रभासजी से नइ छला।"

तेहेन गोल-मटोल विचार रामकृष्ण बाबू धीरेन्द्रक आगूमे रखलैन जे धीरेन्द्र अकबका गेला। ई की कहि देलैन? मुदा लगले मन गवाही दैत धीरेन्द्रकेँ चरियौलक। चरियाइते धीरेन्द्र बजला-

"कनी सोझरा कऽ दुनू गोरेक चर्च करियौ?"

धीरेन्द्रक बात जेना रामकृष्ण बाबूकेँ नीक लगलैन। 'सोझरा कऽ कहियौ'क मतलब धीरेन्द्रक रहैन भाषाक स्तरपर चर्च।

रामकृष्ण बाबू बजला-

"मणिपद्मजी केँ जिनगीक तीन चौथाइ आर्थिक भार माने खेनाइ, पीनाइक संग आरो सभ खर्च-बर्च सभ दिन हुनकर पिता जुमबैत रहलैन। मुदा अपना जिनगीक अमलदारीमे अपन केते रचना प्रकाशित करा, केते लोकक बीच पहुँचला?"

बजैत-बजैत रामकृष्ण बाबू गम्भीर भऽ गेला। जेना अपन जिनगी अपना सोझमे नाचए लगलैन। नाचए ई लगलैन जे अपनो तँ दू संग्रह-जोकर कथा, एक संग्रह-जोकर कविता लिख कऽ राखल अछि। जखन कि मोट दरमाहाक नोकरी रहल! विचारकेँ आगू नइ बढ़ा बातकेँ मोड़ैत बजला-

"धीरेन्द्र, रचना आ रचनाकार दुनू दू धुरी छी। ऐ धुरीक बीच

अनेको दशा-दिशा अछि। मुदा जँ रचनाकार स्वयं रचित भऽ किछु रचैथ आ तहूसँ कनी आगू बढ़ि जँ शब्दक संग रचैथ तँ दुनूमे किछु-ने-किछु कमी एबे करत...।"

धीरेन्द्र-

"सर, नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं?"

रामकृष्ण बाबू- "सत्य ओतइ अकाट् अछि जेतए शब्द नइ पहुँच पबैए। मुदा रचना-ले तँ शब्दे संगी हएत। नइ तँ एक-दोसराक बीच विचार बढ़त केना...।"

किरिण डुबि गेल। मुदा अन्हार नइ पसरल, कनी-मनी जाड़क हल्फी सेहो हफुअए लगल...।

रामकृष्ण बाबूकेँ धीरेन्द्र कहलकैन- "सर, औझुका जे गप-सप्प भेल ओ अविस्मरणीय रहत। समय भेटलापर फेर दोसर दिन...।"

धीरेन्द्र उठि कऽ ठाढ़ भेला। ओना, रामकृष्ण बाबू एकबेर आरो चाह पीबैले कहलखिन मुदा चाहकेँ टारैत धीरेन्द्र कहलकैन-

"सर, चाहक पाछू पड़ने अन्हारमे पड़ि जाएब।"

रामपुरक सीमान टैपते धीरेन्द्रक मनमे उठलैन। करीब दस बर्खसँ रामकृष्ण बाबूसँ सम्बन्ध बनल अछि, आवा-जाही अछि। मुदा सम्बन्धमे जे प्रगाढ़ता एबा चाही से कहाँ आबि रहल अछि...। मन ठमकलैन। ठमकल ई जे सम्बन्धक प्रगाढ़ताक जे दिशा अछि तइमे कमी भऽ रहल अछि तँए नै प्रगाढ़ता आबि रहल अछि। की कमी? ओना, अखन तक कृष्णपुरक कार्यक्रमक पछाइत तीनटा आरो कार्यक्रममे दुनू गोरे संग छेलौं। मुदा आवा-जाहीमे एकभग्गुपन तँ अछिए। हमरा हिसाबे रामकृष्ण बाबूकेँ सवाड़ियोक सुविधा छैन्हे। ओना, जे दूरी दुनू गोरेक गामक आकि घरक अछि, तइले सवारीक

खगतो ने छै, मुदा किछु अन्दरूणी विचारोक सम्भावना तँ ऐछे...।

सम्बन्धमे प्रगाढ़ता अनैले तँ सम्बन्धिक बीच दुनू दिससँ आवा-जाहीक जरूरत होइए। से जखन हएत तखने ने सम्बन्धमे प्रगाढ़ता आएत। ओना, रामकृष्ण बाबू कौलेजमे कार्यरत छैथ, तँए समैयोक अभाव तँ छैन्हे। मुदा ई तँ गाम-घरक बात छी।



शब्द संख्या: 2091, तिथि: 06 दिसम्बर 2015

नअ 'ख'

सेवा निवृत्तिक तीन सालक पछाइत रामकृष्ण बाबू आ धीरेन्द्रक भेँट-घाँट भेल। सेहो संयोगसँ। नवान पाबैनक चीज-बौस कीनए रामकृष्ण बाबू दुनू परानी झंझारपुर हाट आएल छला। आ गहुमक बीआ-ले धीरेन्द्रो हाटेपर आएल। एकटा तरकारीक दोकानपर दुनू परानी रामकृष्ण बाबू सागो आ सजमैनो कीनैत रहैथ। किछु फरिक्केसँ धीरेन्द्र दुनू परानीकेँ देखि कातमे ठाढ़ भेल रहैथ। ठाढ़ होइक कारण रहैन जे भरिगर हाट अछि जँ कहीं अपने दोसर दिस जाएब आ ओहो तेसर दिस चलि जाथि तखन तँ भेँट हएब कठिन भऽ जाएत। तँए सोझहामे रहने एते तँ हेबे करत जे तरकारी लऽ कऽ जखन विदा हेता, तखन टोकबैन।

झोरामे साग आ सजमैन सैंत हाथमे झोरा नेने पाछू-पाछू रामकृष्ण बाबू आ आगू-आगू सुभद्रा विदा भेली।

साग सजमैन देखि धीरेन्द्रक मनमे उठलैन जे भरिसक सेवा निवृत्त ने तँ विषेलैन अछि। एक तँ आब दुनू परानीक ओहन उमेर नइ रहलैन जे हाट-बाजार करैथ, कहब जे टहलब-बुलब आकि काजे छोड़ि देब? नहि। जैठाम भीड़-भड़क्का बीचक काज होइ तेकरा छोड़ि, एकान्त दिस काज करब। मुदा तइसँ–माने काज करब नइ करबसँ–धीरेन्द्रक मन आगू बढ़ि साग-सजमैनपर पहुँच गेल रहैन। कुल-खुट भलेँ दुनूक जेते नीक किए ने रहल हुअए आकि अखनो ओ गुण जीबित होइ मुदा अखुनका बाजारक तँ सागे-

सजमैन ने भेल। भरिसक रामकृष्ण बाबूकेँ गुजर-बातमे किछु कमी एलैन अछि...। ओना, धीरेन्द्रकेँ बुझल नइ जे काल्हि नवान पाबैन छी। तेकरे ओरियानमे दुनू बेकती लागल छैथ...।

दोकानपर सँ विदा होइते धीरेन्द्र रामकृष्ण बाबूकेँ टोकलकैन-

"प्रणाम सर..?"

ओना, धीरेन्द्रक मुँह खुजिते रामकृष्ण बाबूक नजैर सेहो धीरेन्द्रपर पड़लैन। धीरेन्द्रक 'प्रणाम'क उत्तर देब बिसैर बजला-

"काल्हि नेवान छी किने, तेही ओरियानमे लगल छी।"

हाटक लोक एमहरसँ ओमहर करैत रहए। कियो किए धीरेन्द्र आकि रामकृष्ण बाबूक प्रणाम-पाती सुनत। तोहूमे अदहासँ बेसी वेपारी पाबैनेक चीजो-बौस बेचैत आ लेबालो बेसी सहए कीनैत। तँए हाटक समान-बात दुनू गोरेक बीचक रहैन। मुदा धीरेन्द्र सेरिया कऽ एकटा वाण साहित्यकार रामकृष्ण बाबूपर चलौलैन-

"सर, आइक जुगमे जँ कियो सालक नवान करै छैथ, माने पाबैन करै छैथ तँ ओ पुरना जुगक पाबैन करब भेल।"

नव-पुरान दुनू जुग रामकृष्ण बाबूक मनमे नाचि उठलैन। नाइच ई उठलैन जे एहेन बात धीरेन्द्र किए बाजल? तहूमे अदना-गुदना रहितए तँ बुझितिऐ जे मेघमे अहिना कौआ-चील चिलकै छै...।

जिज्ञासु बनि रामकृष्ण बाबू जिज्ञासा केलैन-

"एना किए धीरेन्द्र भरल हाटमे बजै छी?"

रामकृष्ण बाबूक जिज्ञासा देखैत नाचक बिपटा जकाँ धीरेन्द्र बिपटाइ छोड़लैन-

"सर, आइक जुगमे जे कियो दुरागमन करैए आकि नवान

करैए ओ दुनू जुग-विहीन भेल।”

धीरेन्द्रक बात जेना दुनू परानी रामकृष्ण बाबूकेँ करेजमे बेधैत रहैन। मुदा लोकक बीच छटपटाएबो तँ नीक नहियेँ। तँए सम्हरैत बजला-

“एक्के लकड़ीसँ दुनू ताल बजबै छी?”

रामकृष्ण बाबूक सहिट विचारमे सह दैत धीरेन्द्र बजला-

“सर, आब जे कियो दुरागमन करैए, ओ दुरागमन करैए आकि माल-जाल फरिछबैए।”

रामकृष्ण बाबू धीरेन्द्रक बात सुनि ततमताइते रहैथ कि बिच्चेमे सुभद्रा बजली-

“से की, से की?”

धारक बहैत धाराक मुँह देखि रामकृष्ण बाबूक मनक टीटही विचारकेँ रोकि देलकैन। विचार रूकने कान कनखड़लैन।

धीरेन्द्र बजला-

“जैठामक धरती सभ दिन अन्नदायी छी तैठाम नवान की? तहूमे आन-आन अन्नक नवान कहाँ होइ छइ। जखन कि जे अन्नक होइ छै ओ सभ दिना उपजैबला छी।”

धीरेन्द्रक बात सुनि सुभद्रा मुड़ी डोलबैत बजली-

“बेस बात बजलौं, आ..?”

सुभद्राकेँ ‘आ’ कहिते धीरेन्द्र कहलकैन-

“चाची, धड़फड़ेने काज चलत। अहीं कहू- बर-कनियाँक बीच दुरागमन होइए, बड़बढ़ियाँ। मुदा बिआह-दुरागमनक बीच जे जेरक-जेर धिया-पुता आबि जाइए, ओकर की होइए?”

हाटसँ निकैल तीनू गोरे बगलक चाहक दोकानमे चाह पीबए

पहुँचला।

ओना, चाहक दोकान टटघरे अछि, मुदा नीको-नीको पुजिगर दोकानक कान कटिते अछि। दोकान टटघरे छी मुदा अछि नमहर। नमहर ऐ मानेमे जे सरकारी सड़कक बगलमे अछि, जेकरा दोकानदार पाँच धुर अपन घराड़ीमे पनरह धुर सड़कक जमीन घेर खूब ऐल-फैलसँ दोकान बनौने अछि। दोकानक चलतियो सबदिना छै, मुदा हाट रबिकेँ लगैए तँए कोट-कचहरी बन्न रहितो समस्तीपुरसँ लऽ कऽ जयनगर-निर्मली तकक वेपारीक अड्डा बनि जाइए। लाखोक कारोबार वेपारी चाहे दोकानमे बैसल-बैसल करैत रहैए। ओना, दोकानक चलतीक कारण नमगर-चौड़गर आसे-बासटा नै अछि, असल अछि दोकानक सौदा। जहिना नवका लोहियामे तेल-मसल्लाक काज लोहिये करै छै तहिना अछेलालक हाथमे अछि।

परोपट्टाक एकोटा चाहक दोकानदार अछेलाल सन नइ अछि, एके चाह-चीनी आ दूधक एहेन समान कहाँ कियो बना पबैए।

पूब दिसक खाली टेबुल-कुरसीपर तीनू गोरे बैसला। बसिते धीरेन्द्र अछेलालकेँ चाह दिअ कहलैन। एक तँ चाहक दोकान, तैपर रंग-रंगक इलाकाक रंग-रंगक कारोबारी सभ बैसल। अनठिया चाह पीआक बेसी तँए धीरेन्द्रक मनमे उठल, किए अखन पारिवारिक गप-सप्प करब। किए हिनको अपन बेथा-कथा सुनाएब। सुनेबो तँ ओतए ने नीक होइ छै, जेतए लोक सुआद बुझैए...।

मुदा रामकृष्ण बाबूक पारखी नजैर लोककेँ परेख लेलक। ओना, सभ टेबुलपर अपन-अपन मेलुआ संग अनेको रंगक गप-सप्प अपना धुनियेँ सभ धुनैत रहए...।

परेखते रामकृष्ण बाबू बजला- “भने भेँट भऽ गेलौं, धीरेन्द्र। अखन ते चाहक दोकानपर छी, आन गप करब नीक नइ हएत।”

जेना रामकृष्ण बाबूक विचारक जड़ि आगू बढ़ि गेलैन। आनो-आनो टेबुल परहक गहिंकी सभ कान ठाढ़ करैत ताकए लगलैन। धीरेन्द्र ततमताइते जे आगू की बाजी। मुदा रामकृष्ण बाबू दोहरबैत बजला-

“अखन ते चाहक दोकानपर छी, काल्हि घरेपर भेँट होउ, बहुत दिनक गपो-सप्प पछुआएल अछि निचेनसँ सभ गप करब।”

धीरेन्द्र मने-मन हिसाब लगबए लगला–औझुका दिन हाटे–बाजारमे चलि गेल, काल्हि गहुम बागो करब आ दनो-पट बनाएब। मने-मन धीरेन्द्र हिसाब लगैबते रहए कि तेहरबैत रामकृष्ण बाबू बजला-

“पोताकेँ अमेरकेमे बेटी भेल, ओ ओतुक्का नागरिक भऽ गेल। ऐगला मास मुड़न करबए गामे औत। तेकरो अखन हकारे दइ छी, जखन दिन-ठेकान निसचित भऽ जाएत तखन नतो-पिहान देब।”

अखन तक धीरेन्द्र रामकृष्ण बाबूक पहिलुको विचार नइ सोझरा पौने, तैपर आरो-आरो विचार उठबैत गेलखिन। काल्हिए-ले ने आइ बीआ कीनलौं। काल्हि जँ बाउग करि लेब तँ यएह ने भेल गति-विधि, माने गतिक निअम। ओना, रामकृष्ण बाबूक जिज्ञासा छैन, तँ जरूर भेँट करबैन। मुदा काल्हि नहि। जैठाम काजक सम्बन्ध अछि तैठाम तँ देखै-परखै पड़त जे जेहेन काज अछि तइसँ आगू बढ़ल काज अछि आकि बराबरीक अछि आकि तल-बितलक अछि...।

धीरेन्द्रक मनमे जेना किछु फुरफुरेलैन।

फुरफुराइते बजला-

“सर, कहलो जाइ छै ‘सभ दिन खइहह, पबनी ललैइहह।’

कािल्ह नवान पाबैन छी, ओरियाने बात आ खाइए-पीबैमे भरि दिन लगि जाएत, तखन भेँट केना कएल हएत।”

रामकृष्ण बाबूक मन मानि गेलैन। बजला-

“ओना, तीन दिन औरो गाममे रहब। मुदा चारिम दिन जे निकलब तँ ऐगला काज, माने मुड़न लगिचाइए कऽ आएब।”

चाह पीब तीनू गोरे दोकानसँ निकैल अपन-अपन काज दिस बढ़ला। झंझारपुरसँ निकलला पछाइत धीरेन्द्रक मनमे उठलैन- ऐगला मास परपोतीक मुड़न छिऐन तइले सपरिवार गामो औता आ भोजो-भात करता। बड़बढ़ियाँ...।

मुदा एकटा बात धीरेन्द्रक मनमे बेर-बेर उठए लगलैन जे जे अमेरिकाक नागरिक भऽ गेल ओकरा अमेरिकन संस्कार ने हेबा चाही? संस्कारोक तँ अपन जगह होइ छै, अपन क्षेत्र होइ छइ।

जखन क्षेत्रक अनुकूल काज-उदम, पठन-पाठन, साज-संस्कार हएत तखने ने सभ किछु सम्मिलित होइत शमील बनि चलत। जँ से नइ हएत, तखन तँ पुरान मशीनक पार्ट कहियौ आकि नवकाक अनमेल पार्ट, झरझरबे करत किने।



शब्द संख्या: 1083, तिथि: 08 दिसम्बर 2015

नअ 'ग'

एक पख अगहन बीत चुकल अछि, नवानो भऽ गेल। नहेबे बेर धीरेन्द्र विचारि लेलैन जे खेला पछाइत रामकृष्ण बाबू ऐठाम जाएब। रौदमे प्रियपन एने मिठास सेहो आबिए गेल अछि आ खेला पछाइत थोड़े टहलबो नीक होइते अछि, अराम नइ करब...।

अरामो कि केतौ पड़ाएल जाइ छइ। ओकर हिसाब तँ कियो चौबीस घन्टाक रूटिंगमे तँ कियो तीन-दिना रूटिंगमे तँ कियो सत-दिना रूटिंगमे रखि अपन क्रिया-कलाप संचालित करैए। अगहन मास छी सुतैले तेतेटा राति होइए जे तरो गुलगुल ऊपरो गुलगुल तैयो काठ जकाँ देह सूतल-सूतल कठुआइए जाइए। अखन बाधक-बाध किए ने एहेन प्रियगर समयमे धनकटिया लोक कऽ लेत...।

...मुदा अबैत लछमी–बाधसँ धान घर आएब–पर धीरेन्द्रक नजैर खिड़ते अपन डुबैत गहुमक खेतीपर पहुँचलैन। दिसम्बर अन्तक सीमानपर आबि गेल, गहुमक बाउगक समय दुर्गापूजाक जयंतीक संगे चलक चाही, जे अक्टूबर-नवम्बरक सीमापर अछि। जखने जगती मैयाकेँ समयपर खोंइछ भरबैन तखने ने मुँह खोलि मंगबैन। केतबो नीक बीआ आ उचित खाध-कीटनाशक खेतमे देब, पानिक बेवस्था करब तैयो उपज तँ खर्चसँ पछुआइए जाएत। जखने लागतसँ उपज कम हएत तखने ओ घाटाक खेती भेल। तइमे समय आ पूजी लगाएब, दुनू नोकसानदेह भेल। मुदा जे भेल, अपना सबहक गाममे गहुमक खेती प्रमुख खेतीक रूपमे तँ अछिए।

किसान पनरह जनवरी तक बाउग करबे करै छैथ, ओ थोड़े बुझै छैथ जे आसीन-कातिकमे खेत जाइवाली पछुआ गेली।

खेला पछाइत धीरेन्द्र रामकृष्ण बाबू ऐठाम जेबाक तैयारी करए लगला। करीब पाँच बर्खक पछाइत दुनू गोरे एकठाम हएब।

साढ़े बारह बजे धीरेन्द्र विदा भेल। सुखार समय। बाधे अखन घर अँगना बनल अछि। बरसातक समय तँ छी नहि जे पकियो सड़क चलैबला नइ रहैए...।

अगहन मास, गामक-गाम उनैट अखन बाधेमे भरि दिन रहैए। बाधेक रस्ता, माने जइ खेतमे धान लगल अछि तेकर आड़ि आ जइ खेतमे धन कटि गेल अछि ओकर बीचो-बीच कोणा-कोणीक रस्ता भेल।

एक बजे रामकृष्ण बाबू ऐठाम धीरेन्द्र पहुँचला। असगरे दुनू परानी रामकृष्ण बाबू पलंगपर बैसल टिफिनक चाह पीबैक गप-सप्प करैत रहैथ। ..धीरेन्द्रकेँ देखिते रामकृष्ण बाबू पत्नीकेँ झपैट कहलखिन-

“कहै छेलौं ने..! जाउ, चाहक ओरियान करू।”

ओना, भोजन केलाक केते कालक पछाइत चाह आकि जलखैक जरूरत पड़ैए ओ भोजनक समयपर आश्रित अछि। जँ नअ-दस बजे भोजन करै छी तँ बारह-एक बजे टिफिनक समय भेल। मुदा जँ बारह-एक बजे भोजने करै छी तखन केना भेल? तइ हिसाबे रामकृष्ण बाबूक समय भऽ गेल छेलैन। जहिना झपाटा मारि रामकृष्ण बाबू बाजल छला तहिना पत्नियोँ झपासा दैत कहलकैन-

“अहाँक विचार जँ मानि नेने रहितौं तखन पहुनमाक पाबैन केना होएत?”

सामंजस करैत रामकृष्ण बाबू पत्नीकेँ कहलखिन- “हमहूँ दुनू गोरे छतेपर बैसब। आब जेना-जेना समय खसत तेना-तेना रौदो प्रियगर होइत जाएत।”

दुनू गोरे मकानक छतपर पहुँचला। ओछाइन ओछाएले रहइ। कनियेँ पछाइत सुभद्रा सेहो चाह नेने छतपर पहुँचली।

कुशल-समाचार होइते रामकृष्ण बाबू अपन परिवारक खेरहा शुरू केलैन। अपन तीनू बेटाक संग बेटी-जमाएसँ लऽ कऽ पोता-पोती तकक चर्च, एक्के साँसमे कऽ लेलैन। आगूमे बैसल धीरेन्द्र चुप-चाप किछु बात सुनबो केलैन आ किछु नहियोँ सुनलैन। नइ ऐ दुआरे सुनलैन जे रामकृष्ण बाबूक संग जइ सीमाक भीतर सम्बन्ध अछि तइ सीमामे गप-सप्प करबे ने उपयोगी भेल...।

धीरेन्द्रक मनमे शंका उत्पन्न भेल जे भरिसक रामकृष्ण बाबूक जिनगी तँ ने बदैल गेलैन अछि। होइतो अहिना छै जे जखन लोकक जिनगीमे घटी-बढ़ी अबऽ लगै छै तखैन विचारोमे घटी-बढ़ी ऐबते छइ। मुदा घटियो-बढ़ीक तँ अपन गति-विधि छै जे लोकक जिनगीपर निर्भर करै छइ। एके मुँह जखन शराब नइ पीबैए तखैन शराबेकेँ अधला कहि ओइ भीड़मे जाए नइ चाहैए, मुदा कोनो कारण जखन ओ शराबक रस्ता पकड़ैए तखन पहिने एक-चम्मछ, दू चम्मछकेँ दवाइ कहि नीक कहए लगैए। जएह शराब अखन तक अधला मनमे छेलै से नीकोमे नीक, माने पोष्टिक बनि गेल! वएह ने बढ़ैत पछाइत मन भरि पीबैकेँ उचित कहि बेसी पीबैले प्रेरित सेहो करैए..!

अपन साहित्यिक चर्च धीरेन्द्र मनेमे रखने, किएक तँ रामकृष्ण बाबू अपने बात बजैमे बेहाल।

..बीचमे टोकैत धीरेन्द्र कहलकैन- “सर, ई साल केहेन गुजैर

रहल अछि?”

धीरेन्द्रक प्रश्न सुनिते रामकृष्ण बाबूकेँ जेना नव मसल्ला भेट गेलैन। बाजए लगला- “अही साल किए, जहियासँ सेवानिवृत्त भेलौं, तेकर तीनियेँ मासक पछातिसँ जहिना बेटा सभ पोता-पोतीकेँ पढ़बैले जोर केने रहैए तहिना बेटियो-जमाए। एकठामसँ दोसरठाम करैत तेना साल बीत जाइए जे बुझिए ने पबै छी जे साल केना बीत गेल।”

रामकृष्ण बाबूक बदलल विचार सुनि धीरेन्द्रक मनमे उठलैन- भरिसक जिनगी दोसर दिस मुड़ि कऽ बदैल गेलैन अछि। जखने जिनगी बदैल दोसर रूप लइए तखने ओकर बहुत किछु बदैल जाइ छइ। विचारमे लोच आनि अपन जिनगीक भरपाइ करिते अछि। मुदा लोचो तँ लोच छी, ओ दुनू दिशामे जिनगीक अनुकूल चलैए। जँ जिनगी बढ़त दिस बढ़ैए तँ बढ़ियाँ होइए आ जँ घटत दिस बढ़ैए तँ घटियाए लगैए। जइसँ एक दिस बढ़ियोँसँ बढ़ियाँ बढ़ती होइए, तँ दोसर दिस घटियोसँ घटिया घटबी होइए।

अखन तक रामकृष्ण बाबू एक-हरफी अपन परिवारक बात बजैत रहला मुदा तैयो केतौ अल्प-विराम आकि पूर्ण-विरामक लक्षण नहि देखि धीरेन्द्र टोकलकैन-

“सर, एकसूरे तेते बात बाजि देलिऐ जे नीक जकाँ एकोटा नइ बुझि पेलौं।”

ओना, धीरेन्द्रक मनमे रहै जे जखने विचार व्यक्त करैक क्रममे सबाल सभ उठाएब तखने बात-चीतक क्रम बदलत। नइ तँ सोलहन्नी भाषण भऽ जाएत। भाषण आ परिचर्चामे यएह ने अन्तर होइ छइ। परिचर्चामे खण्डन-मण्डनक संग विचार बढ़ैए, आ भाषणक क्रम तँ से नइ छी। झूठ-साँच सभ संगे चलैए...।

ओना, रामकृष्ण बाबूकेँ बजैक सूढ़ि चढ़ले रहैन, तहूमे धीरेन्द्र जे प्रश्न उठौलकैन तइसँ आरो मसल्ला भेट गेलैन। ओना, अपन जिनगीक धार सुखाए लगल रहैन...।

रामकृष्ण बाबू बजला-

“धीरेन्द्र, भगवान तेते पोता-पोती आ नाइत-नातिन दऽ देने छैथ, जे ओकरे सबहक बीच खेलाइत समय केना बीत जाइए से बुझबे ने करै छी।”

रामकृष्ण बाबूक विचार सुनि धीरेन्द्रक मन संकल्प-विकल्पक बीच घुरिया लगल मुदा ओकरा मनसँ ठेलैत बजला-

“तखन तँ अपने बड़ बालक एक रंग बनि जिनगीक खेल खेलै छी।”

ओना, धीरेन्द्रक बात रामकृष्ण बाबूकेँ व्यंग्य वाण जकाँ बुझि पड़लैन, मुदा व्यंग्य केतबो तान-बान्हसँ किए ने गतानल हुअए, मुदा ओकर दोसर रूप नइ होइ छै सेहो तँ नहियेँ अछि। एक दिस लंका अछि तँ दोसर दिस लंका रूपी मिरचाइयो तँ ऐछे, तैबीच लंक लऽ केमहर-मुहेँ पड़ाएब ई तँ पड़ेनिहारेपर निर्भर करैए। ओना, रामकृष्ण बाबूक मनमे ईहो विचार टहैकते रहैन जे कियो भीड़मे खेलैए तँ कियो असगरमे। मुदा दुनूक बीचक जे खेलक खेलाड़ी अछि, ओ केहेन अछि..?

मुदा रामकृष्ण बाबूक मन लगले आगू बढ़ि गेलैन। आगू बढ़िते अपन परिवारक चर्चकेँ बदलैत बजला-

“धीरेन्द्र, परिवारक सभ आनन्द छैथ किने?”

धीरेन्द्रक पहचान समाजक बीच कथाकारक रूपमे भऽ गेल छेलैन, ओना, रामकृष्ण बाबू धीरेन्द्रसँ जहिना उमेरमे तहिना डिग्री-डिप्लोमामे आ तहिना अध्ययनोमे श्रेष्ठ छथिन तँए हिनको कान तक

धीरेन्द्रक समाचार पहुँचले हेतैन। मुदा ओकर चर्च केने बिना धीरेन्द्रकेँ परिवारक समाचार पुछलखिन..!

अपन समाचारकेँ सोझहासँ हटबैत धीरेन्द्र कहलकैन-

“पुरबते अछि। हमरा सबहक जिनगीए कोन अछि। जहिया मिडिल स्कूलमे पढ़ैत रही तहियो भाँटा-मिरचाइ रोपैक लूरि रहए आ आइयो ओही लूरिये जीबै छी। ने भाँटा-मिरचाइ संग छोड़ैए आ ने अपने ओकर संग छोड़ै छी।”

ओना, धीरेन्द्रक विचार रामकृष्ण बाबूकेँ कटलपर नून छीटलकैन। जइसँ मन सहैम गेलैन। सहैम ई गेलैन जे अपन पुरबते जिनगी ने पश्चात जिनगीक जुआ छी। जिनगीक गाड़ीकेँ अगुआ-पछुआ दू धुरी होइ छै, जे कखनो आगूओ-मुहेँ चलत आ कखनो पाछुआ पेब पछुएबो करत मुदा जुआ एकेटा होइ छै जे सदिकाल आगूए-मुहेँ बनल रहैए...। रामकृष्ण बाबूक मनमे पश्चात जिनगी नाचए लगलैन- जेते दिन शिक्षण संस्थानमे रहलौं, उच्च कोटिक विद्यार्थीकेँ पढ़ेलौं, तैसंग अपनो उच्च कोटिक अध्ययन केलौं। जइमे पुस्तकालय सेहो सहयोगी भेल।

..मुदा आइ छोट-छोट बच्चाकेँ जे मिडिल स्कूल आ हाइ स्कूलक अछि तेकरा पढ़बै छी! की हमरा-ले ई उचित भेल? जँ अपना ढंगे पढ़ाएब, जेकर अभ्यास छल तँ ओ बच्चा नइ बुझि पौत आ जँ ओइ बच्चाक अनुकूल पढ़ाएब सीखब तँ ओ मतहानि भेल! मुदा उपाय..?

सामंजस करैत रामकृष्ण बाबू बजला-

“धीरेन्द्र, केतौ रही मौज-मस्तीसँ रही।”

रामकृष्ण बाबूक विचारमे सह दैत धीरेन्द्र बजला- “सर,

बगीचाक बेल हौउ आकि बाड़ी-झाड़ीक बेला चाहे बोन-झाड़क बेली हौउ आकि चमेली-जूही सभ अपन परिचय अपने दइ छइ।”

धीरेन्द्रक बात जेना रामकृष्ण बाबूकेँ नीक लगलैन तहिना गोल-मोल मुड़ीकेँ घुमबए लगला...।

लगमे बैसल सुभद्रा टोकलकैन-

“बड़ीखान चाह पीना भऽ गेल। तहूमे मासक प्रेमी चाह छिहे तखन एतीखान भऽ गेल।”

ओछाइनपर सँ उठैत धीरेन्द्र बजला-

“ठाढ़े-ठाढ़ चाह पीब। बैसल-बैसल देहो अकैड़ गेल।”



शब्द संख्या: 1296, तिथि: 10 दिसम्बर 2015

दस

बाजारक काज करि कऽ झंझारपुरसँ धीरेन्द्र रामपुरेक रस्ते अबैत रहैथ कि सीमामे प्रवेश करिते प्रोफेसर रामकृष्ण बाबूपर नजैर पड़लैन। नजैर पड़िते अपन सभ किछु बिसैर गेला। साइकिलक सवारी रहितो, पशुक सवारीक चालि आबि गेलैन। अबैत-अबैत प्रो. रामकृष्ण बाबूक घरक पछुऐतमे आबि एकाएक ठमकैत रूकि गेला।

रस्तेपर सँ धीरेन्द्र हियबए लगला जे कियो भेटता तँ हुनकासँ रामकृष्ण बाबूक हाल-चाल बुझि लेब। बहू दिन भेँट भेना भऽ गेला। मुदा लोकक आवा-जाही नहि देखि धीरेन्द्र हिया कऽ घर आ घरक निच्चाँ- घराड़ीपर नजैर देलैन तँ बुझि पड़लैन जे जहिना घराड़ी बिनु घरे कलपैए तहिना ने घरो बिनु लोक कलपैए। छहरदेवालीमे जे प्रवेश द्वार बनल अछि ओइमे ताला लगल अछि।

धीरेन्द्रकेँ अपन पैछला बात सभ मोन पड़ए लगलैन। केते सुन्दर बात रामकृष्ण बाबू कृष्णपुरक सांस्कृतिक कार्यक्रममे बाजल छला, मुदा ओ बाजल आइ कहाँ रहलैन। कहुना-कहुना तँ नब्बे-एकानबे बर्खक उम्र तँ छैन्हे। तहूमे संयोगो नीक छैन जे पत्नियोँ जीविते छथिन। लगले धीरेन्द्रक मन आगू ससैर रामकृष्ण बाबूक परिवारपर गेलैन। बेटा-पुतोहु, बेटी-जमाइक संग पोता-पोती, नाइत-नातिनसँ भरल परिवार छैन, मुदा अपना रहैले जे घर अप्पन कमाइसँ रामकृष्ण बाबू बनौलैन ओ आइ किए भकोभन लगैए..?

तहीकाल आगू दिससँ अबैत एक आदमीपर धीरेन्द्रक नजैर पड़लैन। लगमे ऐबते ओइ आदमीसँ पुछलखिन-

“अहाँक घर अही गाम अछि?”

“हँ।”

“की नाम छी?”

“फोचबा लोक कहैए, मुदा फोंचाइ दास नाओं छी।”

“रामकृष्ण बाबूकेँ चिन्है छिऐन?”

फोंचाइ कहलकैन-

“किए ने चिन्हबैन। केतेको काज-उदममे सहयोग केने छिऐन।”

‘काज-उदमक सहयोग’ सुनि धीरेन्द्र चपचपाइत बजला-

“वाह! तखन तँ अहाँ लगेक भेलिऐन। शरीरसँ नीके छैथ किने?”

धीरेन्द्रक बात सुनि फोंचाइ दास सकपका गेला। सकपका ई गेला जे प्रतिष्ठित लोककेँ जँ कोनो बाते ठेँस लगैन तँ ओहन बात नइ बाजी।

मुदा लगले मन आगू ससैर गेलैन। सामंजस करैत बजला-

“हमर घर कनी हटि कऽ हुनका घरसँ अछि। तँए सभ दिन एमहर एबे करै छी से बात नइ अछि। हमर अगवाहि पुवारिये भाग बेसी अछि, कहियो काल एमहर अबै छी तँए नीक जकाँ सभ बात नै बुझल अछि।”

फोंचाइ दासक विचार धीरेन्द्रकेँ नीक लगलैन। नीक ई लगलैन जे वेचारे जे किछु बजता ओ थाहल बजता।

बातकेँ आगू बढ़बैत धीरेन्द्र पुछलखिन- “केते दिनसँ नइ भेँट

भेला अछि।"

फोंचाइ दास-

"दिन-ठेकान कोनो लिखल तँ नहियेँ अछि, मुदा पैछला बेर, तीन साल पहिने जे आएल रहैथ, तइमे भेँट भेल छला। देहक सुरखी जे बुढ़क हेबा चाही से तँ आबिए गेल छेलैन।"

मुड़ी डोलबैत धीरेन्द्रक मुहसँ बहराएल-

"उमेरो बहुत भऽ गेलैन।"

फोंचाइ दासकेँ धीरेन्द्रक बातमे की भेटलैन से तँ ओ जानैथ मुदा धीरेन्द्रक बात सुनिते फोंचाइ दास बजला-

"एँह, हुनका बरबैर तँ हमरा गाममे एकोटा गाछो-बिरीछ ने अछि, आ उमेर कहै छिऐन।"

'गाछ-बिरीछ' सुनि धीरेन्द्र चौंकला जे गाछ-बिरीछक उदाहरण फोंचाइ दास किए देलैन! मुदा दोहरा कऽ एहेन बात पुछबो केना करबैन जे गाछ-बिरीछ एकठाम असथिर भेल धरतीपर ठाढ़ रहैए आ लोक चिड़ै जकाँ सौंसे दुनियाँ उड़ैए। ओह! भरिसक आवेशमे आबि फोंचाइ दास बजला अछि। होइतो अहिना छै जे आवेशेमे ने कियो बाल-बोधकेँ सुर्ज-चान कहै छैथ। मुदा धीरेन्द्रकेँ फोंचाइ दासक नाड़ीक एकटा नश भाँजपर चढ़लैन। चढ़लैन ई जे, ई आदमी हवाबाज भऽ सकै छैथ मुदा उड़नवाज नइ हेता। भाय कुत्ते किए लोकक संग रहैए आ हरिण किए पड़ाएल घुड़ैए। तखन तँ यएह ने हएत हरिणोकेँ प्रेमसँ पोसा बनाउ...। जहिना एकटा हाथक नाड़ी भेटने वैदजी रोग परेख दवाइ छोड़ै छथिन तहिना धीरेन्द्रो छोड़लैन-

"अँए यौ, जखन अहाँ कहै छी जे हमरो घर अहीगाम अछि

तखन अहाँ सन गौंआँ-घरूआ लऽ कऽ लोक इनार-पोखैर कटौत।"

धीरेन्द्रक बातकेँ फोंचाइ दास जेते बुझने होथि, जे बुझने होथि मुदा विचारमे लोच एलैन। बजला-

"भाय सहाएब, अहूँ जखन कहै छी जे हमरो घर कृष्णपुरे अछि तखन अहूँ कोनो आन नहियेँ भेलौं, पड़ोसीए भेलौं तँए...।"

फोंचाइ दासक बात सुनि धीरेन्द्र ठमकला। ठमकला ई जे ऐ आदमीमे इमनदारी रग-रग भरल छैन, तँए जँ एकटा विचार नजैरपर दिऐन तँ काजक गति आगू-मुहेँ बढ़ि सकैए। बजला-

"अँए यौ फोंचाइ भाय, गाममे अहाँकेँ एको पाइ मोजर नइ अछि जे एना निरीह जकाँ निरीहक बात बजै छी?"

फोंचाइ दासक मनमे फुलवारीक ओ दुइभ नजैर पड़लैन जे फुलक संग फुलडालीमे सजि-सजि फूल-पत्तीक माला बनि देवालय पहुँचैए। मन पघिल कऽ रांग-रांग भऽ गेलैन। बजला-

"भाय सहाएब, अहूँ कि कोनो आन छी जे बजैमे लाज हएत। अहाँ नइ बुझै छिऐ जे गरीब आदमी घरक माटिक देवाल जकाँ होइए।"

बिच्चेमे धीरेन्द्र टोकलखिन-

"फोंचाइ भाय, अहाँ अपनाकेँ हीन-दीन किए बुझै छी, अहूँ समाजक अंग छी, जे विभव अछि ओकरे अंजलिसँ अरपित करैत चलू।"

धीरेन्द्रक विचार फोंचाइ दास नइ बुझि पेला। मन सिहकलैन-

बिहकलैन नै बल्कि चिहुँक गेलैन। कोनो सबालकेँ बुझि सवालो आ ओकर समुचित जवाब देब भेल सिहकब। दोसर भेल प्रश्न तँ बुझि पेलिऐ मुदा उत्तर नइ दऽ पाबि रहल छी, ओ भेल

बिहकब। आ जे ने प्रश्न बुझै छी आ ने उत्तर बुझैक लूरि अछि ओ भेल चिहकब...।

फोंचाइ दास बजला-

"भाय सहाएब, आइ पहुनमे भोजन होइ।"

धीरेन्द्र बजला-

"देखियौ, समाजमे कियो निर्बल-निरीह नइ अछि, समाज एकबल छिऐ, जइमे अपनाकेँ साटि समाजकेँ सबल बनौल जाइ छइ। जइसँ समाज सबल बनैए।"

धीरेन्द्रक बात सुनि फोंचाइ दासक मन मगन भऽ गगनमे उड़ए लगलैन। बजला-

"भाय सहाएब, अहाँ तँ तेना भूषण-आभूषण पहिरा अपन बात रखलिऐ जे हमरा नजरिये-सँ पीछैड़ गेल, तँए कनी मुड़कुटियामे कहियौ।"

धीरेन्द्र कहलखिन-

"देखियौ, हम अनभुआर छी, अहाँ गौंआँ भेने भुआर भेलिऐ तँए रामकृष्ण बाबूक विषयमे पुछलौं। नइ बुझल अछि। ई कोनो अधला नइ भेलइ। सभकेँ सब बात बुझले नइ रहै छइ। जँ नइ बुझल अछि तँ अहाँ कोनो दोसर गोरेसँ भेँट करा अपना काजे आगू बढ़ि जैतौं।"

फोंचाइ दासक मन ओहन फरिच पानि जकाँ भऽ गेलैन जे ने अपने गन्दा अछि आ ने कियो गन्दे कोनो चीज धोइए। तेहने ने फोंचाइयो दास समाजमे छैथ। किए फोंचाइ दास सन तीनि-जनियाँ परिवारमे दुनू प्राणी देह धुनि-दुनियाँक मनुक्खक एकटा परिवारक भार उठौने अछि। आ जखन उठौने अछि तखन किए ने ओहो...।

फोंचाइ दास कहलकैन- “भाय सहाएब, चलू राधाचरण काका ऐठाम पहुचा दइ छी।”

राधाचरणक घर रामकृष्ण बाबूक घरसँ थोड़बे हटल। दस साल पहिने खोपिया विभागक चतुर्थ श्रेणीक पदसँ सेवा निवृत्त भेल छला। ओना, रामकृष्ण बाबू आ राधाचरणक बीच जातीय दूरी सेहो छैन। दुनू गोरे दू जातिक छैथ। पढ़बो-लिखबमे दुनू गोरेक बीच अन्तर छैन्हे। जैठाम रामकृष्ण बाबू एम.ए; पी-एच.डी. छैथ तैठाम राधाचरण पहिलुका मैट्रिक फेल। ओना, दोसर-तेसर साल परीक्षा देलासँ पासो कऽ सकै छला, मुदा रिजल्टक तीनियेँ मासक पछाइत नोकरी भऽ गेलैन। नोकरी भेलापर मन गवाही देलकैन जे नोकरीए-ले बेसी लोक पढ़ैए, आ से जखन भइये गेल तहूमे जिनगी भरिक गारंटीक संग तखन अनेरे...। जँ आगूए पढ़ैक मन हएत तँ तइले स्कूल-कौलेजक डिग्री-डिप्लोमाक कोन खगता अछि। अपन विभागेकेँ किए ने समरपित भऽ सेवा करब, जइसँ नइ छह मासमे तँ सालमे परमोशन हेबे करत। तखन तँ भेल जिनगी केहेन जीब?

मुदा जहिना रामकृष्ण बाबूक परिवार बेटा-बेटी, पुतोहु-जमाए, पोता-पोती आ नाइत-नातिनसँ जगमग करैत तेकर विपरीत राधाचरणक परिवार। ने एकोटा सन्तान आ ने भैयारीए। मुदा जहिना कोनो फुलवारी रस्ता-कातसँ दूर रहितो अपन फूलक परिचय सुगन्ध रूपमे राहीकेँ दइए तहिना विभागीय गुणसँ राधाचरण मण्डित भऽ गेल छला। जखन एक देशक इन्टेलिजेन्स दोसर देशक अपराधीकेँ चिन्हैए तखन घर-परिवारक तँ सहजे घरे-परिवार भेल। राधाचरण अपन जिनगीक भाँज लगबैत बुझि गेल छला जे मनुक्खसँ आगू परिवार भेल। जे माता-पिता, दादा-दादीसँ लऽ कऽ बेटा-बेटी, पोता-पोती धरिक भेल। मुदा एकर कोनो बिसवास कहाँ अछि जे सभकेँ एके रंग हएत। केकरो माए-बाप विहीन परिवार होइ छै तँ केकरो-

किछु, केकरो किछु। जे बिसवास करै-जोकर थोड़बे भेल, मुदा तँए परिवार जिनगी लेल सुखदायी नै अछि, सेहो तँ नहियेँ कहल जेतइ। तखन तँ भेल जे जे जेतइ छी से तेतइसँ लगल रहू। दू प्राणीक बीच परिवारमे राधाचरण अपन शेष जिनगीक बाट ताकि रहला अछि...।

फोंचाइ दासक संग धीरेन्द्र राधाचरण ऐठाम विदा भेला। आगू बढ़िते धीरेन्द्र फोंचाइ दासकेँ पुछलखिन-

“फोंचाइ भाय, सालमे कोनो पाबैनक उपास करै छी की नइ?”

धीरेन्द्रक प्रश्न सुनि फोंचाइ दास जेना पड़ले पौलैन तहिना धाँइ-दे कहलकैन-

“हँ।”

“कोन-कोन पाबैनक उपास करै छी?”

‘कएटा आ कोन-कोन पाबन सालमे’ सुनि फोंचाइ दास ठमैक गेला। ठमैक ई गेला जे लऽ दऽ कऽ शिवरातिमे शिव-उपास करै छी, दोसर-तेसर बुझलो ने अछि तखन अनेरे किए झूठ बाजी...।

कहलखिन-

“अनेरे जे सालो भरि उपासे-उपास करैत रहब तखन देह-हाथ बुते कोनो काज कएल हएत, तइसँ नीक ने छी जे महावीरजी-स्थानमे अठबारे मंगले-मंगल मंगलो गबै छी आ शिवरातिमे शिव-उपासो करै छी।”

धीरेन्द्र बुझि गेला जे अपन बँचाउमे फोंचाइ दास अठबारेक चर्च केलैन...।

पाशा बदलैत पुछलखिन-

“अहाँ जे बाजल छेलौं-रामकृष्ण बाबूक तुरिया गाममे गाछो-

बिरीछ नइ अछि से की कहलिऐ?”

फोंचाइ दास बजला-

“से कि कोनो हम अपन विचारल कहलौं आकि लोकक-मुहेँ जे सुनै छिऐ से कहलौं।”

फोंचाइ दासक बात सुनि धीरेन्द्रकेँ भेलैन जे ई आदमी बिल्कुल निश्छल-निष्कपट अछि। मन दहैल गेलैन। बजला-

“फोंचाइ भाय, गाछ-बिरीछक अपन दुनियाँ छै आ मनुक्खक अपन छइ। जहिना एकसँ बढ़ि एक नीक-नीक फूलो आ फलोक अछि तहिना मनुक्खोक दुनियाँमे एकसँ बढ़ि कऽ एक अछि।”

गप-सप्प करिते दुनू राधाचरणक घर लग पहुँचला। दुनू परानी राधाचरण अपन दिनका काजक समापन करैत, सौंझका साँझक ओरियानमे शान्त-चीते लागल रहैथ।

राधाचरणकेँ देखिते फोंचाइ दास कहलखिन-

“काका, अभ्यागती लागत।”

अपरिचित धीरेन्द्रक चेहरा दिस देखि राधाचरण फोंचाइ दासकेँ कहलखिन-

“जखन घरे छी तखन नइ सुखल तँ भुजलो खा, संग मिलि राति गुदस कैये सकै छी, नइ पान तँ पानक डण्टियोसँ पूजा होइते अछि किने।”

धीरेन्द्र दिस नजैर फेरैत फोंचाइ दास बजला-

“हिनकर घर बगलेक गाम कृष्णपुर छिऐन।”

‘कृष्णपुर’ सुनि राधाचरण बजला-

“धीरेन्द्रकेँ चिन्है छिऐन।”

राधाचरणक बात सुनि धीरेन्द्र ठीठैक गेला। ठीठकैक अनेको

कारणमे दूटा प्रमुख छेलैन। पहिल ई जे रामपुर आ कृष्णपुर दुनू सटल गाम, तखन हम राधाचरणकेँ चिन्ह नइ रहलयैन अछि, जखन कि ओ चिन्ह रहला अछि। मुदा लगले मन फरिच भऽ गेलैन। जे गौंआँ होइथ आकि पड़ोसी गौंआँ, जे गाममे रहता, वएह ने मेला-ठेला, हाट-बाजार आकि बाध-बोनमे भेटता। आ जे गामेमे नइ रहता हुनका चिन्हैले लोक अमेरिका-इंग्लैण्ड थोड़े जाएत। दोसर ई भेलैन जे जइ सरधे राधाचरण पुछलैन, ओहन श्रद्धावान हम कहाँ छी, केना कहबैन..?

राधाचरण धीरेन्द्रसँ अपन प्रश्नक उत्तरक प्रतिक्षो करए लगला आ मने-मन शिनाख्त सेहो करए लगला। जहिना जहलक गेँटपर शिनाख्त केला पछाइत भीतर जाए दइ छै आ निकलै काल मुँह-कान छोड़ि शिनाख्ते पकैड़ ने बहरा सकैए। मुदा शिनाख्त तँ निसचित जगहपर निसचित जगह-ले ने होइए...।

राधाचरणकेँ मनमे फेर भेलैन जे देहमे जे कटल-खोंटल आकि जनमौए कोनो दागकेँ ने लोक शिनाख्त बुझैए। केकरो कपारमे फुटल-कटलक चेन्ह छै, मुदा ओ चेन्ह की सबहक एके रंग होइ छै, केकरो एहनो तँ होइते छै जे घा भेलहा दाग थोड़े दिनक पछाइत निरमूल मेटा कऽ चिक्कन भऽ जाइ छै...।

राधाचरणक मन फेर आगू घुसैक गेलैन। घुसैकते उठलैन जे हओ-भाव तँ शिनाख्तक एकटा अधार भइये सकैए। जखन अधार भऽ सकैए तखन एहने अधारकेँ किए ने अधारिक धरना बना धारककेँ सिरमौर्ज करैत धारक धाराकेँ प्रवाहितो तँ कएले जा सकैए...।

मने-मन राधाचरण पानि-पानि हुअ लगला। जिनगी भरि इन्टेलिजेन्समे काज केलौं मुदा लोकक पीछड़ाह घाटकेँ नीकसँ नइ

बुझि पेलौं जे केहेन माटिक पीछड़पन छी। मटियार माटिक पीच्छड़ छी कि चक्कैन माटिक आकि बर्फीली-पथरीली...।

फोंचाइ दास अपने मने मगन। धीरेन्द्रक किछु बात–जे टटके सुनने छला से–जेना मीठगर विचार बनि मनेमे नचैत रहैन। होनि जे बेर-बेर धीरेन्द्रक मुँह देखी। मुदा लगले ईहो भऽ जानि जे राधाचरण काका ऐठाम छी, जँ हुनका दिस नइ तकैत रहब तँ मनमे तकलीफ हेतैन तँए फोंचाइ दास चेहरो देखैथ आ मने-मन आत्म निरीक्षण सहो करैथ...।

दस दरबज्जा जकाँ राधाचरणक दरबज्जा सजल। धीरेन्द्रकेँ कुरसीपर बैसबैत फोंचाइ दास अपनो बैसला। फोंचाइ दासकेँ राधाचरण कहलकैन-

“फोच, आँगनसँ चाह नेने आबह।”

‘फोच’ तँ फोचे, फुचिया कऽ कहलकैन-

“काकी कोन नौतारि छैथ जे दरबज्जापर नइ औती?”

फोंचाइ दासक बात सुनि राधाचरणक मनमे मिसियो भरि तिलमिलाहैट नै एलैन। एबो किए करितैन, जेहेन मन तेहने ने धनो होइए। कोनो कि राधाचरण नइ बुझै छैथ जे पढ़ल-लिखल लोक स्त्रीकेँ हजारो नाओं आ रूपो जनै छैथ मुदा फोंचाइ दास सन लोक तँ बड़-बहुत बुझत तँ स्त्रीकेँ धरवाली बूझत, सएह ने। जिनकर घर सएह ने घरक मलिकाइन। जखने मलिकाइन भेली तखने ने घर-दरबज्जाक मान-मरजादा रखती। मुदा से नहि, फोंचाइ दासकेँ बुझबैत राधाचरण कहलखिन-

“बौआ, गौंआँ-घरूआकेँ जिनका काकी चिन्है छथुन, तैठाम तक जाइमे कोनो धड़ी-धोखा नइ हेतैन, मुदा अनठिया लग जाइमे तँ धखेबे करती किने। तोहूँ कि कोनो आन भेलह जे अँगना-घर जाइसँ

धखेबह।"

राधाचरणक बात सुनि फोंचाइ दासक मन मानि गेल जे काका ठीके कहलैन। अनठिया तँ अनठिये भेला किने। अनभुआर जगह तँ भइये गेल किने...।

फोंचाइ दास चाह आनए आँगन गेला। एकान्त जगह देखि धीरेन्द्र बजला-

"हमहीं धीरेन्द्र छी, भाय सहाएब।"

'हमहीं धीरेन्द्र छी' सुनि राधाचरण चौंकैत बजला-

"धन्य ओ धरती आ धन्य ओ समाज जे अहाँ सन सृजनकर्ता पैदा करैए, संग-संग ओहो धरती धन्य अछि जैठाम अहाँ सन लोकक पदार्पण होइए।"

फोंचाइ दास चाह नेने एलैन। तीनू गोरे चाह पीलैन। चाह पीला पछाइत राधाचरण फोंचाइ दासकेँ कहलखिन-

"काकियोकेँ कहुन जे धीरेन्द्र कियो आन नइ, पड़ोसीए छैथ, ओहो आबैथ।"

किरिण डुबि गेल। मुदा अन्हार नइ भेल छल। रामपुर-कृष्णपुरक बीच सभ दिना देखल-सुनल रस्ता धीरेन्द्रकेँ रहबे करैन तँए नअ बजे राति तक अबेर नहियेँ बुझैथ। तैबीच एके-दुइए दरबज्जापर चारि-पाँच गोरे आरो आबि गेला। मुदा सबहक नजैर धीरेन्द्रेपर कनखड़ल। जे अनठिया रहने पहिने हुनकर विचारकेँ ने विचारब उचित भेल।

राधाचरण मने-मन सोचैथ जे धीरेन्द्र किए एला, से तँ अपने ने बजता। दरबज्जापर छैथ, केना पुछबैन जे किए एलौं।

तैबीच धीरेन्द्र बजला- "भाय सहाएब, किछु काजे आएल

छी।”

सुनि राधाचरण आँखि-कान दुनू ठाढ़ केलैन मुदा बजला किछु ने। मनमे उठलैन- काजो तँ काज छी, केतौ वस्तुक लेब-देब होइए, केतौ विचारक लेब-देब होइए तँ केतौ सम्बन्धक लेब-देब होइए। जँ कोनो वस्तुक लेब-देब अछि आ किनको खगता छैन, तँ जे उचित रूप अछि तइ रूपमे देल जा सकैए मुदा जँ कोनो ओहन विचार हुअए जे विचारसँ भिन्न हुअए, तैठाम केना देल जा सकैए..? कियो अपराध केलाक पछाइत अपन रक्षा लेल ओकील ऐठाम जाइ छैथ तँ कियो अपना ऊपर भेल अपराधक रक्षा लेल जाइ छैथ। दुनू तँ अपन जानेक गुहारि लगबए जाइ छैथ, मुदा की दुनू गुहारि एक्के अच्छत-फूलसँ थोड़े हएत..?

मुदा राधाचरण बिनु किछु बजने जहिना कियो अपन दरबज्जापर दुनू हाथ पसारि आगन्तुकक आगवानी करै छैथ तहिना दुनू आँखिक रूपसँ रूपायित होइत रहैथ जे मुँह खोलू कथी खगता अछि।

अपन विचारकेँ सेरियबैत धीरेन्द्र बजला- “कोनो तेहेन काज तँ नहियेँ अछि मुदा एते तँ ऐछे जे जेते रामकृष्ण बाबूसँ सम्बन्ध बनल अछि, ओ केना जीवित रहत, ऐ लेल अपना भरि...।”

‘अपना भरि’ सुनिते राधाचरण साकांच भेला। साकांचक माने ई भेल जे हजारो रूपक कानून जननिहार होथि, आकि हजारो रंगक देहक दुख जननिहार डॉक्टर-वैद होथि आकि हजारो रंगक काजकेँ जननिहार करिन्दा होथि, अपन मनकेँ ओइ जगहपर आनि कऽ तैयार राखब भेल जेतए जेकर जरूरत भेल। सौनक लटकल करिया मेघ जकाँ राधाचरणक नजैर धीरेन्द्रक अकासमे टपकए लगलैन...।

राधाचरण बजला- “बोल किए रोकने छी। बाजू जे सम्भव ओ

सम्भव भेल आ जे असम्भव हएत ओ असम्भव भेल, सएह ने?”

धीरेन्द्र बजला-

“रामकृष्ण बाबूक औझुका की जिनगी छैन, सहए बुझबाक अछि।”

धीरेन्द्रक बात सुनि राधाचरणक मनमे ओइ अनुभवी कारीगर जकाँ भऽ गेलैन जे ओइ अनुभवमे दक्ष अछि...।

कहलखिन-

“जिनगी भरि अपन वृत्तिये यएह रहल, दोसरेक खोज-भाँज करैत एलौं अछि। बीस दिनक छुट्टी गामेमे साले-साल बितबैत रहलौं अछि, जइसँ ने समाज-अध्ययनक सिलेबस नमहर भेल जे कोनो अंश छुटि जाए जे बीस दिनक छुट्टीमे अध्ययन नइ कएल जा सकै छइ। तँए रामकृष्ण बाबूक जन्मसँ आइ धरिक सभ बातक जानकारी भेट जाएत। काल्हिए अही बेरमे रामकृष्ण बाबूक जेठ बालकसँ जे मोबाइलपर गप-सप्प भेल से कहै छी।”

टटका समाचारक चर्च सुनिते धीरेन्द्रक मन कलैश गेलैन। कलशल मने बिच्चेमे बजला-

“उमेरो बहुत भऽ गेलैन। अस्सी-नबे बर्खसँ ऊपरे भऽ गेल हेतैन। अस्सी बर्खसँ ऊपर वएह ने जीब सकै छैथ जे कठपिंगल होइथ।”

ओना, एक सी.आइ.डी.क नजरिये राधाचरण धीरेन्द्रकेँ जइ रूपमे चिन्है छला तइ रूपमे जे बात धीरेन्द्र बजला ओ अछि। मुदा प्रश्नकेँ दोहराएब ओते जरूरतो नहियेँ अछि। अपने जे बुझै छी तेकरे मालिको ने अपने भेलौं। दुनियाँ बड़ीटा छै, बहुत पैघ-पैघ लोको भेबे केलाह अछि जँ हमरा उत्तरसँ धीरेन्द्रकेँ तुष्टि भेट जाइन, नीक बात

भेल, जँ से नइ भेटतैन तँ अखन रामकृष्ण बाबू जीविते छैथ जा कऽ मुँहा-मुहीं भऽ आबैथ...।

राधाचरण बजला-

"धीरेन्द्र बाबू, अहाँ समाजक कर्ता-पुरुख छिऐ, अहीं नइ हमहूँ छिऐ, सभ छैथ। समाज केना उठि कऽ ठाढ़ हएत आ फड़त-फुलाएत ई सबहक दायित्व भेल। आब तँ साँझ पड़ि गेल, रसे-रसे अन्हार पसैर-पसैर गढ़ियाइते जाएत। अहूँ अपना पएरे नइ, अनका पएरे छी, साइकिल अछि तँए बेसी बात तँ नइ कहब मुदा मनमे ई बात तँ नाचिते अछि जे जहिना पहिल दिनक प्रेम जखन प्रेमी-प्रेमिकाक मनमे उपकै छै तँ होइते छै, जे जिनगी भरिक सभ हरेलहा-भोथियेलहा खिस्सा-पीहानी बना पीआ दिऐन।"

राधाचरणक बात सुनि धीरेन्द्र मनकेँ मनबए लगला जे 'रे मन धीर पकैड़ धैड़पर बैस।' ने राधाचरण मरैले धड़फड़ करै छैथ, जइसँ पेटक बात बुझैमे हूसि जाएत आ ने अपने। तखन आइए सभ बात बुझि लेब जरूरी थोड़े छौ। जरूरी तँ एतबे ने छौ जे जे बात बुझए चाहै छेँ ओ बुझि जो...।

मनकेँ असथिर करैत धीरेन्द्र राधाचरणकेँ कहलखिन-

"भाय सहाएब, जेते बुझैक जिज्ञासा अछि, ओते बुझब अखन सम्भव नइ अछि, तँए आजुक जे बुझल अछि, तेतबे तकक सम्बन्ध ने जिनगीक भेल। काल्हि रहब कि नइ रहब आकि हमहीं रहब कि नइ रहब तेकर कोनो ठेकान अछि।"

धीरेन्द्रक विचारकेँ जेना मुड़ी डोलबैत राधाचरण सूहकारि लेलैन। सूहकारि तँ लेलैन मुदा लगले रामकृष्ण बाबूक जिनगीक घाटे-घाट सभपर नजैर दौड़ए लगलैन...।

घाटे ने बाटो आ बाटे ने घाटो देखबैए। जैठामसँ जिनगीमे मोड़

अबैए। भर्लें ओकर मुँह जेमहर हुअए। माने ई जे नीको दिस बढ़ि सकैए आ अधलो दिस बढ़ि सकैए। तँए नीक हएत जे रामकृष्ण बाबूक नोकरीक पूर्वक जिनगी आ नोकरीक पछातिक जिनगीक बीच घाट बना पैछला छोड़ि ऐगलाक जानकारी देब उचित हएत। मुदा तइसँ पहिने कौल्हुका गप-सप्पक चर्च–जे हुनका बेटाक संग भेल–करब बेसी नीक हएत। बेसी नीकक माने जे जखने मुँह दिससँ पाछू दिस बढ़ब, तखने पैछला बात स्वत: भेटैत जाएत जइसँ शंकाक केतौ सम्भावना नइ रहत। यएह वृत्ति ने जिनगी भरिक रहल। जँ शंकाक समाधान नइ होइत गेल तँ ओइ बीचमे सड़ैन करत जइसँ जिनगी सेराइत जाएत...।

राधाचरण बजला- “धीरू बाबू, मनुक्खक जिनगी तेना ओझराएल अछि जे जेते सोझरा-सोझरा चलैक कोशिश करब ओते ओझरी लगैत जाएत।”

आगू बजैले राधाचरणक मुँह खुजले रहैन कि बिच्चेमे धीरेन्द्र बजला- “से केना?”

धीरेन्द्रक प्रश्न सुनि राधाचरणक मनमे मिसियो भरि कचोट नइ भेलैन जे बिच्चेमे बाट किए कटलक। मनमे खुशीक लहैर लहरए लगलैन। लहरए ई लगलैन जे शुरूहेसँ विचारक विचार धीरेन्द्र कऽ रहला अछि..! बजला-

“धीरू बाबू, जे प्रश्न अपने बुझए चाहै छी, ओ समैयक हिसाबसँ, माने अखन जेते कालक समय अछि, तइ हिसाबे नमहर अछि। तँए ओकरा पटुआ जकाँ जड़ि-मुड़ी छपैट कहब। जँ केतौ कोनो शंका आकि खरोंच बुझि पड़ए तँ ओकरा तहियबैत दोसर दिन-ले रखि लेब। मुदा अखन मूल प्रश्नक उत्तर सुनि लिअ।”

राधाचरणक विचार धीरेन्द्रकेँ नीक लगलैन। बजला- “जँ

अपनेसँ किछु दिन पूर्व सम्बन्ध बनल रहैत तखन तँ दुनू गोरे–माने रामकृष्ण बाबू आ धीरेन्द्रक–बीचक जे खाली समय रहल ओकर भरपाइ भेल जाइत रहैत। मुदा आब उपाइये की।"

धीरेन्द्रकेँ अपन बीतल समैयक महसूस करब सुनि राधाचरण सेहो मने-मन विचारलैन जे पहिने कौल्हुके समाद लगसँ उत्तर देब नीक हएत...।

बजला- "काल्हि जेना रामकृष्ण बाबूक जेठ बालकसँ गप भेल, पहिने सएह कहि दइ छी। अखुनका समयसँ किछु पहिनेक बात छी। जखन पुछलयैन तँ कहला- 'अखन अचेत अवस्थामे छैथ, आँखि मुनने छैथ, मुदा साँस चलै छैन।"

बिच्चेमे धीरेन्द्र पुछलखिन-

"खाएब-पीब छैन कि नहि?"

राधाचरण-

"सभ बन्न छैन।"

धीरेन्द्र- "नमहर उम्रक जिनगी रामकृष्ण बाबू बितौलैन।"

धीरेन्द्रक मुहसँ 'नमहर जिनगी' सुनि राधाचरणक मन कनी अमतेलैन। अमताइते बजला-

"हुनकर जिनगी देखैले ईहो देखए पड़त जे केहेन संकल्पक केहेन विकल्प पकैड़ चलला।"

राधाचरणक बात धीरेन्द्र नीक जकाँ नै बुझि पेला। जिज्ञासु नजैर राधाचरणपर गाड़लैन...।

राधोचरण बुझि गेलखिन जे भरिसक धीरेन्द्र नीक जकाँ नइ बुझि पेला। कहलखिन- "धीरू बाबू, देहकेँ अधिक बरिस धरि ठाढ़ रखि लेब एकबात भेल, मुदा जिनगीकेँ ठाढ़ केने रखि लेब दोसर

बात भेल।”

बातमे ओझरी देखि धीरेन्द्र बजला- “से की?”

धीरेन्द्रक विचारकेँ रोकैत राधाचरण बजला- “दुनियाँमे सात अरब लोक छैथ, जँ एक-एक कथा सबहक देखब ते सात अरब भेल, जँ से नइ तँ जेना एक-एक गोरेक सैकड़ो कथा होइए तइ हिसाबे केते भेल। नइ जँ दुइयो-दुइयोटा कथा सुनब तँ चौदह अरब तैयो भेल। मुदा से सभ छोड़ू। एकेटा बात बुझि लिअ जे संकल्पित जिनगी जीब लेब, असान नइ अछि। सेवानिवृत्तक पछाइत जखन शेष जिनगीक नक्शा बनौलैन तँ पठन-पाठनेक मुदा से नइ निमहलैन।”

तेसर साँझ बीत गेल। जहिना तीन बजे राति आ तीन बजे भोरक सीमा नइ अछि तहिना तेसर साँझ आ दोसर रातिक बीच सेहो नहियेँ अछि...।

दरबज्जापर सँ उठैत धीरेन्द्र बजला- “एक दरबज्जाक उसार भेल तँ दोसरक बैसार भेल। आगूक बात आगू होइत रहतै।”



शब्द संख्या: 3304, तिथि: 16 दिसम्बर 2015







Notes